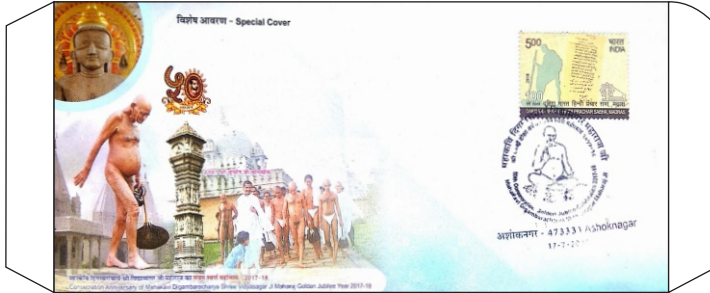


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन समाज अशोकनगर के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 20/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि (फरवरी माघ शुक्ल)	नक्षत्र
16	शनिवार	एकादशी/द्वादशी	आर्द्रा
17	रविवार	त्रयोदशी	पुनर्वसु
18	सोमवार	चतुर्दशी	पुष्य
19	मंगलवार	पूर्णिमा	आश्लेषा
(फाल्गुन कृष्ण)			
20	बुधवार	प्रतिपदा	मघा पू.फा.
21	गुरुवार	द्वितीया	उत्तराफाल्गुनी
22	शुक्रवार	तृतीया/चतुर्थी	हस्त
23	शनिवार	पंचमी	चित्रा
24	रविवार	षष्ठी	स्वाति
25	सोमवार	सप्तमी	विशाखा
26	मंगलवार	अष्टमी	अनुराधा
27	बुधवार	नवमी	ज्येष्ठा
28	गुरुवार	दशमी	मूल
(मार्च 2019)			
1	शुक्रवार	एकादशी	पूर्वाषाढ
2	शनिवार	एकादशी	उत्तराषाढ दि/रा
3	रविवार	द्वादशी	उत्तराषाढ
4	सोमवार	त्रयोदशी	श्रवण
5	मंगलवार	चतुर्दशी	धनिष्ठा
6	बुधवार	अमावस	शतभिषा
(फाल्गुन शुक्ल)			
7	गुरुवार	प्रतिपदा	पूर्वाभाद्रपद
8	शुक्रवार	द्वितीया	उत्तराभाद्रपद
9	शनिवार	तृतीया	रेवती
10	रविवार	चतुर्थी	अश्विनी
11	सोमवार	पंचमी	भरणी
12	मंगलवार	षष्ठी	कृत्तिका
13	बुधवार	सप्तमी	रोहिणी
14	गुरुवार	अष्टमी	मृगशिरा
15	शुक्रवार	नवमी	आर्द्रा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : फरवरी-15, 21 मार्च-2, 8, 9, 13
वाहन क्रय : फरवरी-17, 24, मार्च-3, 4, 14
मशीनरी प्रारंभ : फरवरी-17, मार्च-9,
विद्यारंभ मुहूर्त : फरवरी-28, मार्च-9, 10

तीर्थकर कल्याणक

16 फरवरी :	म. अभिनन्दननाथ - जन्म-तप कल्याणक
17 फरवरी :	म. धर्मनाथ - जन्म-तप कल्याणक
22 फरवरी :	म. पद्मप्रभ - मोक्ष कल्याणक
24 फरवरी :	म. सुपाश्वर्ननाथ - ज्ञान कल्याणक
25 फरवरी :	म. सुपाश्वर्ननाथ - मोक्ष कल्याणक
27 फरवरी :	म. पुष्पदन्त - गर्भ कल्याणक
01 मार्च :	म. आदिनाथ - ज्ञान कल्याणक
01 मार्च :	म. श्रेयांशनाथ - जन्म-तप कल्याणक
03 मार्च :	म. मुनिसुव्रतनाथ - मोक्ष कल्याणक
05 मार्च :	म. वासुपूज्य - जन्म-तप कल्याणक
09 मार्च :	म. अस्नाथ - गर्भ कल्याणक
11 मार्च :	म. मल्लिनाथ - मोक्ष कल्याणक
14 मार्च :	म. संभवनाथ - गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 फरवरी :	रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
18 फरवरी :	दशलक्षण व्रत पूर्ण
19 फरवरी :	रत्नत्रय व्रत पूर्ण
20 फरवरी :	षोडशकारण व्रत पूर्ण
13 मार्च :	रोहिणी व्रत
13 मार्च :	अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

17 फरवरी :	16/46 बजे से 31/01 बजे तक।
18 फरवरी :	07/01 बजे से 14/02 बजे तक।
19 फरवरी :	07/00 बजे से 11/03 बजे तक।
23 फरवरी :	22/48 बजे से 30/56 बजे तक।
25 फरवरी :	22/09 बजे से 30/55 बजे तक।
03 मार्च :	06/50 बजे से 09/01 बजे तक।
04 मार्च :	06/50 बजे से 12/11 बजे तक।
08 मार्च :	23/17 बजे से 30/45 बजे तक।
10 मार्च :	06/44 बजे से 26/58 बजे तक।
12 मार्च :	06/42 बजे से 28/54 बजे तक।
13 मार्च :	06/41 बजे से 30/41 बजे तक।
15 मार्च :	27/45 बजे से 30/39 बजे तक।



संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 238 • फरवरी 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- दिल्ली उच्च न्यायालय का अहं फैसला 09
- भारतीय शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता : सावलिया घेर में 11
- आयुर्वेद को जैनाचार्यों की देन 15
- सामाजिक समस्याओं के समाधान में जैनधर्म का योगदान 18
- अच्छे वचन बोलने में कंजूसी क्यों ? 35
- वर्तमान भारत के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार: आचार्य श्री विद्यासागर जी 38
- अद्भुत्ता का प्रमाण- श्रवणबेलगोला तीर्थ 45
- हंसो और स्वस्थ रहो 47
- जैन व्यक्तित्व फिल्म निर्माताडॉ. व्ही शांता राम 51
- आचार्य श्री विद्यासागर जी के चिंतन में श्रमणाचार 53
- शरीर में स्वेद ग्रथियों का योगदान 57

बाल कहानी

- नारद जी नाराज 59

कविता

- जिन तीर्थकर 08
- फूल की व्यथा 27
- दो बारात 41
- हिंसा का हरकारा 44
- आत्म गीत 46
- विशाल बनकर रहूंगा 50

कहानी

- बंसत ऋतु 42

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
- चलो देखें यात्रा : 17 • आगम दर्शन : 26 • पुराण प्रेरणा : 29 • माथा पच्ची : 29
- कैरियर गाइड : 30 • दुनिया भर की बातें : 31 • इसे भी जानिये : 36 • दिशा बोध : 37
- आओसीखें : जैन न्याय : 41 • हमारे गौरव : 49 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 51 • हास्य तरंग : 58
- बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा - परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांघेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ♦ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ♦ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ♦ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ♦ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

*श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते
की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो
तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 155104000037022
• आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)
में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

**कार्यालय
संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

**पाती
पाठकों
की....**



• सम्पादक महोदय,
संस्कार सागर के जनवरी अंक
में ऐलक सिद्धांत सागर जी
महाराज जी की कहानी कसक
शीर्षक से पढ़ी कहानी पढ़ने के
उपरान्त ऐसा लगा की जीवन में कुछ कर
गुजरने की तमन्ना रखने के उपरान्त जब
व्यक्ति किसी मोह ममता के कारण कर नहीं
पाता है तो उसकी कसक पूरी जिन्दगी भर
सताती है यही एक पूर्व सैनिक के साथ भी
गुजरा। जो थोड़ी सी जिन्दगी के लालच में
असहनीय पीड़ा सहने के बाद भी अपनी देश
भक्ति को प्रकट नहीं कर पाया कहानी सुबोध
और क्रमबद्ध होने के कारण मन को छू जाती
है हृदय स्पर्शी ऐसी कहानी पढ़ कर मन
प्रफुल्लित हो गया।

अंकुर जैन वड़ोदा (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, ब्रह्मचारी अनिल
कुमार जी ने जैन दर्शन में वस्तु स्वतंत्रता का
लेख लिखकर जैन दर्शन की मूल-
अवधारणा को स्पष्ट किया है। विश्व के
सभी दर्शनों में एकमात्र जैन दर्शन ऐसा है
जो वस्तु स्वतंत्रता का तत्व स्वीकार करता
है और ईश्वर को स्वीकार करने के उपरान्त
भी ईश्वर को कर्ता स्वीकार नहीं करता है
यह तथ्य प्रस्तुत लेख में स्पष्ट करने का
प्रयास किया गया है ऐसे लेखों को पढ़ने के
उपरान्त जैन दर्शन की वस्तु निष्ठता उजागर
हो जाती है तथा काल्पनिकता को विराम
लग जाता है अंध श्रद्धा को कोई स्थान नहीं
बचता है। **श्रीमति रानू जैन (इन्दौर)**

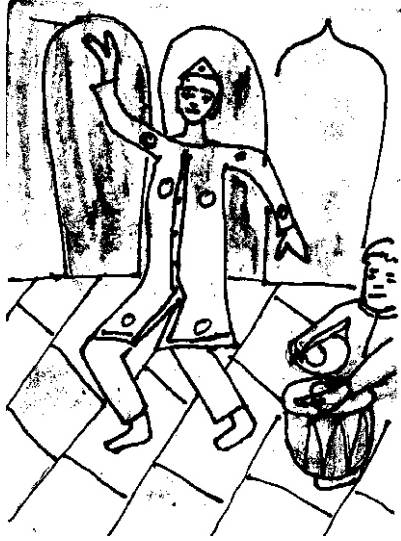
• सम्पादक महोदय, विगत
माह राफेल मामले में सुप्रीम
कोर्ट का फैसला आया जिसमें
सम्पूर्ण याचिकाओं को सुप्रीम
कोर्ट ने खारिज करते हुए राफेल
सौदे की जाँच की आवश्यकता को अमान्य
कर दिया तथा यह भी कहा भारत को रक्षा
की दृष्टि से यह सौदा जरूरी था राजनीति की
वेश्मी के हृदयाई तब कर गई जब कांग्रेस ने
संयुक्त संसदीय समिति से जाँच कराने की
मांग कर दी इससे ऐसा लगा कि सुप्रीम कोर्ट
से बड़ा और राष्ट्र से बड़ा अपने आप को
समझने वाले राहुल गांधी झूठ के आधार
पर कब तब जुल्में बाजी करते रहेंगे राष्ट्र के
हित को अनदेखा करना एक जोखिम भरा
खेल है।

मनीष जैन (राहतगढ़)

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार
सागर की आकर्षक आवरण सज्जा देखकर
मन प्रफुल्लित हो गया ऐसा लगा कि
सचमुच में पत्रिका 20 पूर्ण करने के साथ
ही ऊँचाईयाँ छूने में कोई कसर नहीं छोड़
रही है। सम्पादकीय भी जोरदार रही सत्ता
या कुर्सी की परिक्रमा देने वाले लोग अपनी
सत्ता के रूप को समझ नहीं पाते है आत्मा
की अनंत स्थायी सत्ता को समझने बाह्य
सत्ता के फेरे में नहीं पड़ता है सत्ता भूखे लोग
अत्याचार शोषण और युद्ध तक करने से
नहीं चूकते है जबकि अभ्यंतर सत्ता की
आस्था जिनकी पक्की हो जाती वे
वैराग्यपथ को अपनाकर मानवता के शिखर
पर अपना स्थान बना लेते है।

महेन्द्र जैन (लल्लू) इन्दौर

भक्ति तरंग इन्द्र नाचें नाभि द्वारे



चलि सखि देखन नाभिराघर, नाचत हरि नटवा
अद्भुत ताल मान शुभलययुत, चवत राग षटवा
मनिमय नूपुरादिभूषन-दुति, युत सुरंग पटवा
हरिकर नखन नखनपै सुरतिय, पगफेरत कटवा
किन्नर करधर बीन बजावत, लावत लय झटवा
दौलत ताहि लखैं चख तृपते, सूझत शिव वटवा

अरि सखि नाभिराजा के घर चल, जहाँ इन्द्र भी ऋषभ जन्मोत्सव के कारण नट की भाँति नृत्य कर रहा है, प्रसन्न हो रहा है। वहाँ अद्भुत ताल का मान रखकर (अद्भुत ताल पर) उपयुक्त शुभ लय में छहों राग गायी जा रही है।

वहाँ इन्द्र सुन्दर मणियुक्त, चमकदार वस्त्र, नूपुर आदि धारण किये हुये हैं। जिसके हाथ के प्रत्येक नख के पौखे पर देवियाँ थिरक-थिरक कर, कमर लचकाकर नृत्य कर रही हैं।

किन्नर हाथों में बीन लेकर बजा रहें हैं और उसकी लय में संगत कर रहे हैं। दौलतराम कहते हैं कि उसे देखकर नेत्र तृप्त हो जाते हैं। और मोक्षमार्ग दिखाई देने लगता है।



महात्मा गाँधी के विचार हिन्दी के संदर्भ में

करूणा प्रेम और राष्ट्रीय एकता की अगर कोई भाषा है तो वो हिन्दी ही हैं। इस तथ्य को सभी राष्ट्रवादी जन नेताओं ने हृदय से स्वीकार किया है। किन्तु कुछ राजनेता दंभ के चलते और उनके अंग्रेजी लगाव के कारण इन जन नेताओं के विचार आज अप्रचलित जैसे हो गये आज हमें एक बार उन पर बढी अहं और दंभ की धूल को झड़ते हुए देखना होगा कि हमारे देश के आजादी के मसीहा अहिंसा के पुरोधा महात्मा गाँधी ने अपने हिन्दी के संदर्भ में विचार समय समय पर प्रस्तुत किये हैं वे इस प्रकार हैं।

1909 में हिन्द स्वराज में उन्होंने व्यक्त किया कि करोड़ों लोगों अंग्रेजी की शिक्षा उन्हें गुलामी में डालने जैसा है मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली वह सचमुच में गुलामी की बुनियाद भी 1914 में बापू ने व्यक्त किया कि अंग्रेजी भाषा हमारे राष्ट्र के पाँव की बेड़ी बनकर पड़ी हुई है भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी के मार्फत ज्ञान अर्जित करने में 6 वर्ष अधिक बरवाद करना पड़ते हैं।

बापू ने 1916 में कहा कि जिस भाषा में तुलसीदास जैसे कवि ने कविता की वह अत्यंत पवित्र हैं उसके सामने कोई भाषा ठहर नहीं सकती।

हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है जिस स्थान को अंग्रेजी भाषा आजकल लेने का प्रयास कर रही है जिसे लेने उसे असंभव है। वह स्थान हिन्दी को मिलना चाहिये क्योंकि हिन्दी का उस पर पूर्ण अधिकार है। यह स्थान अंग्रेजी को नहीं मिल सकता है क्योंकि वह देशी भाषा है और हमारे लिये बड़ी कठिन है ये विचार बापू 1917 में व्यक्त किये थे।

कभी उन्होने कहा था कि अंग्रेजी के व्यामोह से पिंड घुड़ाना स्वराज्य का एक अनिवार्य अंग है। बापू ने अपनी बात को यहाँ खींच दिया कि मैयदि तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा देना बंद कर देता, सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषायें अपनाने के लिये मजबूर कर देता। जो आनाकानी करता उन्हें बर्खास्त कर देता। मैं पाठ्य पुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूँगा ये तो माध्यम के परिवर्तन के साथ अपने आप चली आयेंगी यह एक ऐसी बुराई है जिसका तुरंत इलाज जरूरी है।

महात्मा गाँधी ने मातृभाषा को माँ का स्थान देते हुए कहा कि मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हो मैं इससे इसी तरह से चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की

छाती से, जो मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है। अगर अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है तो उससे सख्त नफरत करूंगा वह कुछ लोगों के सीखने की वस्तु हो सकती है। लाखों करोड़ों की नहीं।

इस तरह बापू ने अनेकों सभाओं और पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अनेक प्रसंग हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा की मान्यता दी तथा स्वतंत्रता की पूर्णता हिन्दी को अपनाने में मानते थे वे विदेशी भाषा को अपनाने से जीवन के अमूल्य 6 वर्ष व्यर्थ जाते हैं। विदेश भाषा को छोड़कर भारत की किसी भी प्रांत की भाषा को अपनाने में ही वे संस्कृति रक्षा का उपाय मानते थे वे प्रायः कहा करते थे कि हिन्दी हमारी माँ के समान है उसमें भले ही खामी हो लेकिन माँ तो माँ ही होती है।

वर्तमान में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने हिन्दी अपनाओं विदेशी भाषा हटाओ का आंदोलन चला रखा है देखना यह की वे महात्मा गांधी के सपनों को साकार कितना कर पाते हैं और आचार्य श्री के शिष्य तथा भक्त उनकी भावनाओं को कितना सफल कर पाते हैं अहिंसा की भाषा हिन्दी को अपनाकर हम जियो और जीने दो उद्घोष का आचारात्मक प्रचार किया जा सकता है।

कविता

जिन तीर्थंकर

* डॉ. जयकुमार जैन अद्रोनी (शिवपुरी) *

आदिनाथ से महावीर तक चौबीसों भगवान
धर्मोपदेशक तीर्थंकर सब
जिन शासन के पूज्य देव थे करते जन कल्याण
दो गोरे दो सावले प्रभुवर दो हरियल दो नील
सौलह स्वर्ण समानकाय के नयना सुन्दर झील
काम क्रोध मदलोभ विजेता देते मुक्ति दान
जनम मरण अरू जरा रोग का जिनने नाश किया
सब जीवों को मोक्षमार्ग सच्चा ही उपदेश दिया
वस्तु स्वरूप बताया जिनने जो सुधा समान
पंचकल्याण हुये थे जिनके जग उद्धार करें
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी नव आनंद भरे
देवों के भी देव हमारे जग के ईश महान



दिल्ली उच्च न्यायालय का अहं फैसला

* डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर *

चौत्तीस साल पहले सन् 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी की दो सुरक्षाकर्मियों के द्वारा हत्या कर दी गई थी, इसके पश्चात दिल्ली में हिंसा भडक उठी तथा इसमें सिख समुदाय के 2700 से अधिक लोगों की अकेले दिल्ली में निर्मम हत्या कर दी गई थी, इस नरसंहार से संबंधित एक मामले में उच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति एस. मुरलीधर एवं न्यायमूर्ति विनोद गोयल की पीठ ने अपना महत्वपूर्ण फैसला सुनाया, इस फैसले में उन्होंने कांग्रेस के नेता सज्जन कुमार को उग्र कैद की सजा सुनाई, अपने फैसले में पीठ ने जो अन्य महत्वपूर्ण बातें कहीं, वे इस प्रकार हैं- यह मानवता के विरुद्ध अपराध था जिसे राजनीतिक संरक्षण प्राप्त था तथा इस घटना में एनफोर्समेंट संस्थाएं निष्क्रिय बनी रहीं, सामूहिक नरसंहार का यह न तो पहला मामला था और दुःखद रूप से न ही अंतिम इस प्रकार की सामूहिक हत्याओं का एक जैसा स्पष्ट तरीका रहा है, देश के बंटवारे के समय, सन् 1993 में मुंबई में, सन् 2002 में गुजरात में, सन् 2008 में उड़ीसा के कंधमाल में, सन् 2013 में उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुए नरसंहार इसके कुछ उदाहरण हैं, इन सभी उदाहरणों में जो बात एक जैसी है वह यह कि इनमें अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया तथा प्रभावक राजनीतिक नेताओं द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया जिनको प्रदान करने वाली प्रवर्तन संस्थाएं मदद कर रही थी।

मैं फैसलें की इस पंक्ति को रेखांकित करना चाहता हूँ कि अल्पसंख्यकों को हमेशा निशाना बनाया गया, जैन समाज भी एक अल्पसंख्यक समाज है, बहुसंख्यकों की आबादी के 1% से भी कम जैनों की स्थिति तो और भी अधिक नाजुक है, कुछ जैन भले ही सोचें कि हम पर कभी ऐसा नहीं हुआ और न होगा, लेकिन वे गलत हैं, जैनों के साथ भी ऐसा होता रहा है, तरीका थोड़ा अलग रहा है, जैनों ने कभी हिंसा का रास्ता नहीं अपनाया, इसलिये इनके प्रति अन्याय करने का तरीका थोड़ा भिन्न है।

एक ओर हमारी जनसंख्या कम है तथा दूसरी ओर हम आपस में बिखरे हुए हैं तथा लड़ते रहते हैं, इसलिये हमारे ऊपर बहुसंख्यक समुदाय द्वारा हो रही ज्यादसियों को हम या तो उठाते ही नहीं है उठा ही नहीं पाते हैं और उठाते भी हैं तो आधे अधूरे मन से, बहुसंख्यकों ने हमारे अनेक जैन तीर्थ छीन लिये और हम कुछ न कर सके, उन्होंने हमसे हमारे तीर्थ तिरूपति, बद्रीनाथ, गिरनार और न जाने दक्षिण के कितने तीर्थों को हमसे छीन लिया और हम सब सहन करते रहे, आज भी बहुसंख्यक लोगों द्वारा शिखरजी, पालीताणा, मंदारगिरी आदि को हड़प लेने के प्रयास किये जा रहे हैं, सरकारें आती हैं जाती हैं लेकिन इन मामलों में कोई भी राजनीतिक दल दखल नहीं देना चाहता है क्योंकि वे वोट की खातिर बहुसंख्यकों को नाराज नहीं कर सकते हैं।

तो प्रश्न उठता है कि क्या इन समस्याओं से निपटा नहीं जा सकता है ? क्या इनसे निपटना संभव नहीं है ? मेरा विचार है कि इनसे निपटना संभव है लेकिन उसके लिये हमें कुछ कठोर कदम उठाने होंगे, स्वयं अपने लिये हम सभी जैनों को चाहें वे दिगम्बर हों या श्वेताम्बर, बीसपंथी हों या तेरहपंथी, अपने मतभेद भुलाकर एकजुट होना होगा जहां कहीं भी आपस में मुकदमें चल रहे हैं उन्हें अविलंब समाप्त करना होगा हम जो भी मान्यता रखते हैं उसे मानें इसमें कोई आपत्ति नहीं, मंदिर या उपाश्रय के अंदर हमारी मान्यता अलग रही आये लेकिन मंदिर या उपाश्रय के बाहर हम सब एकजुट रहें, यदि हम ऐसा कर पाये तो शायद हम अपनी आस्था और श्रद्धा के प्रतीक अपने तीर्थों को बचा सकेंगे अन्यथा एक दिन बचे खुचे हमारे जैन तीर्थ भी कालांतर में बद्रीनाथ, तिरुपति आदि की तरह हमसे छीन लिये जायेंगे और हम कुछ नहीं कर पायेंगे।

मेरा सभी जैनों से अपील है कि हम सब इस बात पर गंभीरता से विचार करें, सारे मतभेद भुला कर एकजुट होने का अविलंब प्रयास करें तथा जैन धर्म और तीर्थों की रक्षा के लिये कमर कसलें, यदि दिगम्बर तीर्थों के साथ अन्याय हो रहा हो और श्वेताम्बर यह सोच कर चुप बैठे रहें कि यह दिगम्बरों का मामला है, या फिर इसी प्रकार यदि श्वेताम्बर तीर्थों के साथ अन्याय हो रहा हो और दिगम्बर यह सोच कर चुप बैठे रहें कि यह तो श्वेताम्बरों का मामला है तो हम बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं यह हमारी बहुत बड़ी भूल होगी तथा इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा।

ब्र. जिनेश मलैया व श्री गजेन्द्र माया समाज-गौरव से सम्मानित

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी (गढ़कोटा) में वहां चल रहे भव्य श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक जिन बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव में आयोजित श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के 48वें साधारण सभा के वार्षिक अधिवेशन में विद्वत् परिषद् ने ब्र. जिनेश मलैया को धर्म



संवर्धन, विद्वत् प्रोत्साहन, सामाजिक समरसता साहित्य सृजन हेतु समाज गौरव की उपाधि से अलंकृत किया। श्रीमान् श्रेष्ठी गजेन्द्र-माया जैन (गित्री गुप) इन्दौर को धर्म प्रभावना, दानवीरता और समाजोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों हेतु विद्वत् परिषद् ने समाज गौरव की उपाधि से विभूषित किया। ये सम्मान विद्वत् परिषद् के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर, महामंत्री डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज, पूर्व न्यायाधीश मान्या श्रीमति विमला जैन, श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.), श्री. डी.के. जैन (सेवानिवृत्त डी.एस.पी.) इन्दौर ने इन्हें इस गौरव से सम्मानित किया।

भारतीय शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता : सावलिया घेर में

✽ डॉ. अरविन्द जैन (भोपाल) ✽

किसी भी देश की संस्कृति, विकास को नष्ट करना हो तो उसकी शिक्षा पद्धति को नष्ट करो या गिरा दो। हम क्यों अभी भी नालंदा और तक्षशिला को याद करते हैं ? क्यों हम अपने देश के पुराने संत वैज्ञानिकों के नाम लेते हुए नहीं थकते। हम बहुत गौरव से कहते हैं कि हमने शून्य की पहले खोज की, कोई कहता है लौह धातु के उपयोग की, कोई चिकित्सा शास्त्र की तो कोई शल्य तंत्र की और कोई भूगोल, आदि की उसका कारण था की उनको या उन्हें काम करने का अवसर मिला उन्होंने स्वतंत्र और राज्याश्रय से काम किया, उस समय गुणों की पूजा होती थी और उस समय वर्तमान जैसा भाई भजीतवाद या भ्रष्टाचार नहीं होता था।

श्री प्रणब मुखर्जी ने स्पष्ट कहा है कि विश्व में हमारे यहाँ के वैज्ञानिकों ने जो भी नोबल पुरस्कार प्राप्त किये हैं उन्होंने देश की शिक्षा की बदौलत नहीं अन्य देशों में कार्य करके सफलता प्राप्त की। हमारे यहाँ तो योग्यता की परिभाषा राजनैतिक संरक्षण से मापी जाती है। जो केन्द्र के जितने नजदीक होगा वह उतना सफल और जो परिधि पर है वे रहेंगे।

हमारे देश में यह चलन है की लार्ड मैकाले ने शिक्षा का अंग्रेजीकरण किया और शिक्षा में पश्चिमीकरण कर हमारे देश की संस्कृति, इतिहास और शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन किया। इस बात को किये लगभग 150 वर्ष से अधिक हो गये। और उस समय भी रोना रहा पर उस समय जितने भी राजनेता, विद्वान, वैज्ञानिक, साहित्यकार आदि जो भी हुये वे उसी शिक्षा की बदौलत हुये। जो क्रांति के बीज हुये वे उस समय दी जाने वाली शिक्षा के कारण। कारण उस समय जो शिक्षा दी जाती थी उसका एक क्रम था, सिलसिला था। और उसके माध्यम से वे लोग विदेश भी गये और देश में जो शिक्षा दी गयी उसने भी बहुत कुछ ज्ञान दिया।

आज हमारा देश स्वतंत्र हुये 70 वर्ष से भी अधिक हो गये। उनके द्वारा तो बुनियाद रखी गई थी न उनको बदल पाये और जो नये नये संस्थान खुले शुरू में युगानुरूप रहे पर जब से शिक्षा का राजनीतिकरण हुआ और हर राज्य और केन्द्र सरकार में जो नयी सरकार आयी उन्होंने शिक्षा पर प्रैक्टिकल करना शुरू किया। इस प्रैक्टिकल के कारण हर पार्टी ने अपने अपने हिसाब से संस्थाओं पर अपनी अपनी विचारधारा थोपी या थोपना चाही। इस कारण एक प्रणाली की शुरुआत करते करते समय बीता और सत्ता परिवर्तन हुआ और नयी सरकार ने अपनी विचार धारा थोपनी शुरू की। इसके पीछे राजनीति के साथ पुस्तक विक्रेताओं की लाबी और उससे जुड़े लोग और नीति निर्माता। इस प्रकार इस खेल में शिक्षा का स्तर पूरा खतम हुआ और बुनियाद कमजोर होने से भवन हिलने लगे।

सरकारी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा में गिरावट के कारण कान्वेंट और प्राइवेट स्कूलों का चलन बढ़ा। उनको अपनी संस्था को उत्तरोत्तर विकसित करने के लिये फीस बढ़ाई और गुणवत्ता युक्त शिक्षा देना शुरू किया जिससे सबका आकर्षण उनकी तरफ होना शुरू हुआ। इसी प्रकार निजीकरण का दौर चला उनमें बुनियादी संरचना का अभाव होने पर भी आकर्षण बनता चला जा रहा और सरकारी कॉलेज, विश्वविद्यालय राजनीति के अखाड़े बनना शुरू हुये, यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन जैसी सर्वोच्च संस्थायें भी लचीली प्रक्रिया का पालन करने के कारण जहाँ शिक्षकों की कमी या बुनियादी अधोसंरचना के अभाव में लालच में या दबाव में उनकी

मान्यतायें बरकरार करने में मजबूर होने लगी। यहाँ तक की संस्थायें भौतिक रूप से भी नहीं है तब भी मान्यताओं के आधार पर प्रवेश और उपाधि बांटी गयी।

शिक्षकों का अभाव, पठन पाठन की सामग्री का नित्य नये परिवर्तन, नियुक्तिओं में राजनैतिक हस्तक्षेप के साथ लोभ लालच के कारण अयोग्य या क्रम से योग्य की नियुक्ति न करने से न्यायालयों के चक्कर के कारण अनेक संस्थायें जड़ हो गयी। बड़े बड़े संस्थान राजनीति के अड्डे बने। पूरे संस्थानों में जैसे ज्ञान का अभाव। हाँ जरूर वेतन बढ़ी पर अध्यापन कम हुआ। जिन संस्थाओं में काम हो रहा है उनमें टांग खींची जाना और बुनियादी अधोसंरचना के लिये अर्थ का लोगों को अन्यत्र भोजना या कोई जाँच स्थापित कर देना।

इसके लिये आवश्यक यह होना चाहिये की यदि सरकार बुनियादी शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा तक सत्ता के साथ नीतियों में परिवर्तन न करे, और उसमें संशोधन पर परिवर्धन करे दूसरा शिक्षा हो या चिकित्सा का क्षेत्र उनमें पदों की रिक्तियां न हो। उनमें निरंतरता बनी रहे बुनियादी अधोसंरचना पूरे करे इसके साथ समय समय पर उन्हें नयी नयी खोजे, विशेषताओं से अवगत कराये और जो नियुक्त हो वे अपनी निष्ठा से काम करें, एक बात समझ से परें है जब तक नौकरी नहीं मिलती तब तक आज्ञाकारी सेवक बनने की शपथ लेते हैं और नौकरी मिलने के बाद कर्तव्य भूलकर अधिकारों के लिये लड़ने लगते हैं, वर्तमान में सेवा के अनुरूप वेतन बहुत अच्छा है आज भौतिक और आर्थिक सम्पन्नता के कारण सुविधा भोगी होने से मेहनत कम, धन अधिक खर्च ना और सेवा शीघ्र चाहने के कारण शासकीय सेवाओं की स्थिति गौण होने लगी और निजीकरण पर अधिक रुझान होने से गुणवत्ता का हास होने लगा

श्री मुखर्जी साहब की पीड़ा चिंतादायक है। आज हमारा देश जन बल में बहुत अग्रणी है पर प्रतिभा प्रदर्शित करने में विश्व में कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं बना पा रहा है। और जब यहाँ से बाहर जाते हैं तब क्यों वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर श्रेष्ठ स्थान बना पाते हैं। इसका कारण उन्हें समुचित सुविधायें और वातावरण मिलता होगा। हमारे यहाँ वो सुविधायें नहीं दे पाते या मिल नहीं पाती जिससे हमारे यहाँ संतोषजनक प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं ... आज लाखों की संख्याओं में रिक्त पद है। और बिना भरती के कोई भी संस्थानों में काम नहीं होगा। मशीनीकरण के बावजूद मानव शक्ति का उपयोग जरूरी है।

इस ओर समय पर ध्यान नहीं दिया गया तो हम बौद्धिक रूप से गुलाम होने की दिशा में बढ़ जायेंगे। आज भी हमारे यहाँ सब कुछ होने के बाद भी हम अन्य देशों की खोजों और शोधों पर निर्भर हैं हमारे मूलभूत सिद्धांतों की पुष्टि अमेरिका, ब्रिटेन से होने पर हम मान्य करते हैं और मान्यता देते हैं जबकि हमारे यहाँ योग्यता की कोई कमी नहीं है। सिर्फ शिक्षा, स्वास्थ्य की नीतियों में बार बार परिवर्तन करने की जरूरत नहीं है। अन्यथा प्राचीन समय में हमारे वेद पुराण विदेश गये हैं पर अब संचार क्रांति के आधार पर हमारे घर से सेंध लगाकर पुरानी विरासत विदेश चली जायेगी और हम अपना सर पीटते रहेंगे। और हम विदेशी शोधों पर ही गौरवान्वित होते रहेंगे।

घिनौनी राजनीति के प्रभाव से देश, समाज, परिवार और व्यक्ति में जो आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक आदि गिरावट आयी है उससे हम खोखले हो रहे हैं। जिस प्रकार अन्याय से धन कमाने की अपेक्षा गरीब रहना अच्छा है जैसे कोई दुबला व्यक्ति मोटा होने के लिये उसके शरीर में सूजन आ जाये उससे दुबला अच्छा। हम लोग प्राचीन भारत गौरव पर कितने दिन इठलाते रहेंगे। हाँ नया क्या कुछ कर रहे हैं अपेक्षाकृत। जो उल्लेखनीय नहीं है।



अयुग्म स्वास्थ्य योग

सावधान एल्युमिनियम में क्यों न भोजन ?

वर्तनों में भोजन पकाने और खाने से भी शरीर पर उसका प्रभाव पड़ता है। पुराने समय में घरों में सबसे अधिक चांदी, पीतल, व लोहे के बर्तनों का होता था जिनमें मौजूद सूक्ष्म तत्व (माइक्रो एलिमेंट) खाने के साथ शरीर में जाकर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का काम करते हैं। ये बर्तन जिन तत्वों से बनते हैं वो जमीन के भीतर से निकालकर तैयार किये जाते हैं। जिनमें सभी तरह के गुण होते हैं जो शरीर के लिये काफी फायदेमंद होते हैं। खास बात यह है कि इन धातुओं से बने बर्तनों में भोजन पकाने या भोजन खाने से शरीर के भीतर जो दूषित तत्व होते हैं बाहर निकल जाते हैं इन धातुओं से बने बर्तनों में मौजूद तत्व शरीर में जाकर सकारात्मक असर दिखाते हैं ध्यान रखने वाली बात यह है कि मौजूदा समय में इस्तेमाल होने वाले स्टील और एल्युमीनियम के बर्तनों में भोजन पकाने या खाने से इनमें तत्व भी शरीर के भीतर जाते हैं जिससे शरीर का भीतरी संतुलन खराब होता है इसका नकारात्मक शरीर पर लम्बे समय बाद दिखाई पड़ता है।

मिट्टी के बर्तन : शीतलता-मिट्टी के बर्तन में भोजन बनाने से भोजन के पोषक तत्व नष्ट नहीं होते हैं। सुराही का पानी शीतल होने के कारण प्यास बुझाता है और नुकसान नहीं करता साथ ही पाचन क्षमता बेहतर करता है इन पर बना खाना खाने से शरीर में हानिकारक तत्व नहीं जाते हैं।

लोहा: एनीमिया से राहत-लोहे के बर्तन में बना भोजन से शरीर में खून व आयरन की कमी नहीं होती। इन बर्तनों में पर्याप्त मात्रा में आयरन होता है जो खाने में मिलकर संतुलित रूप से शरीर में पहुँचता है। ऐसे लोग जिनमें आयरन की कमी है खास कर महिलायें लोहे के बर्तनों में बना भोजन जरूर लें। सब्जी लोहे की कढ़ाई में बनाई जाये तो पोषक तत्वों की पूर्ति होगी।

पीतल : पाचनतंत्र दुरुस्त- पीतल कॉपर और कांसा का मिश्रण होता है इस बर्तन में तेज आग पर जब खाना बनता है तो इस मेटल के तत्व भोजन में आ जाते इस कारण भोजन लम्बे समय तक सुरक्षित रहता है पीतल के लोटे में पानी पीने शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ने के साथ मन मस्तिष्क शांत और पाचनतंत्र दुरुस्त रहता है पुराने समय में पूजा पाठ में पीतल के बर्तनों का प्रयोग किया जाता क्योंकि इन्हें पवित्र माना जाता है।

चांदी : हड्डियां मजबूत- चांदी भी शुद्ध होती है इसके बर्तनों में भोजन करने से इसमें मौजूद तत्व शरीर और हड्डियों से लेकर मांसपेशी और रोग प्रतिरोध क्षमता को संतुलित रखते हैं कोई तत्व जो शरीर की इम्युनिटी घटाता उसे चांदी में मौजूद सूक्ष्म तत्व रोकने या

खत्म करने का काम करते हैं साथ ही रक्तसंचार बेहतर करते हैं।

सोना : सेहतमंद- सोना खरा व शुद्ध होता है सोने के बर्तनों में भोजन करने से इस मेटल में मौजूद सूक्ष्म तत्व शरीर में जाते हैं और बॉडी को मजबूत बनाने के साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। ये भी कहा जाता है कि सोने के बर्तन में खाने से मन मस्तिष्क सेहतमंद रहता है और व्यक्ति ऊर्जावान रहता है।

तांबा : बी.पी. नियंत्रित- तांबे के बर्तन में रखा पानी पीने से यूरिन और पसीने के माध्यम से शारीरिक शोधन होता है। इस धातु में मौजूद तत्व पानी को शीतल बनाने के साथ साफ भी करते हैं। सुबह तांबे के बर्तन में रखा पानी पीने से शरीर में स्फूर्ति महसूस होती है। नियमित ऐसा करने से ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है और पेट संबंधी विकार भी दूर होते हैं।

स्टील और सिल्वर के बर्तनों में खाना पकाने या खाने से शरीर का संतुलन भी खराब हो सकता है।

इन बर्तनों में नहीं खाते तो ये करें-

सोने, चांदी, तांबे, पीतल व लोहे के बर्तन में बना या परोसा भोजन नहीं करते हैं तो साल में एक बार आयुर्वेद विशेषज्ञ की सलाह से शोधन थैरेपी ले सकते हैं। ये थैरेपी ऋतु के हिसाब से दी जाती है इसकी मदद से शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालकर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं थैरेपी के निम्न हिस्से हैं।

वस्ती : गुर्दा मार्ग से औषधि प्रवेश कराकर शरीर के दूषित तत्वों को बाहर निकालते हैं ये थैरेपी मुख्य रूप से वर्षा के बाद या मध्य में दी जाती है।

विरेचन : दस्त के माध्यम से हानिकारक तत्वों को बाहर निकालते हैं। यह थैरेपी आमतौर पर सर्दी की शुरुआत में देते हैं।

वमन : उल्टी कराकर शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालते हैं। ये शोधन प्रक्रिया आमतौर पर बसंत ऋतु में की जाती है।

पत्ते में भोजन पकाने के फायदे :-

पत्ता सबसे शुद्ध होता है जिसमें किसी भी तरह का दूषित तत्व नहीं होता है। हरे केले के पत्ते में गरम भोजन करने से उसमें मौजूद हल्दी बैक्टीरिया भोजन के साथ मिलकर पेट में जाते हैं। ये आंतों को मजबूत बनाने के साथ उसकी कार्यक्षमता बढ़ाते हैं पत्ते में भोजन पकाने के भी बहुत फायदे हैं हल्दी केले व दूसरे पौधों के पत्तों में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं।

इन पत्तों में लपेटकर भोजन पकाया जाये तो वो बहुत हेल्दी और टेस्टी होता है। इन पत्तों में मौजूद बैक्टीरिया होते हैं। जो शरीर में जाकर पाचनतंत्र को ठीक करते हैं। साथ ही उस खाने में जो पानी इस्तेमाल होता है उसे शुद्ध करने का काम करते हैं।

आयुर्वेद को जैनाचार्यों की देन

* डॉ. सुशील जैन (मैनपुरी उ.प्र.) *

आयुर्वेद शास्त्र विश्व का प्राचीनतम चिकित्सा विज्ञान है। जिसका उद्गम भारत वर्ष में हुआ। इसकी एक मौलिक विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य की शारीरिक स्थिति के साथ-साथ उसकी मानसिक एवं आध्यात्मिक स्थिति के विषय में पर्याप्त एवं गम्भीर विचार किया गया है। शरीर के साथ साथ प्राण तत्व का विवेचन आत्मा और मन के विषय में स्वतन्त्र दृष्टिकोण तथा शारीरिक मानसिक व बौद्धिक विकास क्रम का यथोचित वर्णन आयुर्वेद की वैज्ञानिकता एवं प्रमाणिकता का सबल प्रमाण है। विश्व के सभी इतिहासकारों एवं वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है कि इसका मूल स्रोत जैनागम से है। जैन वाङ्मय का आयुर्वेद शास्त्र का स्वतन्त्र स्थान है जो सर्वज्ञ द्वारा कथित है।

सर्वज्ञ तीर्थंकर के मुख से जो दिव्यध्वनि प्रस्फुटित हुई उसे श्रुत ज्ञान के धारक गणधर ने अविकल रूप से ग्रहण की। गणधर द्वारा गृहीत वह दिव्यध्वनि उनके द्वारा आचारांग आदि 12 भेदों में विभक्त की गयी है। गणधर द्वारा निरूपित 12 भेदों में द्वादशांगों में प्रथम आचारांग है और वारहवां दृष्टिवाद नाम का अंग है। उस वारहवें दृष्टिवादांग के पांच भेद हैं -

1. परिकर्म 2. सूत्र 3. प्रथमानुयोग 4. पूर्वगत 5. चूलिका।

इनमें जो पूर्व या पूर्वगत नामक भेद है उसके 14 भेद हैं। उन 14 भेदों में प्राणावाद या प्राणावाय नामक शास्त्र का मूल द्वादशांग के अन्तर्गत प्राणावाद नामक भेद है। इस प्राणावाद नामक अंग में अष्टांग आयुर्वेद का कथन अत्यन्त विस्तार पूर्वक किया गया है। इसी के आधार पर जैनाचार्यों ने लोकोपयोगी वैद्यन शास्त्र की रचना की जिसे हम आयुर्वेद शास्त्र कहते हैं। जैनाचार्यों ने प्राणवाद की विवेचना इस प्रकार की है -

काय चिकित्साध्यांग आयुर्वेदः भूत कर्म जांगुलिप्रक्रमः ।

प्राणापानविभगोपि यत्र विस्तरेण वर्णितस्तत्प्राणावायम् ॥

आयुर्वेद शास्त्र केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिये ही उपयोगी नहीं है अपितु मानसिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य के लिये भी हितकारी है। इसमें प्रतिपादित सिद्धान्त चिकित्सा के अतिरिक्त ऐसे नियमों को प्रतिपादित किया है तो मनुष्य के आध्यात्मिक आचरण मानसिक प्रवृत्ति और बौद्धिक जगत के क्रिया कलापों को भी पर्याप्त रूप से प्रभावित करते हैं। अतः यह केवल चिकित्सा शास्त्र ही नहीं है अपितु शरीर विज्ञान, मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, तत्व विज्ञान, दर्शन शास्त्र, आचार शास्त्र, धर्म शास्त्र का एक ऐसा अद्भुत समन्वित रूप है जो सम्पूर्ण जीवन के अन्याय पक्षों को व्याप्त कर लेता है। अतः हम निःसन्देह कह सकते हैं यह एक सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है।

जैन मतानुसार आयुर्वेद शास्त्र का मूल द्वादशांग के अन्तर्गत प्राणावाय नामक भेद है। इसी के आधार पर जैनाचार्यों ने लोकोपयोगी वैद्यक शास्त्र की रचना की। जिस शास्त्र में काय तद्गत दोष और उनकी चिकित्सा आदि अष्टांग आयुर्वेद पृथ्वी आदि पंच महाभूतों के कर्म विषैले

जीव जन्तुओं के विष का प्रभाव और उसकी चिकित्सा तथा प्राण अपान वायु का विभाग जिसमें विस्तार पूर्वक वर्णित है वह प्राण वायु है।

द्वादशांग के अन्तर्गत निरूपित प्राणवायु पूर्व नामक अंग मूलतः अर्ध मागधी भाषा में लिपिबद्ध है। इस प्राणावायु पूर्व के आधार पर ही अन्यान्य जैनाचार्यों के विभिन्न वैद्यक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। श्री उग्रादित्याचार्य ने प्राणावायु पूर्व के आधार पर कल्याणकारक नामक वैद्यक ग्रन्थ की रचना की। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है। कि यह एक जैन आचार्य थे और राष्ट्रकूट वंशी राजा अमोघवर्ष प्रथम तथा चालुक्यवंशी राजा कलि विष्णुवर्धन पंचम काल में थे जिसका समय 9वीं शताब्दी है। श्री उग्रादित्याचार्य के गुरु श्री नन्दि थे जो प्राणवायु विज्ञान के विद्वान थे उन्होंने आयुर्वेद का ज्ञान ग्रहण किया था। कल्याण कारक ग्रन्थ में अनेकों आचार्यों का उल्लेख मिलता है।

ग्रन्थ के अन्त में आचार्य लिखते हैं -

सर्वार्थाधिकमागधीयविलसद्भाषाविशेषोज्ज्वलात्।

प्राणावायमहागमादवितथं संगृह्य संक्षेपतः ॥

उग्रादित्यगुरुगुरुगुणैरूद्भावि सौख्यास्पदं।

शास्त्रं संस्कृतभाषया रचितवानित्येष भेदस्तयोः ॥54॥

भावार्थ- सर्व अर्थ को प्रतिपादित करने वाली सर्वार्थ मागधी भाषा में अत्यन्त सुन्दर जो है प्राणावायु नामक महाशास्त्र (अंग) उससे यथावत् संक्षेप रूप से संग्रह कर उग्रादित्य गुरु ने उत्तम गुणों से युक्त सुख के स्थानभूत इस शास्त्र की संस्कृत भाषा में रचना की है।

आचार्यों ने अलग-अलग चिकित्सा की शाखाओं पर ग्रन्थ लिखे जो निम्नवत् हैं।

आचार्य महर्षि पूज्यपाद	शालाक्यतन्त्र
आचार्य पात्र केशरी स्वामी	शल्यतन्त्र
आचार्य सिद्धसेन	अगद तन्त्र एवं भूतविद्या
आचार्य दशरथ मुनीश्वर	काय चिकित्सा
आचार्य मेघनादाचार्य	कौमारभृत्य
आचार्य सिंहनाद मुनीन्द्र	वाजीकरण और रसायन तन्त्र

अन्य जैनाचार्यों ने जो वैद्यक ग्रन्थ की रचना की है, उस विषय में उनका पूर्ण पाण्डित्य था। उसमें श्रुतकीर्ति, कुमारसेन, वीरसेन, पूज्यपाद पात्रस्वामी (पात्रकेसरी) सिद्धसेन, समन्तभद्र एवं जटाचार्य आदि आचार्यों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इससे स्पष्ट है कि इन आचार्यों ने भी वैद्यक ग्रन्थों की रचना की है। परन्तु खेद है आज अन्य ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने आयुर्वेद पर विस्तार से ग्रन्थ की रचना की है। कल्याण कारक में उन्हीं का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया गया है। इनमें से उग्रादित्याचार्य के कल्याण कारक वैद्यक ग्रन्थ के अतिरिक्त कोई भी ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। हम सभी विचार करें कि वे सब ग्रन्थ कहाँ चले गये? नष्ट हो गये! इसके सिवाय हमारे पास और क्या उत्तर है! सचमुच ये जैन समाज का दुर्भाग्य है न जाने उन महान ग्रन्थों में कितने अमूल्य रत्न भरे होंगे। **क्रमशः (शेष अगले अंक में)**

चलो देखें यात्रा

तीर्थकर आदिनाथ के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र- जिनालय, अतिशय क्षेत्र

✽ इंजी. आई. एम. जैन (पहाड़िया) इन्दौर ✽

हमारे भारतवर्ष में प्रथम तीर्थकर आदिनाथ के कई अतिशय क्षेत्र एवं जिनालय है, यहां उनके प्रदेश (राज्यों) अनुसार प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्रों का वर्णन किया जा रहा है।

सिद्धक्षेत्र- अष्टापद कैलाश बट्टीनाथ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र श्री बट्टीनाथ, चमोली श्री नगर यहां से योग निरोधकर मोक्ष प्राप्त किया। निर्वाण भूमि के प्रतीक स्वरूप चरण पादुकायें स्थापित है।

1. मध्यप्रदेश - कुण्डलपुर (दमोह), बावनगजा चुलगिरी (बड़वानी), सिद्धवरकूट (खण्डवा), खजुराहो (छतरपुर), जामनेर (शाजापुर), खंदारगिरी (गुना), थुबोन जी (अशोकनगर), भियादांत (चंदेरी), द्रोणागिरी (छतरपुर), गोलाकोट (शिवपुरी), आदिश्वर नोहटा (दमोह), नेमगिरी बण्डा (सागर)

2. राजस्थान- श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी (झालावाड़) मौजमाबाद (जयपुर), श्री केशरिया जी (उदयपुर) में अति प्राचीन एवं चमत्कारी प्रतिमायें हैं।

3. गुजरात- श्री आदिनाथ जिनालय ईडर जिला साबरकांठा

4. महाराष्ट्र- ऋषभगिरी मांगीतुंगी जी सिद्धक्षेत्र जिला नासिक गणिनी आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमति माताजी की प्रेरणा से 108 फीट की खड्गासन प्रतिमा, विश्व की सबसे ऊँची, पर्वत को काटकर तराशी गई, दर्शनीय एवं वंदनीय है।

5. उत्तरप्रदेश - श्री ऋषभदेव जैन मंदिर अयोध्या, (जिला फैजाबाद) जहाँ तीर्थकर भगवान के गर्भ, जन्म कल्याणक व चार अन्य तीर्थकरों के साथ कुल 18 कल्याणक हुये हैं।

6. हरियाणा- श्री दिगम्बर जैन आदिनाथ भगवान अतिशय क्षेत्र रानीला, जिला भवानी, 18 अक्टूबर 1991 को टीले की खुदाई में प्राप्त 1400-1500 वर्ष प्राचीन है।

7. कर्नाटक- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जैनमठ श्रवणबेलगोला में विन्ध्यगिरि पर्वत पर स्थित मंदिर में भगवान आदिनाथ की प्राचीन प्रतिमायें विराजमान है।

8. तमिलनाडु - में कई प्राचीन मंदिर हैं जिनमें आदिनाथ मंदिर, तंजाऊ, दीपमुण्डी/दीपनायक जिनालय, ग्राम अर सवन काडू जिला थिरुवरूर ता कोडावसल आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर पौन्नूर मलै अतिशय क्षेत्र।

इस प्रकार भगवान आदिनाथ की प्रतिमायें सर्वाधिक चमत्कार अतिशयकारी, मनोवांछित फल देने वाली, कई शहरों, कस्बों में विराजित है, जिनके चमत्कारों से तीर्थ क्षेत्र अतिशय क्षेत्र बन गये हैं, सभी वंदनीय एवं दर्शनीय है।

सामाजिक समस्याओं के समाधान में जैनधर्म का योगदान

✽ डॉ. पंकज कुमार जैन (भोपाल) ✽

मानव समाज की संरचना इतनी जटिल और विविधता पूर्ण है कि इसमें समय-समय पर अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं। इन समस्याओं में से कुछ समस्याएँ तो सभी समाजों में समान रूप से व्याप्त हैं और कुछ समस्याएँ किसी समाज विशेष में ही दिखायी देती हैं। यदि समाज में उत्पन्न समस्याओं के समाधान पर ध्यान न दिया इसलिये प्रस्तुत आलेख में कुछ सामान्य सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ विशेष रूप से जैन समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान हेतु जैन धर्म के सिद्धान्तों, मान्यताओं और परम्पराओं की दृष्टि से गंभीर विचार किया गया है।

मानव समाज में संरचनात्मक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। भिन्न-भिन्न समाजों में व्याप्त सामाजिक समस्याओं के स्वरूप, प्रकृति एवं गहनता में भिन्नता पायी जाती है। वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से हो रहा है। इस तरह बदलते आधुनिक समाज के स्वरूप ने सामाजिक समस्याओं में अप्रत्याशित वृद्धि की है। मानव समाज इन सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिये सदैव प्रयासरत रहा है, क्योंकि सामाजिक समस्याएँ समाज को विखण्डित कर समाज के अस्तित्व के लिये खतरा पैदा करती हैं। इस कारण विभिन्न दृष्टियों से सामाजिक समस्याओं के समाधान खोजना अत्यावश्यक है। वर्तमान सामाजिक समस्याओं के समाधान खोजने में हमारा ध्यान जैनधर्म के उन सार्वकालिक सिद्धान्तों की ओर जाता है। जिन सिद्धान्तों में अनादिकाल से प्राणिमात्र का सम्पूर्ण कल्याण निहित है।

वर्तमान में समाज में व्याप्त कुछ प्रमुख समस्याएँ और उनके समाधान में जैन धर्म का योगदान इस प्रकार है।

1. सामाजिक संगठन एवं नेतृत्व का अभाव- आज की सामाजिक समस्याओं में सामाजिक विखण्डन एवं नेतृत्व के अभाव की समस्या अत्यन्त गम्भीर है। मनुष्य की बढ़ती हुई स्वार्थ पूर्ण मनोवृत्ति एवं असहिष्णुता के कारण सामाजिक संगठन बिखर रहा है। सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाएँ राजनीति का केन्द्र बनकर रह गयी हैं। परस्पर में इतनी वैमनस्यता बढ़ गई है कि समाज का मूल स्वरूप ही नष्ट होने की कगार पर है। समाज वस्तुतः व्यक्तियों का समूह है। व्यष्टि से समष्टि की भावना में ही समाज का अस्तित्व संरक्षित है। आज व्यक्ति अपनी स्वार्थी एवं अहंकारी मनोवृत्ति के कारण अन्य का नेतृत्व स्वीकार नहीं कर पा रहा है। इस कारण समाज में विखण्डन और नेतृत्व के अभाव की समस्या दिन प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही है।

समाज जातियों-उपजातियों एवं विभिन्न पंथों में विभक्त होता जा रहा है। भिन्न-भिन्न साधुओं एवं संघों के भक्तगण भी अलग-अलग खेमों में बँटते जा रहे हैं। इस विभाजन की विभीषिका में समाज बुरी तरह झुलस रहा है।

समाधान- सामाजिक विखण्डन और नेतृत्व के अभाव की गंभीर समस्या के समाधान के लिये जब हम जैन शास्त्रों पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें शास्त्रों में ऐसे अनेक निर्देश प्राप्त होते हैं जिनके अनुपालन से समाज के संगठन की रक्षा निश्चितरूप से हो सकती है।

आचार्य समन्तभद्र स्वामी रत्नकरण्डश्रावकाचार में लिखते हैं कि -

स्वयूथ्यान्प्रति सद्भावसनाथापेतकैतवा।

प्रतिपत्तिर्यथायोग्यं वात्सल्यमभिलष्यते॥1॥

अर्थात् अपने सहधर्मी बन्धुओं के समूह में रहने वाले लोगों के प्रति सद्भावना पूर्वक और मायाचार छोड़कर उनकी योग्यता के अनुसार उनका आदर सत्कार करना वात्सल्य अङ्ग है।

आचार्य समन्तभद्र का दृष्टिकोण सामाजिक समस्याओं के समाधान में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनके विराट् चिंतन में धर्म का संरक्षण भी समाज संरक्षण में ही निहित है।

आचार्य समन्तभद्र सामाजिक एकता की रक्षा के लिये मनुष्य के दंभ पर वचनाघात करते हुये स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि-

स्मयेन योऽन्यन्त्येति धर्मस्थान् गर्विताशयः।

सोऽत्येति धर्ममात्मीयं न धर्मो धार्मिकैर्विना॥2॥

अर्थात् मद (अहङ्कार) से गर्वितचित्त होता हुआ जो व्यक्ति धर्म में स्थित अन्य जीवों को तिरस्कृत करता है वह अपने धर्म को तिरस्कृत करता है, क्योंकि धर्मात्माओं के बिना धर्म नहीं होता।

आचार्य उमास्वामी तो जीव द्रव्य की स्वाभाविक वृत्ति या कार्य बतलाते हुये लिखते हैं कि- परस्परोग्रहो जीवानाम् अर्थात् आपस में एक दूसरे की सहायता करना जीव द्रव्य का उपकार या कार्य है।

जैन धर्म के पूर्वाचार्यों की उक्त भावना से यह भली भाँति स्पष्ट है कि वे सामाजिक समरसता और संगठन के संरक्षण के लिये अत्यन्त चिन्तित थे। वे अत्यन्त दूर दृष्टा थे। पूर्वाचार्यों की भावना के अनुरूप कार्य करने से आज भी सामाजिक संरचना को विखण्डित होने से बचाया जा सकता है।

पूजा पद्धतियों में भिन्नता की समस्या- जैन धर्म का दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार राग-द्वेष मुक्त वीतरागता है, परन्तु समाज में क्षेत्र के आधार पर विभिन्न पूजा पद्धतियाँ प्रचलित हैं। पूजा-अभिषेक आदि की पद्धतियों में सचित-अचित् आदि अनेक प्रकार के भेद होना जैन पूजा पद्धति का वैशिष्ट्य है, परन्तु आज समाज के मन्दिरों में प्रचलित पूजन पद्धतियों की भिन्नता के कारण समाज के लोगों में परस्पर द्वेष और मानसिक संघर्ष की स्थिति निर्मित हो रही है।

समाधान- विभिन्न पूजा पद्धतियों के पीछे क्षेत्रीय परम्पराएँ एवं परिस्थितियाँ मुख्य रूप से कार्य करती हैं। हमें परस्पर में एक-दूसरे की पूजा एवं उपासना पद्धतियों का सम्मान करना चाहिये और जब तक हमारे सम्यक्त्व में किसी प्रकार का दोष न लगे उन पूजा पद्धतियों का अनुकरण भी करना चाहिये। आचार्य सोमदेव सूरि ने जैनधर्म का उदार दृष्टिकोण व्यक्त करते हुये लिखा है कि-

सर्व एव हि जैनानां प्रमाण लौकिको विधिः।

यत्र सम्यक्त्वहानिर्न न चापि व्रतदूषणम्॥4॥

अर्थात् जैनों को वे सभी लौकिक क्रियाकलाप नियम, विधि, लोकाचार या परम्पराएँ स्वीकार हैं जिसमें सम्यक्त्व की हानि न हो और व्रतों में दोष न लगता हो।

इस प्रकार का उदार दृष्टिकोण रखने पर पूजा-पद्धतियों एवं धार्मिक परम्पराओं में भेद होने पर भी समाज में परस्पर सौहार्द एवं समरसता का वातावरण निर्मित होगा।

धार्मिक असहिष्णुता या धार्मिक हिंसा- यह प्राचीनकाल से आज तक की एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। धर्मान्ध लोग अपने धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों के सिद्धान्तों, मान्यताओं एवं परम्पराओं से द्वेष रखते हैं और अन्य धर्मानुयायियों की हिंसा करने का महापाप भी करते हैं।

समाधान- इस समस्या के समाधान हेतु जैन धर्म ने प्रारम्भ से ही अत्यन्त उदार दृष्टि रखी है। जैन धर्म व्यक्ति प्रधान न होकर व्यक्तित्व प्रधान रहा है। जैन धर्म में नाम को महत्व न देकर गुणों को महत्व दिया गया है। जैनाचार्यों ने गुणों के आधार पर स्वयं के अराध्य को उन नामों से भी अभिहित किया है जो अन्य धर्मों के आराध्य हैं।

जैनाचार्य पूज्यपाद (6 शती) ने जिनेन्द्र भगवान् की स्तुति करते हुये

शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे, जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः ॥5

अर्थात् जिनेन्द्र को मेरी वन्दना है जिसे शिव, धाता, सुगत (बुद्ध), विष्णु या सर्वभूतस्थ कहा जाता है।

आचार्य अकलङ्क देव (7 शती) ने ऐसे शुद्ध परमात्मा की वन्दना की है जो गुणों का निधान है और पूर्व निर्दोष है। वे लिखते हैं कि-

तं वन्दे साधुवन्द्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषद्विषन्तम्।

बुद्धं वा वरुद्धमानं शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा ॥6॥

अर्थात् मैं समस्त गुणों के सागर एवं समस्त दोष रूपी शत्रुओं को पराजित करने वाले तथा साधुओं के वन्दनीय परमात्मा की वन्दना करता हूँ जिसे बुद्ध, महावीर, कमलासन (ब्रह्मा), विष्णु या शिव कहा जाता है।

आचार्य हरिभद्र सूरि (8वीं शती) ने लिखा है कि -

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु।

युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्यपरिग्रहः ॥7॥

अर्थात् मेरा न हो महावीर स्वामी से कोई पक्षपात है और न ही कपिल आदि दार्शनिकों से कोई द्वेष है। युक्तियुक्त वचन जिसका भी हो उसे स्वीकार कर लेना चाहिये।

जैन धर्म की यह गुणग्राहकता ही धार्मिक असहिष्णुता की समस्या का एकमात्र समाधान है। इससे स्वयं को या स्वयं के धर्म को श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति पर विराम लगता है। जैन धर्म किसी भी प्रकार की हिंसा का समर्थन नहीं करता वह भले ही धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर ही क्यों न की जा रही हो। धार्मिक एवं साम्प्रदायिक उन्माद से उत्पन्न होने वाली हिंसा का जैनधर्म में स्पष्ट निषेध किया गया है।

धार्मिक अन्धविश्वासों, रूढ़ियों एवं अन्धपरम्पराओं की समस्या - समाज में अनेक परम्परायें और रूढ़ियाँ धर्म के नाम पर हजारों वर्षों से चली आ रही हैं- भले ही वे विश्वास और परम्परायें समाज एवं प्रकृति के लिये घातक ही क्यों न हों। अनेक अन्धविश्वासों और परम्पराओं ने धार्मिक रूप लेकर समाज में इतनी गहरी जड़ें जमा ली हैं कि इनके औचित्य पर चर्चा करना भी समाज में अपराधन माना जाता है।

समाधान- जैन धर्म में प्राचीन काल से ही आचार्यों ने ऐसी परम्पराओं और मान्यताओं का

पुरजोर विरोध किया है जो मानवता एवं प्रकृति के लिये हानिकारक और औचित्य विहीन हैं। ऐसी परम्पराओं और मान्यताओं को जैन धर्म में मूढ़ता कहा गया है।

आचार्य समन्तभद्र (3 शती) ने तीन प्रकार की मूढ़ताओं का निषेध किया है- लोक मूढ़ता, गुरु मूढ़ता एवं देव मूढ़ता।

आचार्य समन्तभद्र लोक मूढ़ता को प्रकाशित करते हुये कहते हैं कि-

आपगासागर स्नानमुच्चयः सिकताश्मनाम्।

गिरिपातोऽग्निपातश्च लोकमूढं निगद्यते ॥8॥

अर्थात् धर्म समझकर नदी और समुद्र में स्नान करना, बालू और पत्थरों का ढेर लगाना, पर्वत से गिरना और अग्नि में जलना आदि कार्य लोक मूढ़ता कहलाते हैं।

धर्म के नाम पर पशु बलि जैसे कृत्य भी जैन धर्म में निषिद्ध हैं। आचार्य अमृतचन्द्र सूरि (10वीं शती) ने लिखा है कि-

पूज्यं निमित्तं घाते छागादीनां न कोऽपि दोषोऽस्ति।

इति संप्रधार्य कार्यं नातिभये सत्त्वसंज्ञपनम् ॥9॥

अर्थात् पूज्य पुरुषों के निमित्त बकरा आदि का घात करने में कोई दोष नहीं है। ऐसा विचार नहीं करना चाहिये और पूज्य पुरुषों के लिये पशुघात नहीं करना चाहिये।

धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा और हिंसक परम्पराओं का विरोध करते हुये आचार्य अमृतचन्द्रसूरि लिखते हैं कि-

सूक्ष्मो भगवद्धर्मो धर्मार्थं हिंसने न दोषोऽस्ति।

इति धर्ममुग्धहृदयैर्न जातु भूत्वा शरीरिणो हिंस्याः ॥10॥

अर्थात् भगवान् का कहा हुआ धर्म बहुत सूक्ष्म है अतएव धर्म के निमित्त हिंसा करने में दोष नहीं है, ऐसा मानकर मूढ़ बनकर कभी भी शरीरधारी जीवों का नहीं मारना चाहिये।

गुरुमूढ़ता आज की एक बड़ी सामाजिक समस्या है। अनेक प्रकार के ढोंगी-पाखण्डी, अपराधी प्रवृत्ति के लोग छद्म वेश धारण करके टी.वी के माध्यम से अपना प्रचार-प्रसार करके लाखों लोगों की अंध श्रद्धा का लाभ लेकर उन्हें लूट रहे हैं। इससे समाज के पथ-प्रदर्शक सच्चे संत-महात्मा भी संदेह की दृष्टि से देखे जाने लगते हैं। इस प्रकार के ढोंगी-पाखण्डी गुरुओं से सचेत करते हुये आचार्य समन्तभद्र ने हजारों वर्ष पूर्व गुरु मूढ़ता छोड़ने का निर्देश करते हुये लिखा था कि-

सग्रन्थारम्भहिसानां संसारावर्तवर्तिनाम्।

पाषाण्डिनां पुरस्कारो ज्ञेयं पाषण्डिमोहनम् ॥11॥

अर्थात् परिग्रह, आरम्भ और हिंसा से सहित तथा संसार भ्रमण के कारणभूत कार्यों में लीन पाखण्डियों को बढ़ावा देना गुरु मूढ़ता है।

सच्चे संत-साधक समाज के पथप्रदर्शक और कल्याणकारक होते हैं। उनके उपदेशों से समाज सुव्यवस्थित होता है। ऐसे गुरुओं की पहचान बतलाते हुये आचार्य समन्तभद्र लिखते हैं कि-

विषयाशावशातीतो निशरम्भोऽपरिग्रहः ।

ज्ञान ध्यान तपोरक्तस्तपस्वी स प्रशस्यते ॥12॥

अर्थात् जो विषय भोगों की आशा से रहित हो, आरम्भ-परिग्रह से रहित हो और ज्ञान-ध्यान एवं तप में लीन रहते हों वह गुरु प्रशंसनीय हैं या पूजनीय हैं।

जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता की समस्या- समाज जातिगत ऊँच-मनुष्य की मनुष्य के प्रति अस्पृश्यता (छुआ छूत) की दूषित मनोवृत्ति से ग्रसित है। यह एक पुरातन काल से चली आ रही गंभीर समस्या है।

समाधान- जैनधर्म पूर्व जन्म कृत कर्म आधारित जाति और वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते हुये भी ऊँच-नीच की भावना एवं अस्पृश्यता की दूषित मनोवृत्ति को प्रश्रय नहीं देता है। जैन धर्म शक्ति रूप से प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति को स्वीकार करता है और मनुष्य को जाति के स्थान पर उसके सत्कर्मों एवं गुणों के आधार पर श्रेष्ठ मानने का पक्षधर है। आचार्य समन्तभद्र जाति और गोत्र के अहङ्कार को मद कहते हुये मनुष्य के लिये घातक बतलाते हुए इन्हें पूर्णतः छोड़ने का स्पष्ट विधान करते हैं। जैनाचार्य रविषेण (7वीं शती) ने लिखा है कि-

न जाति गर्हिता कश्चिद गुणा कल्याण कारणम् ।

व्रतस्थमापि चाण्डालं तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥14॥

अर्थात् कोई जाति निन्दनीय नहीं है, गुण कल्याण का कारण है। चाण्डाल भी व्रत धारण करने पर ब्राह्मण बन सकता है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा है कि-

सम्यग्दर्शनसम्पन्नमपि मातङ्गदेहजम् ।

देवा देवं विदुर्भस्मगूढाङ्गारान्तरौजसम् ॥15॥

अर्थात् गणधरादिक देव, चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुये जीव को भी सम्यग्दर्शन से युक्त होने पर राख से ढके अंगारे की अग्नि के समान तेज से युक्त मानकर आदरणीय कहते हैं।

इस प्रकार जैन धर्म ने समाज को जातिगत भेदभाव से मुक्त करने में महनीय योगदान किया है।

मद्यपान आदि नशा की समस्या- नशा की समस्या समाज की गंभीर समस्या है। देश की युवा पीढ़ी नशे के कुचक्र में जकड़ती जा रही है। शराब, हेरोईन, कोकीन, अफीम, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों के सेवन से समाज के स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति और नैतिकता का तीव्र गति से पतन हो रहा है। समाज में अपराध बढ़ते जा रहे हैं।

समाधान- जैनाचार्यों ने जैनधर्म में शराब, मांस एवं शहद के सेवन को पूर्णतः निषिद्ध किया है। शराब को निन्द्य बतलाते हुए आचार्य अमृतचन्द्रसूरि ने लिखा है कि-

मद्यं मोहयति मनो मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्मम् ।

विस्तृत धर्मा जीवो हिंसाम विशङ्क माचरति ॥16॥

अर्थात् शराब या मदिरा मन को मोहित करती है और मोहितचित्त व्यक्ति धर्म को भूल जाता है तथा धर्म को भूला व्यक्ति निडर होकर हिंसा आदि पाप या अपराध करता है।

जैन समाज में वही व्यक्ति जैन माना जाता है जो मदिरा, मांस एवं मधु का सेवन नहीं करता है। जैन धर्म ने समाज को व्यसन मुक्त होने का संदेश देते हुये सप्त व्यसन के त्याग का सिद्धान्त दिया है।

जैन धर्म में जुआ खेलना, मांस खाना, मद्यपान, वेश्या सेवन, शिकार, चोरी एवं परस्त्रियों से सम्बन्ध बनाना सप्त व्यसन हैं। इन व्यसनो से समाज का नैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पतन होता है। इसलिये जैन धर्म में ये सप्त व्यसन पूर्णतः वर्जित हैं।

गरीबी या निर्धनता की समस्या- निर्धनता समाज की एक विकराल समस्या है। सरकार के अनेक प्रयासों एवं अनेक प्रकार की आर्थिक योजनाओं के क्रियान्वयन के बाद भी समाज से निर्धनता समाप्त नहीं हो रही है। निर्धनता एवं आर्थिक विषमता के कारण समाज में चोरी, आत्महत्या की प्रवृत्ति एवं भुखमरी जैसी अनेक अन्य समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं।

समाधान :- भगवान महावीर ने समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता एवं दास प्रथा जैसी समस्याओं को देखकर इनके निदान हेतु अपरिग्रह का सिद्धान्त दिया था। अपरिग्रह का सिद्धान्त मनुष्य को अपनी इच्छाएँ सीमित करके आवश्यक वस्तुओं को ग्रहण करने का संदेश देता है। इससे अनावश्यक धन संचय करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगता है जिससे समाज में समाजवाद की स्थापना होती है। जैन धर्म में गृहस्थों के इस व्रत को परिग्रह परिमाण अणुव्रत कहा जाता है।

आचार्य समन्तभद्र ने इस व्रत पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि -

धनधान्यादिग्रन्थं परिमाय ततोऽधिकेषु निःस्पृहता ।

परिमतिपरिग्रहः स्यादिच्छा परिमाणनामापि ॥17॥

अर्थात् धन-धान्यादि का परिग्रह सीमित करके उससे अधिक में इच्छा न रखना परिमित परिग्रह अथवा इच्छा परिमाण नामक अणुव्रत होता है।

जैन धर्म का परिग्रह परिमाण व्रत मनुष्य को अल्प वस्तुओं एवं धन के संचय की स्वतः प्रेरणा देता है। जो कार्य कानून के द्वारा संभव नहीं है वह कार्य इससे संभव हो जाता है। जब धन एवं संसाधनों के असीम संचय की मनोवृत्ति घटने लगती है तब समाज में इनका समान वितरण होने लगता है और इससे समाज में निर्धनता की समस्या के समाधान में सहायता मिलती है।

भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता की समस्या- वर्तमान में समाज की यह एक प्रमुख समस्या है। मनुष्य अपनी असीमित लालच के कारण कानून के नियमों का उल्लंघन करके करअपवंचन एवं उत्कोच (रिश्वत) जैसे अनैतिक कार्यों में संलिप्त हो जाता है। इससे जहाँ एक ओर मनुष्य का नैतिक पतन होता है वहीं दूसरी ओर सरकार के द्वारा देश के विकास के लिये चलायी जाने वाली विभिन्न योजनाएँ भी असफल हो जाती हैं। जिससे समाज में अव्यवस्था फैल जाती है।

समाधान- जैन धर्म में चोरी को प्रमुख पाप मानने के साथ-साथ सरकार द्वारा प्रवर्तित नियमों का अनुपालन भी धर्म का अङ्ग माना गया है। महान् जैनाचार्य उमास्वामी ने लिखा है कि-
स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरूद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमनोन्यान प्रतिरूपक व्यवहाराः । 18

अर्थात् स्तेनप्रयोग, स्तेन आहृतादान, विरूद्धराज्यातिक्रम, हीनाधिक मानोन्मान और प्रतिरूपक व्यवहार अचौर्यव्रत के पालन में लगने वाले अतिचार या दोष हैं। राज्यों में किसी प्रकार का विरोध होने पर मर्यादा का न पालना विरूद्ध राज्यातिक्रम है। जैन धर्म में धार्मिक दृष्टि के साथ-साथ सामाजिक दृष्टि से भी अचौर्यव्रत के अंतर्गत शासन के नियमों के अनुपालन पर विशेष बल दिया जाता है।

स्त्री उत्पीड़न एवं यौन हिंसा की समस्या- यह समाज की एक ऐसी समस्या है जिसमें समाज का वीभत्स रूप उजागर होने लगता है। घरेलू हिंसा, बलात्कार एवं छेड़छाड़ जैसी समस्याओं के कारण समाज की समग्र प्रगति शून्य प्रतीत होती है। आज की शिक्षित समाज का यह सबसे बड़ा कलंक है।

समाधान- जैन धर्म सदैव स्त्रियों के अधिकारों एवं सम्मान का पक्षधर रहा है। जैनधर्म में स्त्रियों को भी दीक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। स्त्रियों के सम्मान की रक्षा के लिये और उनके शोषण के विरुद्ध जैन समाज में अनेक सामाजिक नियमों का पालन बड़ी ही दृढ़ता से किया जाता है।

कन्या भ्रूण हत्या की समस्या- पितृसत्तात्मक समाज में कन्या भ्रूण हत्या एक घिनौनी समस्या है। बेटे की चाह में बेटियों की गर्भ में ही हत्या कर देना एक महापाप है। इससे समाज में स्त्री-पुरुष के लिङ्गानुपात में भी असमानता बढ़ती जा रही है। जिससे समाज के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा हो गया है।

समाधान- जैन धर्म में स्त्री-पुरुष के मध्य भेदभाव की दृष्टि नहीं रखी गयी है एवं भ्रूण हत्या को महान् हिंसा पाप कहकर इसकी घोर निन्दा की गयी है।

स्त्री-शिक्षा की समस्या- भारतीय परिदृश्य में स्त्री-शिक्षा भी एक बड़ी समस्या है। आज भी अनेक समाजों में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से वंचित रखा गया है। जैन समाज में यद्यपि साक्षरता की समस्या व्यापक नहीं है, परन्तु फिर भी इसके समाधान विचारणीय हैं।

समाधान- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने अपने पुत्रों को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अपनी ब्राह्मी एवं सुन्दरी नामक दो पुत्रियों को क्रमशः अक्षर विद्या एवं अङ्गविद्या प्रदान की थी। इससे यह स्पष्ट है कि जैनधर्म स्त्री शिक्षा का प्रचलन आदि काल से ही रहा है। यही कारण है कि आज भारत की विभिन्न समाजों में जैन समाज की साक्षरता दर सर्वाधिक है।

वैचारिक मतभेद एवं संवादहीनता की समस्या- वर्तमान में व्यक्ति एकाकी समस्या से ग्रसित होता जा रहा है और जो संवाद हो रहा है उसमें एकाकी दृष्टि रहती है। व्यक्ति स्वयं के पक्ष को ही सत्य मानता है और दूसरे के पक्ष पर विचार भी नहीं करना चाहता। इससे समाज में विघटन की स्थिति निर्मित हो रही है।

समाधान- इस समस्या का समाधान हमें जैन धर्म के स्याद्वाद सिद्धान्त से प्राप्त होता है। स्याद्वाद सिद्धान्त हमें यह दृष्टि प्रदान करता है कि कौन सा कथन किस दृष्टि से सही है। सत्य के विविध पक्ष होते हैं। एक बार में हम किसी एक पक्ष को ही जान सकते हैं। स्याद्वाद के द्वारा हम सत्य के विविध पक्षों में से किसी एक पक्ष को मुख्य बनाते हैं, परन्तु अन्य पक्षों का निषेधन करके उन्हें गौण कर देते हैं। यह सिद्धान्त हमें दूसरे को सुनने और समझने की दृष्टि प्रदान करता है।

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की समस्या- आज अधिकांश लोग शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से ग्रसित हैं।

समाधान- जैन धर्म में जीवन चर्या इस प्रकार से विवेचित है कि उसके अनुपालन से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न ही नहीं होती। जैन धर्म में रात्रि भोजन

त्याग, अनछने जल का त्याग एवं अमर्यादित और अभक्ष्य भोजन सामग्री का त्याग अनिवार्य रूप से किया जाता है। इन नियमों के अनुपालन से शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा स्वाभाविक रूप से हो जाती है। इसके साथ ही जैन धर्म में क्रोध, मान, मायाचार एवं लोभ आदि कषायों के निग्रह पर भी विशेष बल दिया जाता है जिससे मानसिक तनाव जैसी बीमारियों का भी सहज समाधान हो जाता है।

उपसंहार- जैन धर्म की धुरी अहिंसा है। अहिंसा की भावना में व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर सृष्टि के समाष्टि हित के संरक्षण के लिये पुरुषार्थ किया जाता है। इस कारण जैन धर्म में उन सभी समस्याओं के समाधान के लिये प्रयास किये गये हैं जिनका सम्बन्ध समाज से रहा है। जैनधर्म प्राणिमात्र के हित-संरक्षण पर बल देता है। जब हमारा ध्यान समग्र सृष्टि के व्यापक संरक्षण पर रहता है। तब सामाजिक समस्याओं के समाधान तो स्वयंमेव ही प्राप्त होने लगता है।

वर्तमान समय में सबसे बड़ी आवश्यकता नियमों के अनुपालन की है। जिन नियमों का निर्माण मान के कल्याण के लिये हुआ है उन पर मात्र चर्चा करने से सामाजिक समस्याओं के समाधान प्राप्त नहीं हो सकते हैं। जैन धर्म के सनातन संस्कारों एवं परम्पराओं के निर्वहन से ही समस्याओं के सार्थ समाधान प्राप्त हो सकते हैं।

संदर्भसूची-

- | | |
|---|------------------------------------|
| 1. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-17 | 2. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-26 |
| 3. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय-5, सूत्र-21- | 4. यशस्तिलकचम्पू, 8/34 |
| 5. समाधि शतक-2 | 6. अकलंक स्तोत्र-9 |
| 7. लोकतत्त्व निर्णय, 38 | 8. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-2 |
| 9. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्लोक-81 | 10. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्लोक-79 |
| 11. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-24 | 12. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-10 |
| 13. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-25 | 14. पद्मपुराण-आचार्य रविषेण |
| 15. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-28 | 16. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पद्य-62 |
| 17. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक-61 | 18. तत्त्वार्थसूत्र, 7/27 |

प्राकृत भाषा शिक्षण शिविर दिनांक 17 फरवरी से 24 फरवरी 2019

श्रवणबेलगोला प्राकृत पत्राचार कोर्स प्रथमा, मध्यमा, विशारद परीक्षा हेतु शिक्षण-शिविर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर पर लगाया जा रहा है। जैनों की मूलभाषा प्राकृत है। अतः प्राकृत शिक्षण शिविर में भाग लेकर प्राकृत भाषा पढ़ना सीखें एवं पत्राचार परीक्षा पास करें।

सम्पर्क सूत्र :- पं. सुरेश जैन मारौरा इन्दौर मो. 6260964818, ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर मो. 8989505108



आत्म स्वरूप प्रस्तोता: स्वरूप संबोधन

आचार्य अकलंक देव को जैन न्याय दर्शन का पितामह कहा गया। आप लघुहव्व नृपति के ज्येष्ठ पुत्र थे। अपने राजा हिमशीतल की सभा में बौद्ध साधुओं तथा तारा देवी से शास्त्रार्थ किया एवं शास्त्रार्थ में अपने सटीक तर्कों एवं प्रमाणों के आधार पर सफलता सुनिश्चित की एवं जैन धर्म की पताका की आर्यावर्त में गगन चुम्बी बनाया। पूज्य आचार्य श्री का नाम अकलंक था भट्ट उनकी उपाधि थी आपके सृजित ग्रंथ राजवार्तिक, अष्टशती, लघीयस्त्रयी, प्रमाण संग्रह, न्याय विनिश्चय, सिद्धि विनिश्चय स्वरूप संबोधन, अकलंकाष्टक जैसे महान शास्त्र हैं। जैन तर्कविद्या के अद्वितीय विद्वान् थे।

स्वरूप संबोधन ग्रंथ का मंगलाचरण में आचार्य अकलंक देव कहते हैं। जो कर्मों से मुक्त एवं सम्यग्ज्ञान से अमुक्त है अक्षय परमात्मा ज्ञान की मूर्ति उनके लिये मैं नमस्कार करता हूँ।

स्वरूप संबोधन में आत्मतत्त्व

आत्म के अस्तित्व और आत्मा का लक्षण प्रस्तुत ग्रंथ में बताया गया है आत्म से ज्ञान की भिन्नता अभिन्नता बताते हुये, आत्मा को चेतन अचेतन रूप सिद्ध किया गया है। द्रव्य प्रदेश और ज्ञान गुण की अपेक्षा आत्मा का निर्धारण किया गया है आत्मा को एक अनेक रूप वा दोनों रूप

कहा गया है। आत्मा को सर्वथा व्यतव्य और अवतव्य नहीं माना है। विधि निषेधात्मक मूर्तिक और अमूर्तिक दोनों रूप स्वीकार किया गया है। अनेक धर्म रूप आत्मा को माना है। आत्मा को स्वयं कर्ता भोक्ता भ्रमणशील और मुक्त अंगीकार किया गया है। आत्मा को संसार में छूटने के अंतरंग उपाय बताये हैं। तथा बहिरंग उपायों का स्पष्टीकरण किया है।

शुद्धात्म की भावना की आवश्यकता और महत्व बताया है। तथा तत्त्व ज्ञानी कैसा होता है यह भी बताया है। हेय क्या है उपादेय क्या है तीव्रतृष्णा का त्याग करने की प्रेरणा देते हुये संपूर्ण इच्छाओं के त्याग का नाम ही मोक्ष कहा है। स्वरूपोपलब्धि का उपाय माध्ययस्थ भाव कहा है। स्वाधीन सुख के लिये प्रत्यत्न करने की प्रेरणा दी है। शुभोपयोग से शुद्धोपयोग क्रम स्पष्ट किया है। षट्कारकमय आत्म द्रव्य का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत ग्रंथ के अंत में स्वाध्याय का फल परमात्मा की सम्पदा कहा है।

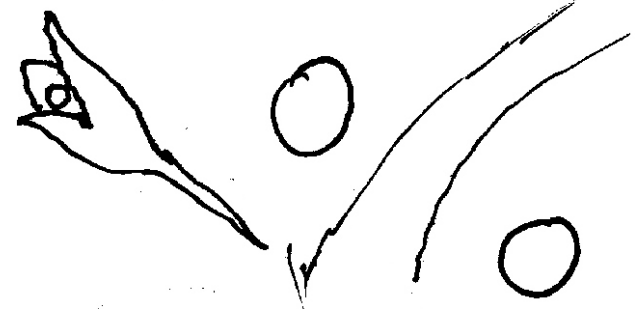
स्वरूप संबोधन आत्म स्वरूप का निर्धारण करने का श्रेष्ठतम प्रयास है। आत्मा के अनेक विरुद्ध गुण एक स्थान पर रहते हैं। स्पष्ट किया है। ग्रंथ की विषय सामग्री रोचक सुबोध है।

इन सभी ग्रंथों का अनुवाद एलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज ने किया हैं।
जो पंचबालयति मंदिर संस्कार सागर कार्यालय में उपलब्ध है।

कविता

फूल की व्यथा

* सुभाषचंद्र सरल (अशोकनगर) म.प्र. *



एक फूल ने पो फटते ही, सुबह सबेरे, ठेठ भुन्सारे, उन्हें तोड़ने आये
माथे चन्दन का तिलक लगाये एक ईश्वर से कहा,
आइये, पर हमें तोड़ने से पहिले, एक बात बताइये।
आप ज्ञानी हैं, धर्मनिष्ठ हैं बस इतना मुझे समझाईये
आप रोज आते हैं हमें रोज रोज तोड़कर, भगवान के चरणों में चढ़ाते हैं
हम पूरे खिल ही नहीं पाते, देख ही नहीं पाते, संसार की सुन्दरता,
निहार ही नहीं पाते, संसार की चालढाल,
क्या हम संसार की चालढाल देखने के सुन्दरता निहारने के हकदार नहीं हैं।
आप रोज रोज, सुबह सबेरे आते हैं हमारी व्यथा जाने बगैर,
मृत्यु की पीड़ा पहिचाने बगैर, तोड़कर ले जाते हैं।
यौवनावस्था में हमें, संसार की नश्वरता दिखलाते हैं।
कृपया आज मान जाईये बस इतना रहम खाईये
यौवनावस्था में हमें तोड़कर पाप मत कमाईये।
भगवान की पूजा की, तीव्र उत्कंठा है
समर्पण का भाव है तो आज, बस आज, खुद ही चढ़ जाईये
भगवान के चरणों में, निष्काम भाव से।
या अपनी कोई प्रिय, या मूल्यवान वस्तु चढ़ाईये
भगवान के चरणों में, त्याग के भाव से।
भगवान की पूजा के नाम पर, खुद को बचाते,
दूसरों का जीवन नशाते, पाप ही कमाओगे।
अगले जनम में, फूल बनकर आओगे
हमारी तरह, अपूर्ण जिन्दगी जीने के लिये।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

जनवरी 2019

ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

प्रथम-

जिन्हा रथ पर हो सवार

राह की दूरी नहीं मालूम चलती कभी

तत्त्व चर्चा करते करते

मंजिल करीब हो जाती सभी

उलझे सुलझे सवाल सरल हो जाते हैं ऐसे

गुरु शिष्य के बीच में ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

द्वितीय-

मिलन हुआ जब गुरु शिष्य में तो कुछ चर्चा होगी

धर्म समाज ज्ञान विज्ञान की कोई समस्या होगी

चलते चलते बात चली गम्भीर कुछ ऐसे

तत्त्व समझने ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

श्रीमति निकिता जैन (ग्वालियर)

तृतीय-

देव इन्द्र जब स्वर्ग में करते सत्य तत्त्व चर्चा

मुनि जन भी तो करते चर्चा अर्चा

आगम निगम रहस्य कुछ ऐसे

ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

श्रीमति रूचि जैन (सागर)

प्रोत्साहन

सीता को धैर्य बंधाया, हनुमान ने लंका में।

मोदी ने शीश झुकाया, पावन गुरु के चरणों में।

ये मन कभी न धकता, वर्षों-पल में ढल जायें।

गुरुदेव की महिमा गाने के, ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे

ब्र. वीणा जैन (जरूवाखेड़ा) सागर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा

दिसम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति अनीता जैन (ललितपुर) उ.प्र.

द्वितीय : श्रीमति रजनी जैन (अहमदाबाद)

तृतीय : श्रीमति कमला जैन (खरगोन) म.प्र.

वर्ग पहेली क्र. 225

दिसम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति रूचि जैन (सागर) म.प्र.

द्वितीय : श्री अखिलेश जैन (ललितपुर) उ.प्र.

तृतीय : श्रीमति इन्दु बड़जात्या (बाकानेर) म.प्र.

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जनवरी 2019 का हल

- | | | |
|--------------|---------------------|--------------------|
| 01. प्रवाहित | 18. श्रद्धा | 35. सम्यग्ज्ञान |
| 02. भक्ति | 19. समर्पण | 36. मन |
| 03. स्वयमेव | 20. आदर्श | 37. कल्याण |
| 04. मेढक | 21. स्याद्वाद | 38. वस्तु |
| 05. बुद्धि | 22. 'ही' | 39. सत्य |
| 06. विश्वास | 23. समीचीन | 40. प्रामाणिक |
| 07. भक्ति | 24. भारतीय संस्कृति | 41. 934 |
| 08. श्रद्धा | 25. अनेकान्त | 42. 972 |
| 09. श्रद्धा | 26. विषमता | 43. 1018 |
| 10. स्वयं | 27. अनेकान्त | 44. 391 |
| 11. हृदय | 28. समता | 45. 262 |
| 12. सत्तर | 29. सुख | 46. 20 |
| 13. भवसागर | 30. झगडालू | 47. 57 फुट |
| 14. विश्वास | 31. निश्चय | 48. षट्खडागम |
| 15. अहंकार | 32. दिल | 49. 24 नवम्बर 2018 |
| 16. हृदय | 33. प्रभावत | 50. एलियन |
| 17. आचरण | 34. एकाग्रता | |



पुराण प्रेरणा

गुरु की देन

आलोके जिनभानुना विरचिते
ध्वान्तस्य वाक्व स्थितिः ? ॥

बुद्धिमान मनुष्य सब समय सर्वत्र व्याप्त
रहने वाले, जिनेन्द्र भगवान् के वचनरूपी
उत्तम दीपकों की सामर्थ्य से सूर्य और
चन्द्रमा के अगोचर अधोलोक के
अंधकार को नष्टकर वस्तु के यथार्थ
स्वरूप को देखते हुये प्रभुत्व को प्राप्त होते
हैं इसमें क्या आश्चर्य है ?

क्योंकि तीन लोक में जिनेन्द्र रूपी
सूर्य के द्वारा प्रकाश उत्पन्न होने पर
अन्धकार का सद्भाव कहाँ रह सकता है।

मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥

उसी समय जिसका आसन कम्पायमान
हुआ था ऐसा धरणेन्द्र अवधिज्ञान से यह
समाचार जान जिनेन्द्र की भक्ति पूर्वक
वहाँ आया, सो ठीक ही है। क्योंकि मौन
सब कार्यों को सिद्ध कराने वाला है।

किम् न स्याद् गुरुसेवया ॥

और जो विद्याधरों का निवासभूत विजयाधर
नाम का पर्वत है वह भी उन दोनों ने धरणेन्द्र
से प्राप्त किया सो ठीक ही है क्योंकि गुरुसेवा
से क्या नहीं होता है।

विद्यालाभो गुरोर्वशात् ॥

दिव्य रूप को धारण करने वाले उस धरणेन्द्र
ने उन दोनों भाईयों को अपने भाईयों के
समान विश्वास दिलाकर महाविद्या प्रदान
की सो ठीक ही है क्योंकि विद्या की प्राप्ति
गुरु से ही होती है। (आदि पुराण से)

माथा
पच्चीनिम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् श् अ क् क नि

2. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ भ् न् त् र् अ नि

3. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ र् अ ल् स अ नि

4. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ र् क् र् आ अ नि

5. इ उ म् न् श् र् ई ग् आ स् अ र् आ म् र् न् अ नि

परिणाम :

जनवरी 2019: (1) मुनि श्री निरंजनसागर जी (2) मुनि श्री निर्ग्रन्थसागर जी
(3) मुनि श्री निश्चिन्तसागर जी (4) मुनि श्री निराश्रव सागर जी (5) मुनि श्री निल्लेपसागर जी

नैनोटेक्नोलॉजी में

अवसर

करियर



मास्टर कोर्स कर बना सकते हैं नैनोटेक्नोलॉजी में कैरियर

साइंस में हुये महत्वपूर्ण बदलावों में से एक नैनोटेक्नोलॉजी का विकास भी है। रिसर्च आधारित इस क्षेत्र की वजह से विभिन्न क्षेत्रों में कई बड़े प्रयोग सफल हुये हैं वर्तमान में कृषि उत्पादन बढ़ाने से लेकर तकनीक के क्षेत्र में नैनोटेक्नोलॉजी का उपयोग होता है अलग अलग सेक्टर की कंपियों को नैनोटेक्नोलॉजी या नैनोसाइंस के प्रोफेशनल की जरूरत होती है।

क्या है नैनोटेक्नोलॉजी-

नैनोटेक्नोलॉजी अप्लाइड साइंस है जिसमे 100 नैनीमीटर से छोटे पार्टिकल्स पर भी किया जाता है। नैनोटेक्नोलॉजी में काम आने वाले पदार्थों को जैनो- मैटीरियल्स कहा जाता है। इसके अलावा इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी वस्त्र उद्योग इलेक्ट्रानिक्स और दूर संचार घरेलू उपकरण कागज और पैकिंग उद्योग आहार वैज्ञानिक उपकरण चिकित्सा और स्वास्थ्य खेल जगत ऑटो मोबाइल्स सिम्योरिटी अंतरिक्ष विज्ञान कॉस्मोटिक्स अनुसंधान और विकास जैसे क्षेत्र में इसका उपयोग होता है।

कैसे मिलेगा प्रवेश-

अधिकतर संस्थानों में टेक्नोलॉजी एम.टेक. या एम.एस.सी कोर्स संचालित किये जाते हैं 50 फीसदी अंको के साथ कैमिस्ट्री मैथ्स फिजिक्स लाइफ साइंस से संबंधित बैचलर कोर्स करने वाले छात्र नैनोसाइंस एम.एस.सी कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं।

वही एम.टेक. कोर्स में प्रवेश के लिये संबंधित स्ट्रीम से बी.टेक. या एम.एस. सी डिग्री जरूरी है।

कहां से करें कोर्स-

जे.एन. यू. दिल्ली - www.jnu.ac.in

आई.आई. एस. बेंगलुरु - www.iisc.ac.in

एन. आई. टी कुरुक्षेत्र - www.nitkkr.ac.in

एम. ए. एन. आई. टी. भोपाल - www.mentic.ac.in जरूरी स्किल- एनालिटिकल स्किल- मैथ मेटिकल स्किल, साइंटिफिक हेम्परामेंट, रिसर्च वर्क

कहां कर सकते हैं जॉब-

नैनोटेक्नोलॉजी की पढ़ाई करने वाले छात्र फार्मास्युटिकल इंडस्ट्री इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एनर्जी केमिकल्स आदि क्षेत्रों में जॉब कर सकते हैं नैनो मेडिसन बायोईंफॉर्मेटिक्स स्टेम सेल्स डेवलपमेंट के साथ-साथ इन प्रोफेशनल के लिये एग्रीकल्चर इंडस्ट्री एनवायरनमेंट इंडस्ट्री फूड एण्ड बेवरेजेस जैनेटिक्स और फोरिसिक सेक्टर में जॉब के अवसर होते हैं।

क्या होगा सैलरी पैकेज-

नैनोटेक्नोलॉजी से मास्टर डिग्री कर चुके प्रोफेशनल को शुरुआत में ही 3 से 4 लाख रुपये सालाना का औसत पैकेज मिलने की संभावना है अनुभव के बाद 6-12 लाख रुपये सालाना तक सैलरी मिल सकती है।

दुनिया भर की बातें



■ 1 दिसम्बर

- अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज एच डब्ल्यू बुश का निधन हुआ वे 94 वर्ष के थे।

- अमेरिका के अलास्का प्रांत में 70 तीव्रता से भूकम्प आया।

- पुलिस से दुर्व्यवहार गाली गालौज के मामले में उज्जैन के सांसद चिंतामणि मालवीया पर एफ.आई. आर दर्ज हुई।

■ 2 दिसम्बर

- सुनील अरोड़ा ने नये मुख्य चुनाव युक्त का पद सम्हाला।

- महाराष्ट्र सरकार को शिर्डी साईं ट्रस्ट ने नहर बनाने के लिये 500 करोड़ रुपये दिये।

- मैक्सिको में अमेरिकी दूता वास अज्ञात लोगों ने ग्रेनेड से हमला किया।

■ 3 दिसम्बर

- बुलंद शहर : जिले में गौ हत्या मामले में भीड़ ने बलवा किया पुलिस इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी। 1 युवक सुमित की मौत हुई।

- पंजाब के नवजोत सिंद्धू के विरुद्ध 18 मंत्रियों ने मोर्चा खोला उनसे इस्तीफा मांगा मामले उनके पाकिस्तान जाने से गर्माया।

- श्रीनगर : सुरक्षाबलों ने कश्मीर में जैशए मोहम्मद के 2 माडयूल ध्वस्त किये 10 आतंकियों को गिरफ्तार किया।

■ 4 दिसम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने नेशनल हेराल्ड केस से जुड़े आयकर मामले राहुल गांधी और सोनिया गांधी को राहत नहीं दी। जाँच जारी रखने की इजाजत आयकर विभाग को दी।

- हेलीकाप्टर घोटाले के बिचौलिये ब्रिटिश नागरिक क्रिश्चियन मिशेल को दुबई से भारत प्रत्यार्पित किया गया।

- श्योपुर (म.प्र.) : थाने के सामने अध्यक्ष दौलतराम गुप्ता पर सी.एम. ओ ताराचंद धुलिया सहित कर्मचारियों ने मारपीट की।

■ 5 दिसम्बर

- शराब कारोबारी विजय माल्या ने 100% कर्मलौटाने का आश्वासन ट्वीट करके दिया।

- बेंगलुरु: देश का सबसे वजनी बड़ा जी सैट 11 शक्तिशाली उपग्रह फ्रेंच के गुयाना स्पेस सेंटर से लॉन्च हुआ।

- कोयला ब्लाक आवंटन घोटाले में दिल्ली एक अदालत ने पूर्व कोयला सचिव एच.सी. गुप्ता सहित 3 नौकर शाहों को 33 साल की सजा सुनाई।

■ 6 दिसम्बर

- भाजपा सांसद साध्वी सावित्री बाई फुले ने पार्टी से इस्तीफा दिया।

- कलकत्ता हाईकोर्ट ने पश्चिम बंगाल में रथयात्रा निकालने की अनुमति भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को नहीं दी।

- सुप्रीम कोर्ट ने पिछले 5 सालों में सड़कों के गड्ढों के कारण हुई 14926 मौतों को वर्दास्त के बाहर बताया।

■ 7 दिसम्बर

- नई दिल्ली : नये मुख्य आर्थिक सलाहकार के रूप में सरकार ने कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यन को नियुक्त किया।

- दक्षिण कोरिया के खुफिया प्रमुख जनरल ली जाए-सू ने खुद कुशी की।

- संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एंटोनियो गुतेरस ने भारतीय समाज सुधारक हंसा जीवराज मेहता की सराहना की।

■ 8 दिसम्बर

- आस्ट्रेलिया की एक अदालत ने 28 साल के रिफीईयान स्वान को कंगारू हत्या के मामले में 5 माह के लिये जेल भेजा।

- पुणे : जिले के एक गांव में उल्लू महोत्सव मनाया गया वह आयोजन अंधविश्वास दूर के लिये हुआ।

- जम्मूकश्मीर के पुंछ जिले में बस खाई में गिरी 13 लोगों की मौत हुई 17 घायल हुये।

■ 9 दिसम्बर

- मिस्टर सुपर नेशनल 2018 का खिताब गोवा के प्रथमेश मौलिंगकर ने जीतकर इतिहास रचा।

- जम्मू कश्मीर में पुलिस ने हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकी रियाज अहमद को गिरफ्तार किया।

- भारत-बांग्लादेश के ठाकुर गांव की सीमा पर हजारों लोग मिले।

■ 10 दिसम्बर

- केन्द्र सरकार से तमातमी के बीच रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने गवर्नर उर्जित पटेल ने इस्तीफा दिया।

- राष्ट्र लोक समता पार्टी के अध्यक्ष केन्द्रीय मंत्री उपेन्द्र कुशवाह ने मंत्रीमंडल से इस्तीफा दिया।

- भारतीय बैंकर्स के साथ धोखाधड़ी करने वाले विजय माल्या को लंदन कोर्ट ने भारत प्रत्यार्पित करने को मंजूरी दी।

■ 11 दिसम्बर

- प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष सुरजीत भल्ला ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया।

- 5 राज्यों की विधानसभा चुनाव की मतगणना हुई राजस्थान छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने परचम फहराया। म.प्र. में भी बहुमत नहीं मिला।

- शोपियाँ : (जम्मूकश्मीर) आतंकियों ने घात लगाकर हमला किया 5 पुलिसकर्मी शहीद हुये।

■ 12 दिसम्बर

- मिजोरम के मुख्यमंत्री एम.एन.एफ. के नेता जोरा मथांगा बनें।

- भारतीय रिजर्व बैंक के नये गवर्नर शक्तिकांत दास को भाजपा के वरिष्ठ नेता स्वामी सुब्रमण्यम ने भ्रष्ट कहा।

- पहाड़ी प्रदेश हिमाचल के शिमला में बर्फवारी हुई दिन का पारा 8.2 तक गिरा।

■ 13 दिसम्बर

- श्रीलंका के सुप्रीम कोर्ट ने संसद को भंग करने के राष्ट्रपति के फैसले को असंवैधानिक करार दिया।

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थेरेसा में ने कंजर्वेटिव पार्टी का विश्वास मत जीता।

■ 14 दिसम्बर

- राफेल सौदे की अदालत निगरानी संबंधी सभी याचिकायें सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की पक्षपात के कोई सबूत नहीं मिले।

- अंग्रेजी के साहित्यकार अमिताभ घोष को 54वां 2018 का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

- चामराज नगर (कर्नाटक) प्रसाद खाने के बाद हनूर तालूका में 10 लोग मरे 80 लोग बीमार हुये।

■ 15 दिसम्बर

- श्रीनगर (जम्मूकश्मीर) पुलवामा में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में 3 आतंकी मरे 1 जवान शहीद हुआ अब तक 2018 में जम्मू

कश्मीर में 230 आतंकी मारे जा चुके हैं।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हत्या की साजिश रचने वाले लश्कर एतोयबा के आतंकी अब्दुल नईम उर्फ शेख समीर को फांसी की सजा 28 परगना की अदालत ने सुनाई।

- पाक की अदालत ने सबरजीत सिंह के हत्यारों को बरी किया।

■ 16 दिसम्बर

- भारतीय शटलर पीवी सिंधू ने बी. डब्ल्यू. एफ. वर्ल्ड टूर फाइनल्स का खिताब जीता।

- कर्नाटक के बगलकोट जिले के मुधोल में चीनी मिल में बॉयलर फटने से 6 मजदूर मरे।

- श्रीलंका प्रधानमंत्री रानिल विक्रम सिंघे 51 दिन बाद बहाल हुये।

■ 17 दिसम्बर

- म.प्र. में कमलनाथ और छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल ने तथा राजस्थान में अशोक गहलौत ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

- दिल्ली हाईकोर्ट ने कांग्रेस ने सज्जन कुमार को सिक्ख विरोधी दंगे में हत्याओं के मामलों में सुनाई।

- ग्वालियर : एयरफोन लगाकर गर्लफ्रेंड से बात करते करते बलवीर कुशवाह रेलवे ट्रेक पर पहुँचा ट्रेन से कटा मरा

■ 18 दिसम्बर

- देश की पहली महिला पार्टी लाँच हुई डॉ. श्वेता शेड्डी ने नेशनल वुमंस पार्टी लाँच की।

- नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री तुलसी गिरी का निधन हुआ वे 93 वर्ष के थे।

- केरल लव जिहाद के मामलों में सुर्खियों में रहे के.एम. अशोकन भाजपा में शामिल हुये।

■ 19 दिसम्बर

- इसरो ने जियो सिंक्रोनेस लाँच व्हीकल एफ 11 के जरिये जी-सैट 7 का सफल परिक्षण किया।

- इटारसी : पंजाब मेल में सफर कर रहे। पंकज कटारिया के बैग काटकर 1.85 लाख के सोने के आभूषण चोरी हुये।

■ 20 दिसम्बर

- भाजपा की प्रस्तावित पश्चिम बंगाल में गणतंत्र बचाओ यात्रा कलकत्ता हाईकोर्ट ने मंजूरी दी। ममता बनर्जी को यह झटका माना गया।

- लोक समाज पार्टी के अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाह महागठबंधन में शामिल हुये।

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने चीन के ऐतराज के बाद भी तिब्बत से जुड़े एक बिल पर हस्ताक्षर किये।

■ 21 दिसम्बर

- कांग्रेस को दिल्ली हाईकोर्ट ने एसोसियेटेड जर्नल्स की याचिका खारिज करते हुये 2 सप्ताह में हैरल्ड हाउस खाली करने का आदेश दिया।

- आसाराम बापू के मुख्य सहयोगी शरदचंद की सजा जोधपुर हाईकोर्ट में स्थगित कर दी।

- अमेरिका के रक्षामंत्री जिम मैटिस ने इस्तीफा दिया।

■ 22 दिसम्बर

- श्रीनगर : कश्मीर को भारत में गजवा-ए-हिन्द का दरवाजा बताने वाले आतंकी जाकिरमूसा के 6 साथ मुठभेड़ में ढेर।

- जी.एस.टी. आम आदमीयों कारोबारियों पर दो दर्जन वस्तुओं पर कम हुआ 18% से कम हुआ।

- कांग्रेस ने फ्रंट पर आकर लड़ाई शुरू की कमलनाथ ने व्यापम के दागी आई.ए.एस शमीम उद्दीन को अलीराजपुर का कलेक्टर बनाया।

■ 23 दिसम्बर

- मुम्बई : गोरेगांव पश्चिम में एक निर्माणाधीन इमारत गिरने से 3 लोग मरे 6 घायल हुये।

- इंडोनेशिया में ज्वालामुखी फटने से आई सुनामी में 222 लोगों की मौत हुई 800 से ज्यादा घायल हुये।

- रियाद: महिला अधिकारों के समर्थक

प्रिसंत लालबिन अब्दुल अजीज का निधन हुआ आपसउदी अरबराजपरिवार के वरिष्ठ सदस्य थे।

■ 24 दिसम्बर

- घने कोहरे के कारण रोहतक रेवाड़ी हाईवे पर 50 वाहन टकराये हादसे में 8 लोगों की मौत हुई।

- माकपा के पूर्व मंत्री निरूपम सेन का निधन हुआ वे 72 वर्ष के थे।

- पाकिस्तान के भ्रष्टाचार रोधी कोर्ट ने पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को फिर 6 साल के लिये जेल भेजा।

■ 25 नवम्बर

- म.प्र. में कमलनाथ के मंत्रीमण्डल में 28 विधायकों ने शपथ ली वे सभी मंत्री बने।

- चीन में मानव अधिकार कार्यकर्ता वांग कुआन झांग की पत्नी ली वेंजू को बीजिंग में नजर बंद किया।

- विदिशा के विधायक शशांक भार्गव के साथ किसी ठग ने बैंक ठगी की ओर उनके 20000 रुपये खाते से निकाल उनका ए टी एम नम्बर ले लिया।

■ 26 दिसम्बर

- पाकिस्तान पूर्व सांसद ने नेता सईद अलि रजा आबिदी की कराची स्थित निवास पर गोली मारकर हत्या कर दी।

- बीजिंग : जियातोंग युनिवर्सिटी की लैब में विस्फोट में तीन छात्रों की मौत हुई।

- उत्तर दक्षिण कोरिया ने दोनों देशों जोड़ने के लिये रेल सड़क संपर्क परियोजना की आधार शिला रखी।

■ 27 दिसम्बर

- लोकसभा में तीन तलाक विधेयक बहुमत से पारित हुआ।

- चीन में रूसी एस 400 मिसाइल प्रणाली का सफल परिक्षण किया।

- जबलपुर गोरखपुर इलाके में पिज्जा

खाने से एक ही परिवार के 6 सदस्यों की तबीयत बिगड़ी।

■ 28 दिसम्बर

- केन्द्र सरकार ने गगनयान प्रोजेक्ट लिये 10000 करोड़ रुपया स्वीकृत कर आवंटित किये।

- महाराष्ट्र में एण्टि नार्कोटिक्स सेल 1000 करोड़ के प्रतिबंधित ड्रम्स मुम्बई बकोल इलाके से जब्त किये।

- भूटान के प्रधानमंत्री लोटे शेरीग ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की।

■ 29 दिसम्बर

- खुजराहो पंचमढ़ी बैतूल में तापमान 1 डिग्री पहुँचा छतरपुर में 24 वर्ष का रिकार्ड टूटा।

- जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ जैश-ए. मोहम्मद के 5 आतंकी मारे गये।

- गंगटोक : नाथूला दर्रे में फंसे 2500 पर्यटकों को सेना ने बचाया।

■ 30 दिसम्बर

- प्रसिद्ध फिल्म कलाकर मृणाल सेन का निधन हुआ वे 95 वर्ष के थे। दादा साहेब फाल के सम्मान से नवाजे गये थे।

- भारत- आस्ट्रेलिया बॉक्सिंग डे टेस्ट क्रिकेट मैच में भारत ने आस्ट्रेलिया को 137 रन से हराया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अण्डमान निकोबार द्वीपगये ऐलुलयर जेल का उन्होंने निरीक्षण किया।

■ 31 दिसम्बर

- बांग्लादेश में हुये आम चुनाव के परिणाम आये प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी ने 300 में से 288 सीटें जीती विपक्षी गठबंधन का मात्र 7 सीटें मिली।

- पूर्व कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार ने कोर्ट में सरेंडर किया उन्हें मांडोली जेल भेजा।

- सुधीर भार्गव को मुख्य सूचना आयुक्त बनाया।

अच्छे वचन बोलने में कंजूसी क्यों ?

✽ आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माताजी ✽

पाप और पुण्य में पूछा जायें कि आपको क्या लगता है ? उत्तर मिलेगा पुण्य। आपसे पूछा जाये कि सुख चाहिए या दुख ? उत्तर मिलेगा सुख। संसार का कोई भी प्राणी दुख नहीं चाहता, सारी जिन्दगी सुख का प्रयत्न करता है। अब पूछा जाये कि 24 घंटे में आप पुण्य कार्य कितने करते हो और पाप कार्य कितना करते हो। उत्तर मिलेगा पुण्य तो कुछ घड़ी समय के लिये करते हैं और पाप बिना प्रयास के होते ही रहता है।

गेहूँ बोने पर गेहूँ मिलेगा, चावल बोने पर चावल इसी तरह पाप का फल दुख और पुण्य का फल सुख है। हम चाहते पुण्य है और करते पाप है। चाहते फूल और मिलते काटे हैं। जिसे चाहते हैं उसके लिये ही पुरुषार्थ करना चाहिये। करनी कुछ और है कथन कुछ और है।

परिवार को सुखी करने का एक और उपाय हम जो भी काम करते हैं उसका श्रेय दूसरों को दीजिये अपने को नहीं। यदि मैं करता हूँ ऐसा कहोगे तो ईर्ष्या, जलन और द्वेष की भावना पैदा होगी। दूसरों को श्रेय देने पर वह प्रसन्न होता है। हमारा अहंकार घटता है। लोगों का प्रेम हमारे प्रति बढ़ता है।

वचन का दरिद्रता किसी विद्वान ने कहा है कि हम किसी को गिफ्ट नहीं दे सकते कोई बात नहीं पर प्रेम को दो शब्द तो बोल सकते। गिफ्ट भूल सकता है पर प्रेम से बोला शब्द नहीं भूल सकता। किसी की प्रशंसा करना एक बहुत बड़ा गुण है जिससे स्वयं को और दूसरो को प्रसन्न रखा जा सकता है। निन्दा करने में मनुष्य एक सांस में दस बुराई कर लेता है। किन्तु प्रशंसा करने की कहो तो शब्द भी मुंह से नहीं निकलते। किसी की प्रशंसा करना उसे फूल देने समान है। और किसी की निन्दा करना उसे कांटा चुभाने के समान है। दो शब्द आपको मंत्र का काम करेंगे बहुत अच्छा बहुत बढ़िया किसी की न बुराई करो, न प्रशंसा। उसे मुस्कुरा कर बहुत अच्छा कहो वह प्रसन्न हो जायेगा।

गुरु द्रोणाचार्य ने दुर्योधन से कहा, जाओ गांव के लोगो को देखो वे कैसे हैं। दुर्योधन ने जाकर अहंकारी भाषा में बातचीत की तो लोगो ने उसे बुरा कह भगा दिया फिर गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से कहा कि जाओ तुम पता लगाओ कि लोग कैसे हैं। युधिष्ठिर ने मृदुवाणी अच्छी बातें की तो उसे बहुत सम्मान मिला, सबकी भोजन व्यवस्था हुई। लोग वही थे, हमारी वाणी ही हमें बुरा और अच्छा बनाती है। हम आज बड़े हैं तो अपने कारण छोटे हैं तो अपने कारण।

उच्च शिक्षा हेतु सत्पर्क करें

जो विद्यार्थी जैन दर्शन में P.H.D और D Lit कर रहे हैं या प्राकृत कोर्स पढ़ना चाहते हैं वह (श्रुत सिद्धान्त शोधपीठ) श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में संपर्क करें ! ऐसे छात्रों को साहित्य आदि की व्यवस्था है।

सम्पर्क करें : ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर मो. 8989505108, पं. सुरेश जैन मारौरा इन्दौर मो. 6260964818, वर्तमान में ब्र. समता दीदी इन्दौर मो. 8989845294 एवं श्रीमति अल्पना सुबोध जैन इन्दौर मो. 8819052830

श्रुत सिद्धान्त शोध पीठ इन्दौर से P.H.D कर रहे हैं। तथा 10 विद्यार्थी प्राकृत कोर्स श्रवणबेलगोला से कर रहे हैं।

इसे भी जानिये

भारत के प्रमुख नृत्य

असम	खेल, गोपाल, बिहू, कलिंगोपाल, महारास नटपूजा, बोईसाजू, खल चाँगबी होब्जानाई, नागानृत्य, राखल लीला, झुकुरा, बिछुआ
नागालैण्ड	केदोहोह, खैवा, लिम, नूरालिम, कुमीनागा, रेंगमा, चोंग
मणिपुर	बसंत रस, संकीर्तन, व्यांगटा, की तलम, थावल, चोन्गबी, महारास, राखल
प. बंगाल	जात्रा, कीर्तन, बाउल, जया, गम्भीरा, रामभेसे काठी
झारखण्ड	छाऊ, घुमकुड़िया, जदूर सरहूल, सोहराई, करमा, बैमा, लुझरी मूका, सेन्दरा, माधी, जट-जटनि, जाया, विदायत, कीर्तनियाँ, पँवरिया समाच-केवा, बखो बखाईन, विदेशिया, माधा, जातरा
उड़ीसा	संचार डंडानटा, छाऊ, पैका, अया, सवारी, गरूण वाहन, जदूर मुदारी
उत्तरप्रदेश	रासलीला, नौटंकी, झूला, दीवाली, कजरी, करन, चौरसिया, करमा, शीला
उत्तराखण्ड	पाण्डव, चौफुला, वादिवादिन, लाँग, भैला, चांचरी, छपेली, छोलिया, कुमायूँ
पंजाब हरियाणा	भांगड़ा, गिद्या, कीकली, धमान, घोड़ी नाँच, साँग
हिमाचल प्रदेश	दशहरा, छारबा, महाथू थाली, जद्दा, झैन्ती, छपेली, डांगी
राजस्थान	घूमर, जिन्दाद, घापाल, कठपुतली, बगरिया शंकरिया, पनिहारी, गणगौर
जम्मू कश्मीर	ख्याल, गोपिका, लीला, झूलन लीला, ढोला, मारू कृष्ण
गुजरात	राउफ, हिकत, चाकरी, भारवागीत
महाराष्ट्र	गरबा, डांडियारास, रासलीला, गणपति भजन, लास्या, दीपक, भवई, झकोलिया।
केरल	लेजम, दहिकला, लावनी, तमाशा, मौनी, बोहदा
कर्नाटक	ओणम थुलाल, कुडीयहम, कालीयट्टम कैकोट्टीकलाई, टप्पात्रिकाली, सारी, भद्रकवि, टप्पतिकालि
आंध्र प्रदेश	यक्षगान, वीरगास्से, कुजीता, कोडवास, कर्गा
तमिलनाडु	घण्टा मरदाला
मध्यप्रदेश	कोट्टायम, पिन्नल कोलाट्टम, कुम्भी, कावड़ी कारागम बसन्त, आत्म गोन्थो, गोडो, नवरानी, दिवासी चैत, रीना, शूआ टपाड़ी शैला, बिल्मा, हेरूदन्ना, हुलकी मांदरी, छेरिया डागला, पाली
छत्तीसगढ़	सुआ, करमा, डंडा या रहस, राउब, सरहुल बाट, नाचा, घासियाबाजा, पंथी
मेघालय	बांग्ला
मिजोरम	पखुपिला, चेरोकन
लक्षद्वीप	परिचा काली



दिशा बोध

जहर क्या है ?



01. जहर क्या है ?
उत्तर. गुरुओं का तिरस्कार करना सबसे बड़ा जहर है।
02. संसार में सार क्या है ?
उत्तर. मनुष्य जन्म पाकर तत्त्वदर्शी बन स्व पर का हित करना।
03. शराब के समान मोह उत्पन्न करने वाला कौन है ?
उत्तर. मोह उत्पन्न करने वाला स्नेह है।
04. जीवन में लुटेरे कौन है ?
उत्तर. पाँच इन्द्रिय के विषय ही जीवन में लुटेरे है।
05. संसार की लता क्या है ?
उत्तर. संसार की लता तृष्णा है।
06. मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कौन हैं ?
उत्तर. आलस्य/प्रमाद के कारण पुरुषार्थ नहीं करना सबसे बड़ा शत्रु है।
07. इस संसार में सबसे बड़ा भय किससे हैं ?
उत्तर. इस संसार में सबसे बड़ा भय मृत्यु से होता है।
08. अंधे से बड़ा अंधा कौन है ?
उत्तर. अन्धे से बड़ा अंधा रागी जीव हैं।

वर्तमान भारत के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारः आचार्य श्री विद्यासागर जी

* सुरेश जैन (सरल) *

जिनके संकेत में अक्षर पक्षियों की तरह पंख लगाकर उड़ते चले आते हैं, शब्द हिरणों की तरह दौड़े आते हैं, वाक्स सरिता की तरह बहने लगते हैं और विचार सागर की तरह उमड़ पड़ते हैं। ऐसे संत के ग्रन्थ उनकी श्रेष्ठता की नींव हैं, उनके कथन मंदिरों के कलशों की तरह उच्च हैं, उनकी कल्पनायें आगम का स्पर्श लिये होती हैं, उनका लेखन-उद्देश्य-मोक्षपथ की ओर चलते रहना है।

मैं सन् 1981 से उन्हें और उनके साहित्य को देख-परख रहा हूँ। वे लेखन-कार्य करते हुये शब्दों के साथ वैज्ञानिकों की तरह प्रयोग करते हैं। कहें कि लेखन के समय एक प्रयोगशाला भी उनके भीतर चलती रहती है। तभी तो वे शब्दों का विन्यास करते हैं। वाक्य निवास तो उनके लिये पुरातन कार्य हो चुका है।

साहित्य की उद्भटता प्रकट करने वाले विशेषणों से कोई विद्वान वक्ता केवल मंचीय-प्रलाप बनाने में सफल हो सकता है। वास्तविक समीक्षक, आलोचक और मौलिक-साहित्य के लेखकगण उनके ग्रन्थों में विद्या के सागर पर फैला साहित्य का आकाश देखते हैं, तो स्व-प्रेरणा से प्रशस्त विशेषणों का चयन कर उपकृत होते हैं। उक्त लोगों के शब्दों को मैं श्रेष्ठ के प्रांगण में बांधा गया वंदनवार (झालर) मानता हूँ। सुने : आचार्य श्री किसी से शब्दों या विशेषणों से श्रेष्ठ नहीं बने हैं, वे तो अपने रचनाधर्म के

आधार पर श्रेष्ठ हो गये हैं। हो गये हैं :- अद्वितीय-साहित्यकार। हां। महामनीषी, विचारक, दार्शनिक आदि बहुत कुछ।

इतना ही नहीं, उन्हें श्रेष्ठ मानने का दूसरा आधार भी हमारे सामने है। जब हम शब्दों/विशेषणों के माध्यम से उनके श्रेष्ठत्व का वर्णन करने में परेशान हो पड़े या जो कुछ लिखें - वह कमतर प्रतीत होने लगे, तब हमें स्वीकार करना पड़ता है कि वे कुछ अधिक ही श्रेष्ठ हैं जिसे नापा-तौला नहीं जा सकता।

उनकी पुस्तकें पढ़ने के बाद, उनके नाम पाठकगण याद रखते हैं। अतः यहाँ संख्या मात्र बतलाकर आगे का क्रम लिपीबद्ध करूंगा। आचार्य श्री मर्मज्ञ हैं।

अनेक भाषाओं और बोलियों के। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड़ भाषा के साथ उन्हें बुन्देली-बोली का गहन ज्ञान है। प्रवचनों के मध्य जब बुन्देलखण्डी बोली के एक-दो वाक्य बोलते हैं तो श्रोताओं के कर्णकुंड में अतिरिक्त पीयूष की वर्षा हो पड़ती है।

भले ही उन्हें प्रारंभ में काव्य-लेखन में अड़चन गई हो, क्योंकि उस समय हिन्दी ठीक से नहीं बोल पाते थे, पर आगम के अध्ययन और गुरुदेव ज्ञानसागर जी के संसर्ग ने उन्हें ऐसा सहारा दिया कि वे हिन्दी सहित अन्य भाषाओं के विशेषज्ञ हो गये। फलतः पूर्वाचार्या के क्लिष्ट ग्रंथों का, संस्कृत और प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद किया। वह भी

पद्यों में। एक-दो नहीं, 24 ग्रंथों का भाषान्तरण किया। मेधा की इस चर्चा में उनके श्रेष्ठ साहित्यकार होने के प्रथम स्तम्भ की गणना रखनी होगी।

संस्कृत के परमज्ञानी आचार्य श्री ने संस्कृत-भाषा में 6 शतक लिख कर जो परिचय दिया है, उसे कौन भूलेगा। फिर हिन्दी के विशेषज्ञ के रूप में बारह शतकों की रचना। ये 18 ग्रंथ उनके श्रेष्ठ के द्वितीय स्तंभ हैं।

महाकाव्य मूकमाटी की रचना उनके जीवन की सबसे बड़ी साहित्यिक घटना है। इस ग्रंथ के कारण ही वे दो स्तंभों के बाद सीधे चार स्तंभों का आधार प्राप्त कर सके, जिस पर श्रेष्ठ साहित्यकार के ठोस स्थान पर विराजमान हैं। संसार का यह प्रथम-महाकाव्य है जिस पर 300 से अधिक प्रोफेसर्स, कुलपतियों, साहित्यकारों और विद्वानों ने समीक्षाएँ लिखकर अपनी लेखनी को धन्य किया है। उनके समीक्षकों ने आचार्य श्री की तुलना में कुछ बड़े साहित्यकारों के नाम लिये हैं, यथा-श्री रविन्द्रनाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, निराला, मैथिलीशरण गुप्त, पंत, महादेवी, भवानी प्रसाद मिश्र, नागार्जुन, मुक्तिबोध, केदारनाथ आदि परंतु मेरी दृष्टि में मूकमाटी महाकाव्य उक्त सभी साहित्य साधकों के काव्यों व महाकाव्यों से हटकर है और शीर्ष पर है। तुलना की आवश्यकता नहीं है, पर समीक्षक को तुलना मकर समीक्षाधर्म का निर्वाह करना पड़ता है, सो वे लोग करते रहते हैं। मैं कहूँ मिश्री मीठी है, तो आप सुन तो सकते हैं किन्तु माधुरी (मिठास) का अनुभव नहीं कर सकते। इसी तरह मूकमाटी भी है उसे जो पढ़ेगा सो चखेगा।

महाकाव्य की मिठास लोगों को ऐसी भायी कि अन्य भाषा वालों को भी परोसी गई, मतलब-इस महाकाव्य का कन्नड़, बंगला, गुजराती, तमिल, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है विद्वानों द्वारा, सो, हिन्दी साहित्य का विस्तार बहु-आयामी हो गया। आचार्य श्री के काव्यग्रंथों, मूकमाटी सहित, पर अभी तक चार विद्वान डी.लिट का अलंकरण पा चुके हैं तो 22 पी.एच.डी का। सात एम. फिल के शोध प्रबंध, दो एम. एड. के और 6 एम.ए. लघु शोध प्रबंध भी उनके साहित्य को आधार बनाकर लिखे गये हैं। उनके हाइकू लेखन की चर्चा भी इसी निबंध के योग्य है। जापान में साहित्यकार गण कई दशकों से मुक्तक की तरह हाइकू लिख रहे हैं। उनकी परिभाषा और व्याकरण जग जाहिर है। आचार्य श्री ने करीब 30 वर्ष पूर्व इस विधा पर भी अपने महत्वपूर्ण विचारों को गुम्फित किया और भारत में जापान के हाइकू को नवादर्श प्रदान किया है। अब तक सहस्राधिक हाइकू लिख चुके हैं।

गुरुदेव के साहित्य में व्याकरण कही पंगु नहीं होती, वह व्याकरण-शास्त्र के आधार पर ही पढ़ने मिलती है। छंद कही छलछंद नहीं करते, वे मात्राओं और लय का महत्वपूर्ण सरोकार बनाये रहते हैं। अलंकारों के दर्शन, क्यारी में खिलते फूलों की तरह, पाठक को बरवस हो जाते हैं, कहावतें उनकी शैली की विशेषता बढ़ाती हैं। लोकोक्तियाँ-ज्ञान और साहित्य के विशाल गर्भ-प्रदेश का परिचय कराती हैं। हर प्रस्थान पर रस छलछलाते हैं, सो शब्द-चित्र की पूर्णता पर अनेक रंग बिखर जाते हैं। पाठकों के मनः

उद्यान में। इस तरह वे मूकमाटी महाकाव्य में व्याकरणाचार्य, छंदाचार्य-रसचार्य के रूप में उपस्थित होते हैं। समास-विशेषज्ञ व अलंकार सर्जक की छवि भी उनमें समाई हुई है। भाषा शैली के कारण-कहीं-कहीं प्रहसन/नाटिका जैसा वार्तालाप भी करते मिलते हैं अतः उन्हें नाटक/रंग का कर्ता भी कहते हैं। सो हो जाते हैं वे-रंगाचार्य। इन सभी आचार्यों को मिलाकर साहित्याचार्य ही कहना उपयुक्त मानता हूँ।

इस लेखनी ने कुछ वर्ष पूर्व घोषणा कर दी थी। कि पाठकों के लिए आचार्य श्री की कविता-कौमुदी का अपना एक सुख है, जिसमें सुखमय-संदेश आत्मा में अनुगुंजित होता रहता है। उनका समग्र साहित्य अध्यात्म के पवित्र-धरातल पर शिल्पित है और जैन-दर्शन को स्फुरित करता है। वह सर्वांग सुंदर है।

आचार्य श्री साहित्य-पथ पर पूर्ण-मौलिकता हैं ही, गहन स्वानुभावी भी हैं। पाठक ज्यों-ज्यों उनके साहित्य को पढ़ता है, उसका सरोकार काव्य से बढ़ता ही जाता है, फलतः उसमें मौलिकता और स्वानुभव की समझ बलवती होती जाती है और वह मृत्यु और मुक्ति का अंतर जानने लग जाता है।

आचार्य श्री छात्रावस्था से ही देशभक्ति की ज्योति अपने भीतर जगा चुके थे, जो आज भी उनके साहित्य और प्रवचनों में जगमग होते देखी-समझी जा सकती है। इंडिया नहीं भारत बोलो यह राष्ट्रीय नारा उन्हीं की देन है। अंग्रेजी नहीं, हिन्दी पढ़ो और बोलो। देश-सेवा करने वाले सैनिक को संत से कमतर नहीं मानें। आचार्य श्री सही मायने में राष्ट्रचिंतक हैं। जब भी कोई राष्ट्रीय राजनेता

उनके चरणों में आये हैं, वे लोग आचार्य श्री का राष्ट्र के प्रति प्रखर लगाव देखकर प्रेरित हुये हैं। आचार्य श्री को कपड़ा बनाने वाली कीमती-मशीनों के मध्य से कोई पुकारता रहा है, अतः उन्होंने हाथकरघा-योजना को आशीष देकर देश के अनेक शहरों, ग्रामों में रोजगार और राष्ट्रीयता को स्थापित कराया है। यह घटना उनके राष्ट्रकवि, राष्ट्रलेखक और राष्ट्रचिंतन होने का परिदृश्य भी उपस्थित करती हैं।

पंचाचार-प्रवीण महानाचार्य श्री विद्यासागर जी जैन-मुनि-संहिता के आदर्श उदाहरण हैं देश में उसे पालन करने और शिष्य-समूह से पालन कराने का उनका दृढ़ उद्देश्य चट्टान की तरह अभेद्य हैं।

अपने कथ्य को दोहरना नहीं चाहता, मात्र याद दिलाने की दृष्टि से इंगित कर रहा हूँ कि आचार्य श्री का साहित्य उनके श्रम, बुद्धि, अध्ययन और चिंतन से तो बना ही है, बड़ी बात यह है कि वे हर पृष्ठ पर एक आदर्श-चित्ते की तरह भी उपस्थित मिले हैं, जो विचारों की आगमिक-दार्शनिकता का पाठ पढ़ाते हैं। वे बिन्दु को जब सिंधु तक प्रसारण प्रदान करते हैं, उनके भीतर का वैराट्य पाठक को दृष्टिगोचर होने लगता है। पाठक सुनें, साहित्य में साहित्य की सुगंधि तो सभी साहित्यकार देते हैं, परंतु आचार्य श्री ने एक नहीं, दो सुगंधे प्रदान की हैं- प्रथम साहित्य की, द्वितीय आत्मतत्व ही। सच, पाठक को प्रतीत होने लगता है कि यहाँ- यहाँ साहित्य में आत्मा है और अगले पन्ने पर-आत्मा में साहित्य। यह रहस्य केवल, विज्ञपाठक ही समझ पाते हैं।

आओ सीखे : जैन न्याय

अख्यातिवाद विपर्यय की समीक्षा

चार्वाक दर्शन के अनुयायी विपरीतार्थ ख्याति के रूप में मानते हैं उनकी अवधारणा है कि सीप में 'यह चाँदी है' इस ज्ञान का विषय चाँदी नहीं है अन्यथा फिर इस ज्ञान को भ्रांत कैसे कहा जा सकता है?—'चाँदी का अभाव' भी इस ज्ञान का आलम्बन नहीं है क्योंकि चाँदी का अस्तित्व मानकर ही ज्ञान प्रवृत्त होता है।

इसलिये सीप भी इस ज्ञान आलम्बन नहीं है।

कोई कहे कि चाँदी के रूप में सीप ही इस ज्ञान का आलम्बन है किन्तु यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि अन्य का अन्य रूप से ग्रहण होना नहीं देखा जाता है क्या कहीं घट को पट रूप से ग्रहण होते देखा गया है?

अतः इस ज्ञान में कुछ भी प्रतिभासमान नहीं होता इसलिये इसे अख्याति कहते हैं।

इस अख्यातिवाद विपर्यय की समीक्षा करते हुये जैनाचार्य उपर्युक्त संपूर्ण कथन को अविचारित घोषित करते हुये अपने निम्न तर्क देते हैं।

तर्क 1 - यदि इस ज्ञान में कुछ भी प्रतिभासमान नहीं होता तो यह चाँदी है यह कथन कैसे किया जा सकता है?

तर्क 2 - क्या वस्तु-ख्याति के अभाव का नाम अख्याति है अथवा ईषत् अभाव का नाम अख्याति है। प्रथम में तो भ्रांति और सुप्तावस्था में कोई भेद नहीं रहेगा क्योंकि भ्रांति सुप्तावस्था से यही भेद होता है कि भ्रांति में एक ज्ञान

विशेष रूप होती है जबकि सुप्तावस्था में यह बात नहीं होती यदि भ्रांति को ज्ञान रूप नहीं माना जायेगा तो सुप्तावस्था और भ्रांति दोनों समान हो जायेंगे ईषत् ख्याति का क्या अभिप्राय है यदि जो अर्थ जिस रूप में अवस्थित है उसका उस रूप में प्रतिभास न होने का नाम अख्याति है तो वह विपरीतार्थ ख्याति हुई न कि अख्याति। अतः अख्याति पक्ष सिद्ध नहीं होता है।

कविता

दो बारात

* वीरेन्द्र भूपत (कंठाली बाजार सिंरोज) *

हे प्रभु आपकी कार गुजारी दुनिया में अलग ही है
हर काम के तरीके अलग अलग, काम के विधान भी अलग अलग
जैसे दूल्हा की बारात लगती है बेन्ड बाजे आगे
नाचने गाने वाले आगे बाराती आगे
लेकिन दूल्हा सबसे पीछे दूसरी तरफ देखें
दूल्हा सजा सजाया कन्धों पर सवार आगे और सब लोंग पीछे
कोई मखाने फूल पैसे फेंक रहा है कोई राम नाम सत्य हैं बोल रहा है
जबकि जिसे सुनाना था जीवन में अब सुनाया जा रहा है
कैसा दस्तर है दुनिया का और दोनों बारातों का हे प्रभु तेरी माया अलग ही है

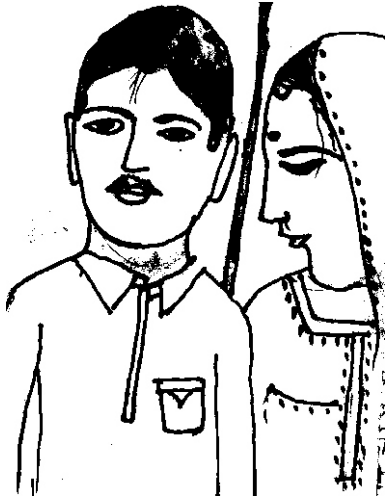


कहानी बंसत ऋतु

रात के दो बजे थे सादूमल कस्बे में बिजली गुल हो चुकी थी अंधेरा पसरा हुआ था आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे 30 अप्रैल की रात थी छतों पर मच्छर भिन भिना रहे थे कमरे की खिड़किया खोलते ही वे भीतर आ जाते थे ऋतु के बंसत ने अभी-अभी अमेरिका से आकर इस मकान में रहना शुरू किया था खिड़कियों पर जाली लगवाना अभी

संभव नहीं हो पाया था बंसत ने मोबाईल की टार्च जलाकर देखा तो ऋतु शान्त खरटि लेकर सो रही थी बंसत ने पहले सोचा इतनी गर्मी पंखा कूलर बन्द फिर भी ऋतु बेफिकर होकर सो रही है ऋतु की इस नींद को देखकर बंसत सोचने लगा कि मुझे कभी कभी इस नींद से ईर्ष्या होने लगती है मुझे ऐसी नींद क्यों नहीं आती है ये ऐसा क्यों होता है कि मेरी नींद जरा सी गर्मी में मुझसे विदा ले लेती है और मेरी पत्नी ऋतु गहरी नींद में सोती रहती है तकिया दीवाल से लगाकर बंसत टिक गया चादर से अपना पूरा शरीर ढक लिया और बैठ गया।

आखें बन्द करके सपनों जैसा बंसत को न्यूयार्क सामने आ गया वही उसका अपार्टमेंट व फ्लैट व सामने रखी टीवी सोफे की बायी तरफ उसकी प्रिय पत्नी ऋतु जिसने पहले पूछा क्या हो रहा है। तब मैंने उससे कहा टीवी देख रहा हूँ। तब ऋतु ने कहा टीवी ही देखते रहोगे



या कुछ मेरी भी बात सुनोगे तब मैंने कहा टीवी अचेतन बीबी चेतन टीवी से मुझे इतना लगाव नहीं है कि अपनी बीबी को छोड़कर टीवी ही देखता रहूँ बोलो तुम क्या कहना चाहती हो मैं टीवी बन्द करके तुम्हारी बात जरूर सुनूँगा बोलिये आपकी क्या प्रोब्लम है। मैं तुम्हारी हर प्रोब्लम सॉल्व करने के लिये ही सदैव तत्पर रहता हूँ तब गहरी सांस लेकर ऋतु ने कहा

था हमने अमेरिका में रहकर खूब पैसा कमा लिया है क्या यह सच है तब मैंने कहा था बिल्कुल सच है अब हमें अपने पिताजी कि बात याद आने लगी है कि बेटे तुम अमेरिका जा रहे हो तो चले जाओ पर अपनी संस्कृति संस्कार धर्म नहीं भूलना तब मेरी बात पर ऋतु ने मुस्कुराहट के साथ कहा था यह अच्छा है कि आपको अपने पिताजी की बात याद है मुझे आप पर गर्व है कि वर्षों अमेरिका में रहने के बाद आपने कभी भी न तो गलत भोजन को स्वीकार किया और न ही आपने अपने जीवन में कोई भी व्यसन को प्रवेश होने दिया। जहां तक वस्त्रों जैसे अपने जीवन साथी बदलें जाते हों वहां पर आपने मात्र मेरे सिवाय किसी को भी अपनी पलकों पर नहीं बिठाया अपनी आंखों के सामने मेरी तस्वीर के सिवा किसी दूसरी के तस्वीर को नहीं आने दिया मैं अपनी किस्मत पर सदैव नाज करती हूँ तब मैंने बीच में

टोकते हुये ऋतु से एक बात पूछी अब तुम्ही बताओ प्रिय कि तुम्हें किस चिन्ता और किस समस्या ने घेर रखा है जिससे तुम आज इतनी फिकरमंद हो गयी हो तब गहरी सांस लेते हुए ऋतु ने कहा कि मैं अपने भविष्य पर चिंतित हूँ तब मैंने पूछा वह कौन सा भविष्य है आपका जिस पर आप इतनी चिंतित हो तब संक्षिप्त में ऋतु ने उत्तर दिया था तान्या मान्या तब मैंने कहा ऐसा क्या हो गया। तब ऋतु ने कहा जिस अमेरिका में हम रह रहे हैं उस अमेरिका मैं बच्चे दस बारह वर्ष में ही जवान हो जाते हैं वे डेटिंग से परहेज नहीं करते हैं और उनके संस्कार व्यसनो में उलक्ष जाते हैं जैसे कि आपको तो स्वयं ही पता है पाश्चात्य विक्रिति का परिणाम हत्या व आत्महत्या के सिवा क्या होता है जब त्रिकोणी प्रेम के चक्रव्यू में कोई भी फंस जाता है जो वह उससे निकल नहीं पाता है। यहां के जीवन में सिर्फ वासना का बोल वाला और यह वासना को पहले प्रेम कहा जाता है किन्तु वासना के तीव्र तूफान में व्यक्ति कहा पहुँच जाता है इसे कहना बहुत कठिन होता है। यहां उन संसाधनों की कमी नहीं है जिनमें मात्र खाओं पिओ और मौज करो को ही प्रोत्साहन मिलता है बैदेही प्रेम का कोई भी महत्व नहीं समझते हैं वे तो सिर्फ नश्वर शरीर में ही उलझकर रह जाते हैं भारत के महापुरुषों का प्रेम खूब गहरा रहा है लेकिन दैहिक नहीं इसीलिये भारत में संतोष त्याग व तपस्या धारण करने वाले महापुरुषों की पूजा होती रही है। मैंने ऋतु की चिन्ता को गम्भीरता से लिया और मुझे सच लगा कि अमेरिका की जिन्दगी व भारत की जिन्दगी में बहुत अन्तर है मैंने उसी दिन निर्णय कर लिया कि 1 महीने के अन्दर-अन्दर अमेरिका छोड़ना पड़ेगा क्योंकि भारत में जुलाई के महीने में शिक्षण सत्र शुरू हो जाता है उसके पहले बच्चों का अच्छे स्कूल में

एडमिशन कराना पड़ेगा भारत में और कोई प्रोब्लम नहीं थी अपना घर था जमीन थी जायदाद थी सब कुछ था इसलिये कुछ नये सिरे से नहीं करना पड़ेगा और मैंने ऋतु की बात का सम्मान करते हुये अमेरिका को छोड़ दिया परन्तु यहां तो जब देखो तब बिजली गुल पंखा नहीं कूलर नहीं कमरे का ए.सी भी बन्द मच्छरों की भरमार कैसे रहेंगे भारत में कुछ नहीं सुबह हो जाने दो मैं ऋतु को स्पष्ट शब्दों में कह दूंगा मैं भारत में नहीं रह सकता हूँ फिर से अमेरिका चला जाऊंगा जैसे-तैसे बंसत ने रात काटी और ऋतु के लिये गहरी नींद में सोते हुये देखता रहा।

सुप्रभात हुआ ऋतु ने बंसत को उठाया और कहा ये चाय बंसत ने कहा तुमने मुझे जगा दिया वैसे ही तो आज मुझे आज रात भर नींद नहीं आयी मैं उस दिन के निर्णय पर पछताता रहा जो तुम्हारे कहने से भारत आने का लिया था मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं अमेरिका में बहुत अच्छा था वहां कम से कम चैन की नींद तो मिलती थी।

अब देखो एक और समस्या बन पड़ी है हमने तान्या व मान्या का एडमिशन भी करा दिया है अब तुम एक काम करना तुम भारत में रहो मैं अमेरिका चला जाऊंगा ऋतु ने कहा देखो हम और तुम सुई धागे हैं जहां सुई जाती है वहां धागा अवश्य जाता है आपने क्या समझ लिया क्या आप और हम एक दूसरे के बिना चैन से रह सकते हैं हम पाश्चात्य देश के दम्पति हैं हमारे दाम्पत्य जीवन के आदर्श भगवान राम और सीता है। मैं हर परिस्थिति में आपके साथ हूँ। आप जो निर्णय लेंगे वह मुझे स्वीकार है अच्छा एक काम करे अभी हमारे आस पास पूज्य आचार्य विद्यासागर महाराज हैं हम उनके पहले दर्शन करें फिर उसके बाद कोई निर्णय लेंगे। ऋतु की बात पर बंसत ने कहा यह मुझे आपका सबसे सुन्दर प्रस्ताव

लगा चलो आज ही हम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन करने चलते हैं।

कार्यक्रम बन गया बसंत और ऋतु अपनी बेटियों के साथ आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के दर्शनों को निकल पड़े सागर पार करके बीनाबारह सपरिवार पहुँचे लेकिन पता लगा कि आचार्य श्री का विहार महाराजपुर की ओर हो चुका है महाराजपुर निकल पड़े दर्शन तो बसंत को करने थे लेकिन तब तक वे महाराजपुर पहुँचे तब तक आचार्य श्री का विहार राजमार्ग की ओर हो चुका था। बहुत सारी भीड़ पार करने के बाद बसंत ने अपनी गाड़ी कुछ दूर निकाल ली गाड़ी से सपरिवार उतरकर बसंत रोड़ पर दर्शनाथ खड़े हो गये लेकिन आचार्य विद्यासागर जी महाराज का एक झाड़ू के नीचे अल्प विश्राम हो गया बसंत ने कहा हम अमेरिका से आ रहे हैं क्या हम गुरुदेव के दर्शन कर सकते हैं मुनि प्रसाद सागर जी ने कहा क्यों नहीं कर सकते

मुनि प्रसाद सागर जी थोड़े आगे बढ़े वे पीछे से बसंत का परिवार बसंत ने गुरुदेव के त्यागमय रूप को देखकर कुछ समय के लिये सब कुछ भूल गये गुरुदेव के चरणों की रज माथे लगाकर के बैठ गये तब आचार्य श्री ने पूछा क्यों अमेरिका में कैसा लगता है बसंत ने कहा वहाँ मन नहीं लगता है फिर बीच में ऋतु ने बोला महाराज जी इनका मन अमेरिका की ओर जा रहा है। और मेरा मन भारत में रहने का है ये पूछते हैं कि भारत में ऐसा क्या है जो तुम भारत में रहना चाहती हो आचार्य श्री ने कहा भारत की माटी तासीर में त्याग तप और संतोष है जो अमेरिका में नहीं है भारत कर्म भूमि और अमेरिका भोग भूमि चयन तुम्हें करना है आचार्य श्री ने पूछा आप लोगों का नाम क्या है बसंत ने कहा बसंत ऋतु आचार्य श्री ने कहा बसंत ऋतु का आनन्द शांति में है और शांति भारत में बसंत कहा बस गुरुदेव समाधान मिल गया अब मैं अमेरिका में नहीं अब भारत में ही रहूँगा।

कविता

हिंसा का हरकारा

हिंसा का हरकारा खूननस के खत लिखा है
रक्ताभ दरिया में डूबा हर देश देख रहा है

उम्मीद क्या करें अब सिसायत के लोगों से
चांदी के चंद सिक्को में इंसान बिक रहा है

कैसा जुनून छाया है इस मजहब दौर में
आपस में लड़ने को कल मजहब कह रहा है

वाइजो की हिदायतो से जन्नत नहीं मिलेगी
खुदा भी बेकसी से इबादत सह रहा है

अमन की अब नहीं है मुल्क की गुंजाइश
एटम के साये में जब इंसान रहा है।



अद्भुता का प्रमाण- श्रवणबेलगोला तीर्थ

* प्रियंका जैन केशव जैन (बैंगलोर) *

इस लेख में हम निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डालना चाहते हैं।

1. श्रवणबेलगोला धार्मिक दृष्टि से जैन समुदाय का एक महत्वपूर्ण तीर्थ-क्षेत्र है।
2. यह तीर्थ क्षेत्र जैन इतिहास का गौरव वर्णन करता है।
3. यह तीर्थ क्षेत्र हमें बतलाता है कि महाराज चंद्रगुप्त मौर्य ने कभी इस क्षेत्र पर आकर तपस्या की थी।
4. बाहुबली भगवान की प्रतिमा के अलावा यहां आठवीं शताब्दी की प्रतिमायें जैन इतिहास का गौरव वर्णन करती हैं।
5. युवा पीढ़ी इस तीर्थ क्षेत्र को एक संग्राहक (म्यूजियम) के रूप में देख सकती है। इस तीर्थ क्षेत्र पर वस्तुतः दो पर्वत हैं।-

विंधगिरी और चंद्रगिरी। भगवान बाहुबली की प्रतिमा विंधगिरी पर्वत पर विराजमान है और चंद्रगिरी पर्वत पर 13 जिनमंदिर हैं। ऐसा माना जाता है कि आचार्य श्रुत-केवली भद्रबाहु और उनके शिष्य चंद्रगुप्त मौर्य ने यहां पर तपस्या की थी। विंधगिरी पर्वत पर भगवान बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण चामुण्डराय ने सन् 981 में करवाया था।

श्रवणबेलगोला तीर्थ की यात्रा कैसे प्रारम्भ करें :-

वैसे तो आप इस तीर्थ क्षेत्र की वंदना सिर्फ एक दिन में पूर्ण कर सकते हैं लेकिन अगर आप इस तीर्थ की गौरव गाथा को देखना चाहते हैं तो कम से कम 2-3 दिन व्यतीत कर सकते हैं। बैंगलोर से आप अपनी यात्रा सुबह सुबह आरम्भ कर सकते हैं। रास्ते में पंक्तिबद्ध नारियल के वृक्ष और प्राकृतिक सौन्दर्य आप के मन को मोह लेंगे। यह दूरी आप 4-5 घंटे में पूर्ण कर सकते हैं। श्रवणबेलगोला में आप पहुंच कर प्रथम यात्री निवास की ओर प्रस्थान करें और दोपहर का भोजन ग्रहण कर थोड़ी देर विश्राम करने के बाद आप चंद्रगिरी पर्वत की यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं। इस पर्वत की ऊँचाई बहुत अधिक नहीं है। आप 20-30 मिनट में मुख्य मंदिर पहुंच सकते हैं।

हर मंदिर के बाहर आप पुरात्व विभाग द्वारा लगाये गये पटल पर ऐतिहासिक विवरण पढ़ सकते हैं। कुछ मंदिर यहां 8वीं व 9वीं शताब्दी में बनवाये गये थे। भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा, मानस्तंभ और प्राचीन मंदिर जी आपको जैन इतिहास के गौरव दर्शाएंगे। मंदिर के बाहर की गई कृतियां और कला की अद्भूत नक्काशी, मंदिर के सौन्दर्य का प्रमाण है। इस पर्वत से भी आप विंधगिरी पर्वत पर विराजमान भगवान बाहुबली की अद्भूत प्रतिमा के दर्शन कर सकते हैं।

चंद्रगिरी पर्वत की वंदना के बाद आप भोजनशाला जाकर शाम का भोजन कर सकते हैं। इसके बाद आप भोजनशाला के नजदीक वाले मंदिर जी के दर्शन करें। यह मंदिर अधिक रात्री तक दर्शन के लिये खुले रहते हैं। इनमें से एक मंदिर में भगवान बाहुबली की कथा चित्रित है। और एक मंदिर जी में चौबीसी विराजमान है।

अगले दिन आप प्रातः 6 बजे विंधगिरी पर्वत की यात्रा प्रारम्भ कर सकते हैं। जितने प्रातः

आप वंदना प्रारम्भ करेंगे उतनी ही आसानी और प्रसन्नता के साथ आप अपनी वंदना संपूर्ण कर सकते हैं। पर्वत चढ़ते समय आप ऊपर से नीचे का अद्भुत नजारा देखेंगे, वो तालाब जो कभी सूखा नहीं। ऐसा माना जाता है कि भगवान बाहुबली के प्रथम अभिषेक से जल निकला। उसी जल से उस तालाब का निर्माण हुआ था। आप अपनी पर्वत यात्रा में सर्वप्रथम एक जिनालय के दर्शन पायेंगे जहां पर शांतिनाथ भगवान व पार्श्वनाथ भगवान की मूर्तियां स्थापित हैं। आप जैसे ही थोड़ा उपर की ओर बढ़ेंगे तो आपको भगवान बाहुबली के दर्शन की प्राप्ति होगी। 57 फीट की प्रतिमा मुख पर मुस्कान लिये मानो कितने वर्ष से तपस्या कर रही है। प्रतिमा के चारों तरफ दर्शन करने के पश्चात् आप गोमटेश अष्टक और भगवान बाहुबली की पूजा कर सकते हैं। प्रतिमा के चारों ओर चौबीसी विराजमान हैं जहां पर आप ध्यान मग्न होकर कुछ भी पढ़ सकते हैं एवं अनंत शांति और सुख का अनुभव करते हैं।

अगर आप दो दिन श्रवणबेलगोला तीर्थ पर व्यतीत करते हैं। तो आपको अपने जैन धर्म के इतिहास पर गौरव होगा। आपने ना जाने कितने म्यूजियम देखें होंगे लेकिन श्रवणबेलगोला का यह खुला व अद्भुत म्यूजियम बहुत ज्ञान और शांति देगा।

कविता

आत्म गीत

✽ शिखरचन्द्र शिखर (गंजबासौदा) ✽

ऐसी बुद्धि कर दो भगवन, आत्म ध्यान में जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलाओं हम ॥

राग द्वेष और मोह का चक्कर, अब करना है दूर प्रभु

और कषाय के कारण भटके, अटके हैं हर बार प्रभु

मिले मार्गदर्शन कुछ ऐसा, सही मार्ग पर जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलायें हम ॥

कर्मों ने बाँधा है हमको, इस जग में भटकाने को

करते हैं मजबूर प्रभु, यहाँ बार बार फिर आने को

पा जायेंगे फिर इस जग से, जन्म मरण छुटकारा हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के, मन में दीप जलायें हम ॥

झूठा जग है झूठे सब हैं, फिर किसको अपना मानूँ

रत्नत्रय ही सच्चे साथी, जग से तारेंगे जानूँ

अतः ज्ञान की छैनी दे दो कर्म काटने जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के मन में दीप जलायें हम ॥

ऐसी बुद्धि कर दो भगवन, आत्म ध्यान में जायें हम।

दीवाली पर रत्नत्रय के मन में दीप जलायें हम ॥



हंसो और स्वस्थ रहो

✽ डॉ. श्रीमति ज्योति जैन (खतौली) ✽

हमारे महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम पहले खुशहाली फिर विकास की बात कहते हैं। सच भी है जिस राष्ट्र के नागरिक जितने खुश रहते हैं वह राष्ट्र उतनी ही उन्नति करता है। खुशी जीवन का मूलभूत तत्व है। अनेक शोधो से भी यह निष्कर्ष सामने आया है कि हंसना मनुष्य के लिये अनेक रोगों की रामबाण औषधिक है एक टॉनिक है।

आधुनिक जीवन शैली के चलते व्यक्ति के जीवन में अनेक बदलाव आ गये हैं कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक। व्यस्ततम और भागमभाग की जिंदगी ने व्यक्ति को मशीन बना दिया है। इससे सबसे बड़ा असर पड़ा है। व्यक्ति की हंसी पर खुशी पर। पूरा-पूरा दिन निकल जाता है हंसना हंसाना हो ही नहीं पाता है। इससे व्यक्ति के शरीर एवं मन पर भी प्रभाव पड़ रहा है। इससे मानव स्वभाव में भी बदलाव आ रहा है। इस बदलाव पर दुनिया भर के मनोवैज्ञानिक डॉक्टर आदि का ध्यान गया और उन्होंने हंसी के महत्व को समझाया है।

भौतिकवाद के चलते व्यक्ति की सुख-सुविधा, साधन सम्पन्नता बढ़ी हुई दिखाई देती है। अतः मनुष्य की खुशी भी बढ़ी हुई दिखाई देना चाहिये पर बढ़ता तनाव, ईर्ष्या, स्वार्थ, निंदा, अहंकार, कुंदन, आदि खुशी में बाधक बन रहे हैं। मानसिक दबाव व विभिन्न समस्याओं के चलते व्यक्ति निराशा के चंगुल में फंसते जा रहे हैं।

सच पूछो तो हंसी-खुशी का कोई मापदंड नहीं है यह व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है कोई शहर में खुश है तो कोई गांव में, कोई अपनी तरक्की पर तो कोई अपनी पढ़ाई पर, कोई अपने मित्रों के बीच तो कोई अपने परिवार के बीच, कोई अपनी बांछित सफलता पर तो कोई अपनी क्षमता पर। हां एक बात तो है कि हंसने-खुश रहने से तन मन दोनों प्रसन्न हो जाते हैं।

आइये देखे हंसने प्रसन्न रहने से क्या क्या लाभ मिलते हैं-

- चिकित्सकों का कहना है कि हंसने से मस्तिष्क में एक किस्म का हार्मोन बनता है जो व्यक्ति को दर्द सहन करने की क्षमता प्रदान करता है।

- चिकित्सकों का यह भी कहना है कि हंसने से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बल मिलता है हमारे शरीर के वे सेल जो इन्फेक्शन से लड़ते हैं जब हम हंसते हैं तो वे क्रियाशील हो जाते हैं अतः हमारी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

- खुलकर हंसने से भूख भी खुलकर लगती है एपीनेफ्रीन तंत्रिका प्रतिरक्षा प्रणाली के साथ-साथ व्यक्ति की भूख भी नियंत्रित करती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि खुलकर हंसने से एपीनेफ्रीन का निहसरण कम होता है। जिससे भूख खुलकर लगती है।

- हंसना फेफड़ों का सबसे अच्छा व्यायाम है इससे रक्त में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है, फेफड़ों की क्षमता भी बढ़ती है। दूषित वायु बाहर निकलती है श्वसनतंत्र सही ढंग से कार्य करते हैं।

- हंसना हृदय के लिये भी अत्यन्त लाभकारी है। इससे रक्तसंचार में सुधार आता है। हृदय की मांसपेशियों में ऑक्सीजन की अतिरिक्त आपूर्ति होने से रक्त के थक्के आदि जमने की संभावना कम हो जाती है। रक्तचाप भी नियंत्रित रहता है।

- हंसने से हमारे रक्त में एंडोर्फिनस का स्तर बढ़ जाता है जो दर्द निवारक है। अतः हंसने से अर्चाराइटिस स्पोडिलाइटिस, सिरदर्द आदि दर्दों में कमी महसूस होती है।

- हंसने से मस्तिष्क पर पड़ा दबाव कम होता है तनाव व थकान में भी राहत मिलती है।

- विशेषज्ञों ने यह भी निष्कर्ष निकाला है कि जो लोग मानसिक रूप से पीड़ित हैं उन्हें हंसने से काफी लाभ पहुंचाता है तनाव, अवसाद अनिद्रा जैसी बीमारी में काफी सुधार आता है।

- स्वास्थ्य विशेषकों के अनुसार एक मिनट हंसना किसी एम्साइजर मशीन पर दस मिनट व्यायाम करने के बराबर है।

- उन्मुक्त हंसी से हम स्वयं अपने आप को तरो ताजा महसूस करते हैं। साथ ही शरीर में स्फूर्ति भी आती है।

- हंसने से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है चेहरे पर एक स्वाभाविक अनोखी चमक आती है।

- हंसते हुये व्यक्ति सभी को अपना बना लेते हैं।

- अनेक रोगों में एवं आप्रेशन से पहले मरीजों को लाफ्टर थेरेपी द्वारा उनकी चिंता-डर-भय दूर कर स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

भारतीय रोग संस्थान एवं योग-स्वास्थ्य से जुड़ी अन्य संस्थायें अपने कार्यक्रम में हंसी को प्रमुख स्थान देता है। आसन-प्राणायाम जैसी क्रियाओं के साथ हंसी को भी अनिवार्य माना गया हो सुबह, पार्क मैदान, हॉल- जहां कहीं भी क्लास लगती है। ठहाका लगाते लोग दिखाई देते हैं।

आधुनिकीकरण के इस युग में हंसी-खुशी भी व्यवसाय में शामिल हो गयी है। बहुत से व्यवसायों की आवश्यकता है मुस्कुराते रहना अपने क्लाइंट के लिये या कॉल सेन्टर, रिसेप्शनिस्ट आदि में यह आवश्यक है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो बड़े बड़े शहरों में लॉफिंग क्लब खुल गये हैं। जहां के सदस्य बनकर आप खुलकर हंसिये और अपना शारीरिक मानसिक संतुलन बनाये रखियें।

आइये। हम सब हंसी के महत्व को समझे स्वयं हंसे दूसरों को भी हंसाये।

हमारे गौरव

महामात्य भारत और मन्त्री नत्र

राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय के महामंत्री भरत जैन धर्मावलम्बी कौण्डिन्य गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पितामाह का नाम अणय्या पिता एक एयण और माता का श्री देवी था इनकी पत्नी का नाम कुन्दव्वा और सुपुत्र का नाम नत्र था। ब्राह्मण जाति होने के कारण वह भरत भट्ट भी कहलाते थे। वह महामात्यों के ही वंश में उत्पन्न हुये थे, किन्तु किसी कारण से उनके कतिपय निकट पूर्वज पदच्युत रहे थे। भरत ने अपनी योग्यता स्वामी भक्ति एवं तेजस्विता के बल पर वह पद पुनः प्राप्त कर लिया था। अपभ्रंश भाषा के महापुराण नागकुमार चरित आदि ग्रन्थों के रचयिता महाकवि पुष्पदन्त के यह प्रश्रयदाता थे अतएव कवि ने स्थान-स्थान पर इनका गुणानुवाद किया है। कवि के शब्दों में महामात्य भरत अनवरत रचित-जिननाथ-भक्ति और जिनवर-समय-प्रासाद-स्तम्भ थे समस्त कलाओं एवं विधाओं में कुशल थे प्राकृत कवि की रचनाओं पर मुग्ध (प्राकृत-कवि-काव्य-रसावलुब्ध थे) उन्होंने सरस्वती सुरभि का दुग्धपान किया था, लक्ष्मी के चहेते थे, सत्य प्रतिज्ञ और निर्मत्सर थे। सम्राट के युद्धों का भार ढोते ढोते उनके कंधे पिस गये थे वह अन्यन्त मनोहर कवियों के लिये कामधेनु दीन दुखियों की आशा पूरी करने वाले सर्वत्र प्रसिद्ध परस्त्री पराङ्मुख सच्चरित्र उन्नतिमति और सुजनों के उद्धारक थे। उनका रंग साँवला था हाथी की सूँड़ जैसी भुजायें थी, अंग सुडौल थे, नेत्र सुन्दर थे और वह सदा प्रसन्नमुख रहते थे वह ऐसे उदार और दानी थे की बलि जीमूत वाहन दधिचि आदि के स्वर्गगत हो जाने से त्याग गुण अगत्या भरत मंत्री में ही आकर निवास करने लगा था। उनके गुणों की गिनती नहीं थी, और न उनके शत्रुओं की भव्य आत्मा भरत ने वापी कूप तड़ाग जिनालय आदि बनवाना स्थगित करके कवि से महापुराण की रचना करायी जो संसार सागर से पार होने के लिये नौका के समान है, कवि पुष्पदन्त जो स्वयं अभिमान मेरु कहलाता था, बड़ा मानी और कड़वे मिजाज का था किसी की भी प्रशंसा या चापलूसी करना उसके लिये अत्यन्त दुष्कर था। वह कहता है कि ऐसे (भरत जैसे) व्यक्ति की वन्दना करने को भला किसका मन न चाहेगा ? महाकवि पुष्पदन्त की मित्रता के कारण महामंत्री भरत का गृह विद्या विनोद का स्थल बन गया था, वहाँ पाठक और वाचक निरन्तर पढ़ते, गुणी गायक गान करते और लेखक सुन्दर काव्य लिखते थे वह भरत वल्लभ-राज कृष्ण तृतीय के महामात्य दानमन्त्री और कटकाधिप (सेनापति) भी थे। शक 881 (सन् 959 ई.) में जब सम्राट मेलपाटी के उद्यान में भेंट की थी।

तब से वह उन्हीं के आश्रय में रहे और उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने अपना महापुराण रचकर 965 ई. में पूर्ण किया था। महामात्य भरत के सुयोग्य सुपुत्र नर स्वयं सम्राट के ग्रह मंत्री थे। और अपने पिता की ही भाँति महाकवि के भक्त और प्रश्रयदाता थे। अपने नागकुमार चरित की रचना कवि ने मन्त्रीश्वर नर के मंदिर (महल) में रहते हुये, उन्हीं के लिये एवं उन्हीं के नामांकित की थी मन्त्रीराज की प्रशंसा में कवि ने लिखा है कि वह प्रकृति के सौम्य था उनकी कीर्ति सारे लोक में व्याप्त थी, उन्होंने अनेक जैन मंदिर बनवाये थे जिनचरणों में वह भ्रमण थे और जिनेन्द्र की पूजा में निरत रहते थे, जिनशासन के वह उद्धारक थे, मुनियों को दान देने में सदा तत्पर थे बाहरी एवं भीतरी उभय शत्रुओं का दमन करने वाले थे, दयावान थे, दीनों के लिये शरण थे, राज्यलक्ष्मी के क्रीड़ा सरोवर, सरस्वती के निलय विद्वानों के साथ विद्या-विनोद में निरत, शुद्ध हृदय थे। कृष्ण तृतीय के उत्तराधिकारियों के समय में भी नर राजमंत्री बने रहे।

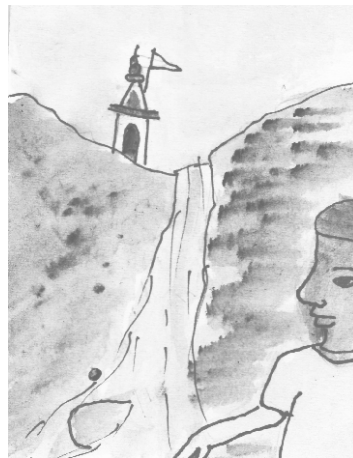
प्रतीत होते हैं। सन् 972 ई. को मान्यखेट की लूट एवं विध्वंस का महाकवि पुष्पदन्त ने आँखो देखा बड़ा करुण वर्णन किया है। किन्तु उस लूट आदि से मन्त्रीराज नर की समृद्धि में विशेष अन्तर नहीं पड़ा प्रतीत होता है पुष्पदन्त स्वयं ब्राह्मण थे तथा शैव माता-पिता की संतान थे, किन्तु एक दिगम्बर जैन गुरु के उपदेश से जैन हो गये थे। और अन्त में उन्होंने सन्यास पूर्वक मरण किया था।

कविता

विशाल बनकर रहूँगा

* ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) *

सूखे से सूखे से शैल खंड पर
बह रही जल की धारा रंग बिरंगी कल कलसी
बह रही नीर की धारा ऊपर नीचे गिर रही
अपने पतन पर भी हँस रही समझ नहीं आता
इसे पतन क्यों भाता झरना से पूँछे कौन
क्योंकि सब निहार रहे मौन झरना जरूर कह रहा है
आगे आगे बढ़ रहा है पीछे नहीं हटूँगा
पतन के बाद भी उत्थान करूँगा
विशाल बनकर ही रहूँगा घात पर घात सहता रहूँगा



डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



सुरेश जैन

जैन व्यक्तित्व फिल्म निर्माता डॉ. व्ही शांताराम



फिल्म निर्माता, निर्देशक, कलाकार डॉ. व्ही शांताराम का पूरा नाम राजाराम वाणकुद्रे शांताराम था। इनका जन्म 18 नवम्बर 1901 को कोल्हापुर के एक निर्धन महाराष्ट्रियन जैन परिवार में हुआ था। परिवार आर्थिक अभावों से त्रस्त था, जिस कारण इनको बहुत कम विद्या प्राप्त हुई तथा छोटी सी आयु में ही इनको बम्बई आना पड़ा जहाँ छोटे-छोटे कार्य किये, जिससे कम से कम अपना खर्च निकाल सकें। बचपन में वह नाटकों में काम किया करते थे। गधर्व नाटक मंडली में कुछ समय काम करने के बाद वह उस समय के जाने-माने फिल्मकार बाबू राव पेंटर के गुप से जुड़ गये ताकि खुद को दमदार बना सके। बाबू राम पेंटर के स्टूडियो में व्ही शांताराम की हैसियत एक वार्ड ब्वाय से अधिक नहीं थी, जहाँ उस से हर छोटा-मोटा काम लिया जाता था। छोटा काम करने के बावजूद वे कभी निराश नहीं हुये क्योंकि उनके अन्दर हर काम में पारंगत होने का जुनून था। उनकी सूझबूझ अन्य लोगों से अधिक थी, इसलिये रंगमंच के हर पक्ष जैसे अभिनय, मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, वेशभूषा, रूप सज्जा आदि की अच्छी जानकारी बहुत जल्द हासिल कर ली। उनकी लगन और प्रतिभा से प्रभावित होकर बाबू राव पेंटर ने उनका ओहदा बढ़ाकर उन्हें प्रोडक्शन असिस्टेंट बना दिया। फिर वह अभिनय भी करने लगे। 1921 में बनी सुरेखा हरण में उन्होंने पहली बार अभिनय किया। ई. सन् 1929 में जब शांताराम को ऐसा लगा कि वह अब स्वतंत्र रूप से कार्य करने योग्य हो गये हैं तब उन्होंने अपने चार अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर प्रभात प्रोडक्शन नाम की कंपनी की स्थापना कर ली और शुरू हुआ फिल्म निर्माण, उन्होंने फिल्म बनाई, शंकुतला, शांताराम ऐसे फिल्मकार थे जिनकी फिल्मों में यह कोशिश होती थी कि दर्शकों को मनोरंजन के साथ-साथ जीवनपयोगी संदेश भी दिया जाये। सामाजिक विषयों पर उन्होंने एक से बढ़कर एक फिल्में बनाई। डॉ. कौटनिस की अमर कहानी बनाने के बाद इनकी ख्याति पूरे देश में फैल गई। अमर, ज्योति, आदमी, पड़ोसी, दहेज, तुफान और दीया इनक इनक पायल बाजे, दो आँखे बारह हाथ, नवरंग जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली, गीत गाया पत्थरों ने, बूँद जो बन गई मोती, जैसी फिल्मों की एक लम्बी सूची है। अपने सात दशक से भी अधिक के गौरवशाली सिने जीवन में डॉ. व्ही शांताराम ने 105 फिल्में बनाई तथा सिने माध्यम का सामाजिक संदेशों के प्रचार-प्रसार के लिये उपयोग किया। उसकी सिने पारखियों तथा आम जनता दोनों ने सराहना की। फिल्में समाज बनाती हैं और इससे समाज का विकास भी होता है, फिल्में लोगों को सही रास्ता दिखाने का अच्छा माध्यम है। इसी सोच से अपनी फिल्मों का निर्माण करते थे व्ही शांताराम। यही वजह है कि उनकी तमाम फिल्मों ने एक इतिहास रचा है।

फिल्मों में एक वार्ड ब्वाय की हैसियत से अपना कैरियर शुरू किया और अंत में बड़े फिल्मकार बने। उन्हें जो यश, सम्मान और सिने जगत में एक अलग स्थान मिला। उसके पीछे उनकी समर्पित भावना, बुलंद इरादे और अथक मेहनत थी। उनकी कृति दो आँखे बारह हाथ का

लोहा आज भी दुनिया मानती है, जो कैदियों से काम करवा कर उन्हें सुधारने की बात करती है। दो आँखे बारह हाथ का गीत ऐ मालिक तेरे बंदे हम..... को तो हमारे छात्र-छात्राओं ने प्रार्थना के रूप में अपना लिया है। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिये राष्ट्रपति का स्वर्णपादक तथा राष्ट्रीय स्तर पर अनेक अन्य पुरस्कार तो मिले ही साथ ही साथ विदेशों में भी इसकी प्रशंसा की गई।

व्ही शांताराम की फिल्में अपनी दृश्यात्मक सुंदरता तथा सशक्त कथानक के लिये विख्यात थी। उनकी फिल्मों के विषय अलग-अलग होते थे, जिन्हें वह समसामयिक जीवन तथा साथ ही पौराणिक कथाओं से लेते थे। ब्रिटिश शासकों के कठोर सेंसरशिप के बावजूद, यहाँ तक कि 1930 और 1940 के उथल-पुथल भरे दशकों में भी युवा शांताराम अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को फिल्मों के माध्यम से अभिव्यक्त करने से कभी नहीं घबराये। अपनी फिल्मों में उन्होंने छूआछूत, गरीबी आदि जैसे सामाजिक विषयों को भी उठाया। वह एक उपक्रमशील फिल्म निर्माता थे। विश्व में अन्यत्र हो रही प्रौद्योगिकीय प्रगति से फिल्म उद्योग को बराबर परिचित करवाते रहे। उनकी फिल्म धर्मात्मा (1935), संत तुकाराम (1936), आदमी (1939) में बनी फिल्मों को मात्र व्यावसायिक सफलता ही हासिल नहीं हुई वरन् समालोचकों द्वारा भी इनकी सराहना की गई। हिन्दी के साथ ही 1930 में एक अंग्रेजी फिल्म थंडर ऑफ द हिल्स में भी उन्होंने अभिनय किया और 1933 में निर्मित पहली रंगीन फिल्म बनाई।

इनकी शादी विमला के साथ हुई थी, 1942 में उन्होंने फिल्म अभिनेत्री जयश्री से शादी कर ली, जिस कारण उनकी प्रभात प्रोडक्शन के अन्य साथियों के साथ अनबन हो गई। अतः उन्होंने प्रभात प्रोडक्शन को छोड़ दिया तथा अपना अलग से बड़ा सुन्दर तथा मॉडर्न स्टूडियो राजकमल नाम से बनवाया। फिर 1952 में इन्होंने जयश्री को छोड़ दिया तथा अपनी फिल्म की हीरोइन संध्या से शादी रचा ली। संध्या के साथ इन्होंने उस समय की सफलता फिल्मों का निर्माण किया। इस सब के बावजूद भी इनकी पहली पत्नी विमला पूरी जिन्दगी भर इनकी कानूनी धर्मपत्नी बनकर रही।

व्ही शांताराम का 30 अक्टूबर 1990 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इनको बहुत से अन्य राष्ट्रीय पुरस्कारों के अलावा सबसे अधिक सम्मानित पुरस्कार महाराष्ट्र में जैन समाज रत्न की पदवी से अलंकृत किया गया तथा नागपुर विश्वविद्यालय से डाक्ट्रेट की मानद उपाधि मिली। दादा साहब फाल्के अवार्ड 1985 में मिला तथा मरणोपरांत 1992 में इन्हे पद्म विभूषण पुरस्कार दिया गया।

व्ही शांताराम पर डाक टिकट

डॉ. व्ही शांताराम पहली जैन फिल्मी हस्ती थे। जिनके चित्रों वाला एक स्मारक डाक टिकट 17-11-2001 को भारतीय डाक विभाग ने जारी किया था। 400 पैसे मूल्य वाले इस 4 रंगी डाक टिकट को 4 लाख की संख्या में कलकत्ता सिक्कूरिटी प्रिंटर्स लि. द्वारा मेट क्रोमो पेपर पर फोटो ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया द्वारा छापा गया था। डाक टिकट की आधी साईड पर व्ही शांताराम को टोपी पहना हुआ आधा चित्र तथा आधी साईड पर पूरा चित्र फिल्म की शूटिंग के दौरान लिया गया दर्शाया गया है। नीचे हिन्दी तथा इंग्लिश में डॉ. व्ही शांताराम लिखा है। टिकट के दोनों ओर चलचित्र की तरह सुराख दिखाये गये हैं। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैण्ड से छपने वाले स्टेनले गिब्स केटालॉग में नम्बर 2040 पर तथा अमेरिका से छपने वाले सकाट केटालॉग में नम्बर 1927 पर दिया गया है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के चिंतन में श्रमणाचार

✽ ब्र. आदर्श जैन (गंजबासौदा) ✽

परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी अपनी निर्दोष चर्या स्व के साथ परहित में संलग्न सर्वाधिक लब्धख्यान आचार्य हैं। वे सच्चे अर्थों में श्रमण है। मूलाचार में श्रमण का अर्थ निम्न प्रकार है।

समणो मेत्ति य पढमं विदियं स्ववत्थ संजदो मेत्ति।

सव्वं च वोस्सरामि य एदं मणिदं समासेण ॥1॥

इसकी संस्कृत छाया इस प्रकार है-

श्रमणा मम इति प्रथमः द्वितीयः सर्वत्र संयनो ममेति।

सर्वं च व्युत्सजामि च एतद् भणितं समासेन ॥

समणो मेत्ति य श्रमणः समरसी भाव युक्तः सर्वत्रः अथवा श्रमणो मम प्रथमं मैत्र्यं द्वितीयं च सर्व संयतेषु। सव्वं च। वोस्सरामि व्युत्सजामि च। एदं एतद् मणिदं मणितं। समासेण संक्षेपतः।

शब्दस्तोम महानिधि को अनुसार श्रम का अर्थ निम्न है-

श्रम तपसि, आयासे, खेदे।

श्रम+युच् = श्रमणः

श्रमणः यति भेदे भिक्षा जीविनि त्रि जटामाख्यां मुण्डोर्या शरीर भेदे सुदर्शनायां स्त्रियां च। 2

इस प्रकार श्रमण की व्युत्पत्ति होगी-श्रमेण युक्तः श्रमणः। श्रम=तपस्या। अर्थात् जो श्रम से/ तपस्या से युक्त है वही श्रमण है अथवा जो समत्व से युक्त है वही श्रमण है।

जावालोपनिषद् में यथाजात रूप निर्ग्रन्थ निष्परिग्रही श्रमण को परमहंस की संज्ञा दी गई है।

यथाजातरूपघरो निर्ग्रन्थो निष्परिग्रहः

तदब्रह्ममार्गे सम्यक् संपन्नः शुद्धमानसः

प्राणसंधारणार्थं यथोक्तकाले विमुक्ते

भैक्षमाचरन्नुदर पात्रेण लाभालाभयोः

समोभूत्वा, शून्यागारदेवगृह

तृणकूटवल्मीकवृक्षमूलकुलाल शाला

अग्निहोत्रगृह नदीपुलिनगिरि कुहर

कन्दरकोटरनिर्झर स्थण्डिलेषु

तेष्वनिक्रेनवास्य प्रयत्नो निर्ममः

शुक्लः ध्यान परायणोऽध्यात्मनिष्ठो

अशुभकर्म निर्मूलनपरः

सन्यासेन देहत्यागं करोति

स परम हंसो नाम

इस प्रकार जैन-जैनेतर आगम में वर्णित श्रमण की परिभाषा विशेषतः आचार्य श्री में

पूर्ण रूपेण दृष्टिगोचर होती है। जिनागम में श्रमणों की आचार संहिता का वर्णन करने वाले अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

एक ओर जब उन ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है, और दूसरी ओर आचार्य श्री की निर्दोष चर्या का अवलोकन किया जाता है तब ऐसा प्रतीत होता है मानो आचार्य श्री मुनियों के आचरण को बताने वाले ग्रन्थों की जीवन्त प्रतिलिपी हो।

श्रमणों के स्वरूप, उनकी चर्या का निरूपण चरणानुयोग ग्रन्थों में हुआ है। प्रथमानुयोग के ग्रन्थों में भी प्रकरण के अनुसार अनेक स्थलों पर श्रमण चर्या का वर्णन मिलता है। इनमें श्रमण के 28 मूलगुण बतलाये गये हैं जो इस प्रकार हैं-

पाँच महाव्रत	- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह महाव्रत
पाँच समिति	- ईर्या, भाषा, एषणा, आदान निक्षेपण एवं प्रतिष्ठापन समिति
पाँच इन्द्रिय निरोध	- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु एवं कर्ण इन्द्रिय निरोध
षट् आवश्यक	- सामायिक स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान एवं कायोत्सर्ग
शेष सात गुण	- केशलौच, आचेलक्य (निर्ग्रन्थ, अस्नान, भूमिशयन, अदंत धावन, स्थिति भोजन (खड़े होकर भोजन) एवं एक भक्त (एक बार भोजन)

ये श्रमण के प्रधान आचरण हैं। इनके साथ तीन गुप्ति, पाँच आचार बाईस परीषहजय, बारह तप, दर्श धर्म आदि का पालन करते हैं जो मुनियों के उत्तरगुण हैं। आचार्य श्री श्रमण के मूलगुण और उत्तरगुणों का पालन करते हैं। इन पर चिंतन करते हैं। इसी का परिणाम है कि आचार्य श्री ने संस्कृत में सर्वप्रथम श्रमण शतक की रचना की और श्रमण चर्या अपने शिष्यों को बतलाई। परीषहजय शतक द्वारा श्रमण की भावना और वृत्ति को स्पष्ट किया है।

स्वामी समन्तभद्राचार्य ने रत्नकरण्डश्रावकाचार में श्रमण का स्वरूप बतलाया है।

विषयाशावशातीतो निरारम्भोऽपरिग्रहः।

ज्ञानध्यानतपोरक्तस् तपस्वी स प्रशस्यते ॥10॥

जैन श्रमण की आभ्यन्तर विराग भावना एवं वृत्ति कैसी होनी चाहिए इस पर श्रमण शतक में आचार्य श्री का चिन्तन देखिए।

रागादीन् सुधीः पुमान् नैमित्तिकाननियतान् नैतीमान्।

अनधिगततत्त्वोऽसुमान् याति तु पर्ययान् परकीयमान् ॥28॥

रागादिभाव पर हैं, पर से न नाता, ज्ञानी मुनीश रखता, पर में न जाता।

धिक्कार मूढ़ पर को, करता, कराता, ना तत्त्वबोध रखता, अति दुःख पाता ॥

मुमुक्षु साधक संसार में रहकर भी संसार से उसी प्रकार विरत रहना है जिस प्रकार जलज जल में रहकर भी उससे भिन्न रहता है-

जलाशये जलोद्भवमिवात्मानं भिन्नं जलतोऽनुभव।

प्रमादी माऽये भव भव्य विषयतो विरतो भव ॥33॥

सच्चा श्रमण चेतन को तन से पृथक् समझ कर देहाशक्ति का परित्याग करता है। उसके

लिए देहाशक्ति/देहाविमान का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता-

भिन्नोऽहमङ्गान्मद-रूपिणोऽपि च भिन्न मत्यङ्गमदः।

मुञ्चामीत्वेति मदमाङ्ग हे गत-भवहेदुमद ॥34॥

इसका हिन्दी पद्यानुवाद देखिए-

हूँ देह से पृथक् चेतन शक्ति वाला, स्वामी! सदैव मुझसे तन भी निराला।

यों जान, मान तन का मद छोड़ता हूँ, मैं मात्र मोक्ष पथ से मन जोड़ता हूँ ॥

श्रमण कभी पर पदार्थों से आकर्षित नहीं होता। उसकी दृष्टि तो सदैव निज पर रहती है।

श्रमण क्षमादि दश धर्मों का पालन करते हैं और सदैव पाप से विमुख रहते हैं। उनकी कभी भी यश के प्रति आकांक्षा नहीं होती। मुमुक्षु साधक मात्र द्रव्य श्रुत पर आश्रित नहीं रहता अपितु भावश्रुत का आलम्बन लेकर स्वानुभूति के रस का पान करता है। आचार्य श्री ने मात्र बाह्य दिगम्बरत्व को मोक्षमार्ग में कार्यकारी नहीं माना है। उसे तो मन-वचन-काय से पवित्र होकर समता रूपी सुधा धारा का सेवन करना चाहिए। सच्चे श्रमण में तो आत्मानुभूति का निर्झर, सप्त तत्त्वों के चिन्तन से प्रवाहित होता है, अतः साधक का कर्तव्य है कि वह अनवरत तत्त्व चिन्तन में रत रहें-

न मनोऽन्यत् सदा नय दृशा सह तत्त्वसप्तकं सदा नय।

यदि न त्रासदाऽनयः पन्थास्ते स्वर सदा नयः ॥11॥

तू चाहता विषय में मन ना भुलाना,

तो सात तत्त्व अनुचिन्तन में लगा ना।

ऐसा न हो, कुपथ से सुख क्यों मिलेगा ?

आत्मानुभूति झरना फिर क्यों झरेगा ?

तत्त्वचिन्तन में रत रहने वाले श्रमण के देह राग या देह रूचि नहीं रहती। वह स्वरस में निमज्जित होता रहता है। उसके हृदय में प्रशम भाव कर्मों की श्रृंखलाएं अनायास ही जीर्ण-शीर्ण होने लगती हैं तथा वह परमशान्ति का अनुभव करते हुए स्वयं में रममाण होकर स्थित रहता है-

यस्य हृदि समाजातः प्रशमभावः श्रमणो यथाजातः।

दूरोस्तु निर्जरातः कदापि मा शुद्धात्मजातः ॥36॥

उक्त श्लोक का हिन्दी अनुवाद भी दर्शनीय है-

सौभाग्य से श्रमण जो कि बना हुआ है

सच्चा जिसे प्रशमभाव मिला हुआ है।

छोड़े नहीं वह कभी उस निर्जरा को

जो नाशती जन्म मृत्यु तथा जरा को ॥

परीषहजय शतक में आचार्य श्री ने श्रमण को सुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, नाग्न्य, अरति, स्त्री, चर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वद्य, याचना, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, सत्कार-पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान, अदर्शन परीषह का स्वरूप बतलाकर समताभाव पूर्वक सहन करने की प्रेरणा दी है और स्पष्ट किया है कि श्रमण परीषहों को सहन कर निजानुभव को प्राप्त कर लेता है तथा विभाव नष्ट होते हैं-

शुचि चित्ते श्रमणोऽत्र समानतः सुख शुभाशुभ-दुःख समानतः ।
सयम संयम भाव विभावतः श्रयमयेन्वितिरस्तु विभावतः ॥3॥

इसका हिन्दी अनुवाद भी दर्शनीय है-

दुःख में सुख में तथा अशुभ-शुभ में नियमित रखें समता,
शुचितम चेतन को नमते है श्रमण-श्रमणता से ममता ।
यम-संयम दम शम भावों की लेना सविनय शरण अतः,
विभाव भावों दुर्भावों का क्षरण शीघ्र हो मरण स्वतः ॥

बाह्याभ्यन्तर, द्रव्यभाव सर्व रीति से सच्चे श्रमण की समतामय वृत्ति और व्यवहार को

सम्बन्ध में आचार्य श्री के उद्गार देखिए-

सपदि संपदि संविदि वा सुखी, विपदि नो मुवि योऽविदि वा सुखी ।

स हि परीषहकान् सहितु क्षमः, शुचि तपश्चरमं विहितु क्षमः ॥16॥

प्रस्तुत पद्य का हिन्दी अनुवाद भी दृष्टव्य है-

पद पूजन संपद संविदि वा पद पद होते सुखित नहीं,
निन्दन, आपद, अपयश में फिर साधु कभी हों दुखित नहीं ।
दुस्सह सब परिषह सहने में सक्षम ऋषिवर धीर सभी
आत्मध्यान के पात्र, ध्यान कर पाते हैं भवतीर कभी ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्य श्री जैनागम में निरूपित श्रमणाचार का पालन करने वाले श्रमण हैं । उनका दर्शन करते ही भवभूति का निम्न श्लोक स्मृति पटल पर स्फुरित होने लगता है ।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।

लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥

आचार्य श्री ने यौवन में पदार्पण करते ही वज्र से भी अधिक कठोरता धारण कर तपस्या की चरम सीमाओं का स्पर्श कर लिया है साथ ही वे ऐसे आचार्य हैं जो द्राक्षाफल के समान अन्तर्बहिय माधुर्य से ओतप्रोत हैं । कभी इतने कठोर कि शायद ही किसी का नियन्त्रण उन पर संभव हो और कभी इतने मृदुल कि कुसुम की कोमलता भी लज्जित हो उठे । उनके तप ज्ञान और वैराग्य से ऐसा प्रतीत होता है कि युवा शरीर पर वृद्धत्व का साम्राज्य हो । ऐसे साधक श्रमण अपनी चर्या द्वारा तो श्रमणाचार को प्रस्तुत करते ही, वे अपने चिन्तन-मनन, लेखन, प्रवचन आदि के माध्यम से भी श्रमणचर्या को निर्देशित करते हैं । वे कहते हैं चौथे काल में जो श्रमणचर्या आगम में बतलाई गयी है वही चर्या आज भी रहेगी । वर्तमान परिस्थिति के कारण चर्या में कोई परिवर्तन करना या ढील देना सर्वथा अनुचित है । अतः आगम के अनुसार ही निर्दोषचर्या का उत्कृष्ट रूप से पालन करना चाहिए । इसके लिए श्रमण का कर्तव्य है कि वह ज्ञान, ध्यान, तप, तत्त्वचिन्तन में रत रहे, परीषहों को समतापूर्वक सहन करे । इससे जीवन को सुखी समृद्ध बनाने का पाथेय मिलता है ।

शरीर में स्वेद ग्रंथियों का योगदान

*** जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर) ***

पसीना शरीर से पसीने की ग्रंथियों से निकलने वाला सक्रिय खारा तरल द्रव्य है जिसमें लगभग 99% दूषित पदार्थ युक्त पानी और 1 % रक्त रहता है । हमारे शरीर के हानिकारक पदार्थ पसीने के रूप में निकलता है । जिनका शरीर के अन्दर रहना अनेक व्याधियों का कारण बन जाता है । मनुष्य के शरीर में लगभग 23,00000 स्वेद ग्रंथियाँ पाई जाती है । प्रत्येक ग्रंथि की लम्बाई 1/15 इंच और कुल ग्रंथियों की लम्बाई लगभग 21/2 मील होती है । स्वेद ग्रंथियाँ दिन रात काम करती है और अदृश्य रूप से पसीना शरीर से निकलता रहता है । चौबीस घंटे में लगभग दो औंस तक पसीना निकलता है ।

स्वेद ग्रंथियाँ, स्वेद ग्रंथि नली से जुड़ी रहती हैं जो त्वचा के रोम छिन्दों में खुलती हैं, यह ग्रंथियाँ सिम्पेथेटिक नसों के नियंत्रण में कार्य करती है । हमारी त्वचा लाखों रोम छिन्दों से भरी पड़ी है, उनको स्वच्छ रखना ही स्वस्थ रहना है । वैज्ञानिकों के अनुसार हथेली में एक वर्ग इंच में लगभग 3528 रोम छिन्द पाये जाते हैं । प्रत्येक रोम छिद्र की नली 1/4 इंच लम्बी होती है, एक वर्ग इंच में सारे रोमछिद्र की लम्बाई 882 इंच या 731/2 फुट होगी । उगली के सिरे पर छिद्रों की संख्या हथेली से अधिक होती है । एडी के पास रोमछिद्रों की संख्या प्रत्येक वर्ग इंच में 2268 होती है । तदनुसार रोम छिन्दों की नली की लम्बाई 567 इंच अथवा 47 फुट होती है । सम्पूर्ण शरीर में रोमछिद्रों की संख्या लगभग 70 लाख होगी स्वेद नली की लम्बाई लगभग 1,75,000 इंच या लगभग 28 किमी. होगी ।

ईश्वरीय प्रदत्त कितना रहस्यमय हमारा शरीर है । हमारे शरीर में 28 किमी. लम्बी नाली केवल पसीने को बाहर निकालने के लिये है । हमारे शरीर का सामान्य तापमान 98.4 डिग्री फैनर हीट है परन्तु 97 से 99 तक हो सकता है । सुबह के समय सबसे कम तापमान और शाम 5 से 7 के बीच सबसे अधिक तापमान होता है । गर्मी की ऋतु अथवा परिश्रम करने पर तापमान अधिक हो जाता है और रक्त का प्रवाह त्वचा की ओर होने लगता है । इस क्रिया से स्वेद ग्रंथियों को तेजी से काम करना पड़ता है और इसके फलस्वरूप बूंद-बूंद के रूप में पसीना त्वचा के उपर निकल जाता है । संभवतः ढंड लगने अथवा भूख के कारण शरीर का तापमान कम हो जाता है । तो पेशियाँ सिकुड़ कर शरीर को ताप देना चाहती हैं इससे शरीर कांपता है और निचला जबड़े में किटकिटाने की आवाज आती है ।

शरीर को स्वच्छ रखना कितना आवश्यक है अब आप अनुमान लगा सकते हो जिस प्रकार नालियाँ बन्द हो जाती है तो उसमें पानी सड़कर दुर्गन्ध युक्त हो जाता है वही दशा हमारे शरीर के स्वेद प्रणालियों की है । यदि स्वेद ग्रंथियों से पसीना स्वच्छता पूर्वक न निकले तो हम भयंकर व्याधियों से पीड़ित हो जाते हैं क्योंकि शरीर का विषैला मल रक्त से मिल जाता है तो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है ।

हम सभी को शरीर की सफाई नियमित रूप से कपड़े आदि से रगड़कर करना चाहिये जिससे रोमछिन्द खुले रहे एवं त्वचा पर चिकनी व हानिकारक क्रीम आदि का प्रयोग करने से बचना चाहिये । जब हम अधिक गर्मी से ठंडी जगह या ठंडी जगह से गर्म जगह जाते हैं तो ये ग्रंथियों की क्रिया शीलता प्रमादित होती है जिस हेतु सामान्य तापमान होने पर ही स्थान परिवर्तन करना चाहिये । इसी प्रकार शरीर से अत्याधिक पसीना निकलना भी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है योग्य चिकित्सक से परामर्श कर निदान करना जरूरी होता है ।



हास्य तरंग

1. बच्चों के टीकाकरण की टीम घर आई पति (पत्नी से) बंदूक और कारतूस कहाँ है इतना सुनकर टीम भागी, पीछे से पति ने आवाज दी रूको-रूको ये नाम हमारे बच्चों के हैं।
2. नवयुवक (ज्योतिषी से) इंजीनियरिंग किये तीन वर्ष हो गये, जॉब नहीं लग रही है कोई उपाय बताओं ? ज्योतिषी कौन सी ब्रांच है बेटा ? नवयुवक कम्प्यूटर, ज्योतिषी मेरी भी इलेक्ट्रॉनिक थी बेटा।
3. राहुल ने नई नई शादी की उसका दोस्त घर मिलने आया, राहुल ने बताया मेरी पत्नी बहुत अच्छा खाना बनाती है। पत्नी-तुमने झूठ क्यों बोला मेरे से खाना बनाना आता ही नहीं। राहुल तुमसे शादी करने की कोई वजह तो बताना ही थी।
4. नये नये पर्यावरण मंत्री से पत्रकार ने पूछा-भारत स्वच्छता अभियान अंतर्गत रीसाइक्लिंग किसे कहते हैं। मंत्री जी अच्छा-अच्छा रीसाइक्लिंग ! मेरे दादा जी के साइकिल चलाने से पैर दुखे तो बाइक चलाई, बाइक चलाकर पीठ दुखी तो कार चलाई, कार चलाने से पेट निकला तो जिम गये, जिम गये तो वापिस मिली साइकिल। इसे ही री साइक्लिंग कहते होंगे।
5. एक दोस्त-अपने दोस्त को देखकर आज पेड़ पर उल्टा क्यों लटका हुआ है। दोस्त मेंने सिर दर्द की गोली खाई हैं, मुझे डर है वह गलती से पेट में न चली जायें।
जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

विद्वत्परिषद् के अधिवेशन में डॉ भास्कर अध्यक्ष एवं डॉ मनुज महामंत्री बने

पटेरिया जी (गढ़ाकोटा) 18 जनवरी 2019 श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् की साधारण सभा-अधिवेशन में दिनांक 18 जनवरी 2019 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी



(गढ़ाकोटा) म.प्र. में चुनाव की पूर्ण प्रक्रिया अपनाते हुए डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर को अध्यक्ष एवं डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज को महामंत्री घोषित किया गया। चुनाव अधिकारी श्री डी.के. जैन (सेवानिवृत्त डी.एस.पी.) ने विद्वत्परिषद् के संविधानानुसार पूर्ण प्रक्रिया अपनाते हुए अध्यक्ष की घोषणा की, अध्यक्ष डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर ने उपस्थित पद हेतु चयन किया तथा उन्हीं स्थायी सदस्यों में से ब्र. जिनेश मलैया को कोषाध्यक्ष व डॉ. सनतकुमार जैन को उपाध्यक्ष चुना गया। दोपहर में पंचकल्याणक के विशाल मंच पर परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के शिष्य पूज्य मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज के सान्निध्य, पूर्व न्यायाधीश श्रीमति विमला जैन, श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) की गरिमामयी उपस्थिति में चुनाव अधिकारी ने पहले क्रम से चारों पदाधिकारियों, फिर कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को कर्तव्य-निष्ठा की शपथ दिलवायी। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का माल्यार्पण के साथ स्वागत किया गया। डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर को अध्यक्ष एवं डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज को महामंत्री चुने जाने पर अनेक संस्थाओं, बुद्धि जीवियों गणमान्य सज्जनों एवं परिचितजनों ने अपनी शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

बाल कहानी

नारद जी नाराज

श्रीकृष्ण जी अर्ध चक्रवर्ती थे वे नारायण पद की उपाधि से सुशोभित थे उन्हें सब नारायणी कहते थे एक दिन नारद जी धूमते धामते द्वारकापुरी पहुँचे नारद जी ब्रह्मरूपि कहलाते थे वे सब जगह का समाचार प्रेषित करते थे अर्थात् सतयुग के पत्रकार नारद ही थे। नारद जी श्री कृष्ण की सभा में जब अचानक पहुँचे तो श्रीकृष्ण जी सहित सभी ने नारद जी का खूब स्वागत किया नारद जी श्रीकृष्ण जी पर अति प्रसन्न हुये और उन्होंने रनवास में भी अपना भ्रमण किया उसी समय महारानी सत्यभामा आइने के सामने अपना श्रृंगार कर रही थी वे नारद जी की अगवानी नहीं कर पायी और न ही उन्होंने उनका स्वागत व सम्मान किया बस फिर क्या था नारद जी नाराज हो गये और उन्होंने श्रीकृष्ण जी का रेखाचित्र बनाया रूकमणी को दिखा दिया और रूकमणी का रेखा चित्र बनाकर शीघ्रता पूर्वक श्री कृष्ण जी को दिखा दिया श्री कृष्ण जी को यह भी बता दिया अपनी बहन का विवाह चेदी महाराजा शिशुपाल के साथ करना चाहता है। श्रीकृष्ण जी को रूकमणी पूरी मन में भा गयी और रूकमणी को श्रीकृष्ण जी मन में भा गये नारद जी ने योजना बना दी और योजना अनुसार जब रूकमणी बुआ के साथ नागनाथ मंदिर में पूजन करने गई तभी श्रीकृष्ण जी ने योजना अनुसार रूकमणी का हरण कर दिया नारद जी अपनी योजना में सफल हो गये और उन्होंने सत्यभामा के द्वारा किये हुये अपमान का बदला सत्यभामा की सौत रूकमणी को बनाकर लिया सत्यभामा को नारद जी को नाराज करने का खामयाजा रूकमणी सौत के रूप में भुगतना पड़ा।



संस्कार खेल

क्षीर विकार के कुछ खेल

* सुई धागा दौड़- संस्कार खेल

खिलाड़ियों की संख्या : 15-20

खेल वर्ग : दोड़ने का खेल

खेल विधि : सब स्वयं सेवक धागा लेकर दौड़ेंगे। सामने मेज पर सुईयाँ रखी होंगी। सुई में धागा डालकर सबसे पहले अपने स्थान पर आने वाला खिलाड़ी विजयी होगा।

* छुटना छू- संस्कार खेल

खिलाड़ियों की संख्या: 15-20

खेल वर्ग : दौड़ने का खेल

खेल विधि : दौड़ने वाले अपने हाथ धुटनों पर रखकर दौड़ेंगे छूने वाला स्वयं सेवक दोनों हाथ सिर के पीछे बाँधकर सिर या कोहनी से छुयेगा।

* संतरा दौड़- संस्कार खेल

खिलाड़ियों की संख्या : 15-20

खेल वर्ग : दोड़ने का खेल

खेल विधि : जितने खिलाड़ी एक बार में दौड़ने वाले हैं उतनी कुर्सी या मेज पर प्लेट में एक छीलकर फाँके अलग-अलग कर रखें। हाथ पीछे बाँधकर स्वयं सेवक दौड़ेंगे पूरा संतरा खाकर पहले वापस आने वाला विजयी होगा।

संस्कार गीत

राही



ओ रे राही चलता चल
आगे कदम बढ़ाता चल

1.

राह में काँटे खूब मिलेंगे
गहरी नदी पहाड़ मिलेंगे
धीर वीर बन बढ़ता चल

2.

लहरों में ही मिले किनारा
हिम्मत से चमकेगा सितारा
कोशिश हर दम करता चल

3.

लगन योजना सफल बनायें
ज्ञान ज्योति ले बढ़ते जायें
धीरज धर्म निभाता चल

बाल कविता

हिम्मत और हौसला



हिम्मत और हौसला से ही
सतत् प्रयासों के बल पर ही
बन सकता है कीर्तिमान
बन जाता है मनुज महान
अपने मन के डर को हटाओ
निर्भय जीवन सुखद बनाओ
डर-डर करके जीना क्या
बिन धड़कन के सीना क्या
सबसे प्रेम बढ़ाओ जग में
अपने कदम बढ़ाओ मग में
अरे रचो इतिहास नया
लाओ धरती पर सूर्य नया
आसमान को छू सकते हो
अपनी हर कोशिश भर ही

समाचार

दीक्षाये सम्पन्न

सम्पन्न शिखर- आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र सम्पन्न शिखर में पंचकल्याणक के अवसर पर 12 दिसम्बर 2018 को ऐलक श्री विजयभूषण जी, क्षुल्लक श्री विश्वानंद सागर जी, क्षुल्लक विश्वानुत्तर सागर जी, क्षुल्लक विनियोग सागर जी, क्षुल्लिका धर्ममति माताजी, ब्र. दक्षा दीदी, ब्र. चन्दा बाई को दीक्षाये दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री विश्वविजय सागर जी, मुनि श्री विश्वानंद सागर जी, मुनि विश्वानुत्तर सागर जी, ऐलक श्री विनियोग सागर जी, आर्थिका विश्वधर्म श्री, क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री, क्षुल्लिका विश्वनेहा श्री रखा गया।

मुनि दीक्षा एवं पंचकल्याणक

किशनगंज (बिहार)- मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज के करकमलों से 6 से 11 फरवरी 2019 पंचकल्याणक के अवसर पर ज्ञान कल्याणक के दिन दिनांक 10 फरवरी 2019 को किशनगंज बिहार में श्री राजकुमार जी को मुनि दीक्षा दी जावेगी। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य हंसमुख जी धरियावत होंगे।

21 दिवसीय शांतिनाथ महामंडल विधान सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में दिनांक 1 जनवरी से 21 जनवरी 2019 तक श्री 1008 शांतिनाथ महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ ब्र. सुरेश मलैया एवं ब्र. जिनेश मलैया के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें ध्वजारोहण करने का सौभाग्य भरत ऋतु जैन तथा विधान के मुख्य पात्र मनोज कल्पना बाकलीवाल, राजीव कविता सेठी, आजाद मणि मोदी, धमेन्द्र शिखा जैन, हर्ष तुसी जैन, प्रकाश अंजली छाबड़ा, वीरेन्द्र सुनीता जैन, धमेन्द्र संध्या जैन, पी.सी. निर्मला जैन, इंजी अजित मीना जैन, एम.सी. प्रभा जैन, डॉ. प्रेमचन्द्र कमलाकुमारी,

अक्षय लीना कासलीवाल, मनोज सुनीता जैन, प्रदीप प्रगति जैन, के.सी. सरोज जैन, अशोक जैन सी.ए., अजित पाटनी, स्वदेशीलाल जैन, प्रियदर्शी कल्पना जैन, अनुराग रूचि जैन, डॉ. सनत सुधा जैन, विनोद मंजु जैन, सुरेश अनिता जैन, विमल मीना गंगवाल, सूरजमल पद्मा जैन, अमित आशी जैन, आशीष निधि जैन, कमलेश सीमा जैन, शैलेन्द्र अशिता जैन, डॉ. संदीप अनिता जैन रहे।

पंचकल्याणक सम्पन्न

गढ़ाकोटा- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गढ़ाकोटा में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के आशीर्वाद से उनके शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 14 से 19 जनवरी 2019 तक श्री कोमलचन्द्र, राकेश कुमार, कमलेश कुमार बालाकोट परिवार की ओर से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, ब्र. संजीव भैया कटंगी, ब्र. अरूण भैया कटंगी, ब्र. शैलू भैया कटंगी, ब्र. राजेश भैया जैसीनगर, ब्र. अंकित भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें माता पिता बनने का सौभाग्य श्री देवकुमार ममता जैन कटनी, **सौधर्म इन्द्र**- श्रीमति स्नेह राकेश जैन, **कुबेर**- श्रीमति कविता कोमलचन्द्र, **महायज्ञ नायक**- श्रीमति सविता चन्द्रगुप्त नाहर जबलपुर, **यज्ञनायक**- श्रीमति सरोज लालचन्द्र जैन, श्रीमति सुजाता कमलेश जैन, **ईशान इन्द्र**- श्रीमति नूतन नितिन जैन, **सानतकुमार इन्द्र**- श्रीमति निधि अनूप जैन जबलपुर, **माहेन्द्र इन्द्र**- श्रीमति पुष्पलता विनोद जैन भोपाल, **ब्रह्म इन्द्र**- श्रीमति सुरभि अजित जैन सागर, **लांतव इन्द्र**- श्रीमति राजुल महेश जैन टीकमगढ़, **शुक्र इन्द्र**- श्रीमति नीलम संजय जैन धुंवारा, **सतार इन्द्र**- श्रीमति संध्या पीयूष जैन उज्जैन, **आनत इन्द्र**- श्रीमति अनिता अजय जैन सागर, **प्राणत इन्द्र**- श्रीमति काजल प्रक्षाल जैन मुम्बई, **आरण इन्द्र**- श्रीमति सुषमा अनिल जैन,

अच्युत इन्द्र- श्रीमति सरोज शरद जैन, भरत श्रीमति किरण शरद जैन सागर, बाहुबली- श्रीमति श्रुति मुकेश जैन गढ़कोटा, राजाश्रेयांस- श्रीमति अंजू कैलाश जैन खरगापुर, राजासोम- श्रीमति पंकज संजय जैन सागर, महामंडलेश्वर- भैया सिद्धांत जबलपुर, केतन आदिश, श्रीमति सुनीता रजनीश सिंघई, श्रीमति सुगंधी कमल चौधरी, श्रीमति सरोज शरदचन्द्र जैन गढ़कोटा, अष्टकुमारी- बहन कीर्ति, कांची, कशिश, पार्वी, स्वस्ति, सिमी, सोम्या, निकिता, प्रिंसी, पलक, निशा, लोकांतिक देव- भैया अनिमेश, तरूण, आदिश, आदित्य, प्रिंस, वासु रहली, केतन आदि को बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर ब्र. अरूण भैया को गुरुपासक, ब्र. संजीव भैया को सिद्धोपासक, ब्र. शैलू भैया, ब्र. राजेश भैया, ब्र. अंकित भैया, पं. सौरभ भैया को श्रुतोपासक की उपाधि से तथा पंचकल्याणक कराने वाले परिवार को समाज गोरव की उपाधि से विद्वत् परिषद् द्वारा अलंकित किया गया।

विद्वत्परिषद् के पुरस्कार समर्पित

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटोरिया जी (गढ़कोटा) में वहां चल रहे भव्य मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आयोजित श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के 48 वे साधारण सभा के वार्षिक अधिवेशन में निम्नांकित विद्वत् पुरस्कार समर्पित किये गये -

1. स्व. श्री गुलाबचन्द्र मलैया स्मृति विद्वत्पुरस्कार ख्यातिलब्ध बा. ब्र. पण्डित श्री रतनलाल जैन, इन्दौर को प्रदान किया गया। संस्कार सागर मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक और जैन पत्र संपादक महासंघ के अध्यक्ष ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर द्वारा अपने पिता श्री की स्मृति में स्थापित किया गया है। 2.



प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर डॉ. पुष्पलता जैन विद्वत्पुरस्कार पं. श्री सुदेश जी कोठिया, इन्दौर को समर्पित किया गया। इसके पुण्यार्जक विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर हैं। 3. डॉ. पं. पन्नालाल साहित्याचार्य विद्वत्पुरस्कार- प्राचार्य सुरेन्द्र कुमार जैन, (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त) भगवां को प्रदान किया गया। इसके पुण्यार्जक सिंघई श्री सनतकुमार जैन चदैरिया, इन्दौर हैं। 4. स्व. श्री कपूरचन्द्र जैन स्मृति विद्वत्पुरस्कार- यह पुरस्कार श्री पण्डित शिखरचन्द्र जैन, दुर्ग को प्रदान किया गया यह इंजी. पं. दिनेश जैन, दुर्ग द्वारा अपने पिता श्री की स्मृति में स्थापित किया गया है।

5. आचार्य कुन्द विद्वत् पुरस्कार- डॉ. पुष्पलता जैन, नागपुर को प्रदान किया गया। शुभचिंतक फाउण्डेशन ट्रस्ट (अध्यक्ष डॉ. नीलम जैन) पुणे द्वारा यह पुरस्कार स्थापित किया गया। 6. डॉ. ए.एन उपाध्याये विद्वत्पुरस्कार- प्राकृत मनीषी डॉ. शांतिसागर शिरहट्टी, श्रवणबेलगोला के लिये घोषित किया गया। यह पुरस्कार अन्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान प्रो. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर द्वारा स्थापित किया गया है। ये पुरस्कार पूर्व न्यायाधीश मान्या श्रीमति विमला जैन, श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.), श्री डी.के. जैन (सेवानिवृत्त डी.एस.पी) एवं डॉ. अरविन्द जैन परीक्षाधिकारी के करकमलों से प्रदान किये गये। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को अनेक गणमान्य जनों ने अपनी शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये माह : फरवरी 2019

1. बहुत नहीं बार पढ़ने से ज्ञान का विकास होता है ?
2. विनय से पढ़ा गया शास्त्र विस्मृत हो जाने पर भी परभव में का कारण बनता है ?
3. तत्त्व चिंतन एक ऐसा माध्यम है जो सभी चिंताओं को मिटाकर जीवन में लाता है ?
4. समयसार को कंठस्थ करने की जरूरत नहीं बल्कि करने की जरूरत है ?
5. इस प्रचार-प्रसार के युग में कागजी फूलों से ही खुशबू नहीं आने वाली, न ही दौड़ से हम मंजिल को पा सकते हैं ?
6. खदान खोदने से सारे ही निकलते हैं ऐसा नहीं, बहुत सारा खोदने पर जब कभी एकाध हीरा मिल जाता है। इसी प्रकार बार-बार ग्रंथों का स्वाध्याय करने पर एक अलग ढंग से सोचने का रास्ता बनता है, कुछ न कुछ नया प्राप्त होता है ?
7. ग्रंथों का पठन-पाठन मात्र ही कल्याणकारी नहीं है, क्योंकि वह तो शब्द ज्ञान ही है जिसे मूढ़ अज्ञान भी कर सकते हैं। किन्तु शब्दों से अर्थ तथा अर्थ से की ओर हमारे ज्ञान की यात्रा होनी चाहिये ?
8. आप पुराणों को पढ़ना प्रारंभ कर दीजिये और उपन्यासों को लपेटकर रख दीजिये, नहीं तो उपन्यासों के साथ-साथ आपका भी हो जायेगा ?
9. उपन्यासों को पढ़कर न आज तक कोई बना है और नहीं आगे बनेगा ?
10. की शैली से मेरा कोई विरोध नहीं लेकिन भावना, दृष्टि और हमारा उद्देश्य साफ सुथरा होना चाहिये ?
11. जिनवाणी का कोई निर्धारित मूल्य नहीं होता, वह तो वस्तु है उसके लिये जितना भी देना पड़े कम है ?
12. उस माँ के संस्कार सही नहीं है जो अपने बेटे को की निद्रा में सुलाती है किन्तु उस जिनवाणी माँ के संस्कार सही संस्कार माने जायेंगे जो हमेशा इस जीव को मोह निद्रा से जगाती है ?
13. जिनवाणी की सही सेवा यही है कि जो सुपात्र है उसे खोजकर आप हेतु दीजिये ?
14. अगर सम्यग्ज्ञान की रक्षा चाहते हो जो जिनवाणी माँ की भी करो ?
15. वास्तविक विद्वान वही है जो अनादिकालीन दुःखों के विमोचन के लिये की आराधना करते हैं ?
16. श्रुताराधना रूपी फूल ही रूपी फल से ढलता है ?
17. जिनवाणी की सही सेवा तो धारण करने पर ही संभव है ?
18. हमें पवित्र जिनवाणी में नहीं मिलाना चाहिये ?
19. आगम एक माप है, तुला है, उसे होना चाहिये। कभी भी उसमें अपनी तरफ से कमी-वैशी नहीं करना चाहिये ?
20. और इतिहास का अवलोकन सूक्ष्म ढंग से कर लेना चाहिये। आगम का आधार भी जवाब रूप से जब कभी नहीं देना किन्तु जो गंभीर और अच्छे ढंग से आगम का पक्ष लेकर समझने वाले हैं, उन्हें ही बतलाना चाहिये ?
21. जब तक इस धरती पर शास्त्र हैं तब तक ही हमारी आँखें खुल सकेंगी। बंधुओ ! जिनवाणी के अलावा जानकारी के लिये हमारे पास दूसरा साधन है ही क्या ?
22. आचार्य प्रणीत आगम ग्रन्थों को पढ़कर अपने जीवन को उन्हीं के अनुरूप ढालने का करना चाहिये। यही स्वाध्याय का, देव शास्त्र गुरु की उपासना का फल है। यदि यह नहीं है तो समझ लो वह सांसारिक उपलब्धि के लिये ही कारण बनेगा ?
23. स्वाध्याय का अर्थ मात्र लिखना पढ़ना ही नहीं है बल्कि आलस्य/असावधानी के त्याग का नाम भी है ?

24. जिस व्यक्ति का उपयोग चर्चा और चर्या में हमेशा रहता है उसका सही स्वाध्याय माना जाता है ?
 25. बार-बार पढ़ने से ज्ञान में रस आने लगता है यानि ज्ञान अनुभव में आ जाता है और..... ही सबसे बड़ा मन्त्र है ?
 26. यह जगत ही खुला..... है, यदि इसे सही-सही समझेंगे तो जागृति जरूर आयेगी ?
 27. भी एक खुली किताब का काम कर सकता है यदि चिन्तन की कला है तो ?
 28. का मूल्य होता है, मात्र शब्दों का नहीं ?
 29. वही पढ़ो, वही सीखो, वही करो जिसके उपसंहार में आत्मा का अनुभव कर सके ?
 30. शिक्षा वही श्रेष्ठ है जो जन्म-मरण का करती है ?
 31. मन वचन काय की चेष्टा का नाम की है ?
 32. कुछ पंक्तियों को अंडर लाईन करना और कुछ को अंडर..... कर देना यह स्वाध्याय की पद्धति ठीक नहीं ?
 33. उत्तर जल्दी नहीं मिलने पर को निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि यदि प्रश्न है तो उसका उत्तर अवश्य होगा, प्रश्नकर्ता है तो समाधान कर्ता है ही ?
 34. स्वाध्याय करते हुये भी जिस व्यक्ति के कदम की ओर नहीं बढ़ रहे हैं उसका अर्थ यही है कि उसने स्वाध्याय करना तो सीख लिया किन्तु स्वाध्याय के वास्तविक प्रयोजन को प्राप्त नहीं किया ?
 35. गुरुभक्ति से व्यक्ति ही विशिष्ट ग्रन्थों के अध्ययन की पात्रता रखते हैं ?
 36. स्वाध्याय करने की योग्यता (पात्रता) के लिये प्राथमिक भूमिका में सप्त व्यसन का अनिवार्य है। वैसे सप्तव्यसन व्यवहारिक जीवन और राष्ट्र की उन्नति के लिये भी हानिकर हैं ? आत्मोन्नति में तो बाधक हैं ही ?
 37. अकेले आहार में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की शुद्धि जरूरी नहीं है किन्तु ग्रन्थों के में भी इनकी शुद्धता जरूरी है ?
 38. प्रारंभिक चार प्रकार के स्वाध्याय की कर जो व्यक्ति मात्र धर्मोपदेश में ही लगा रहता है वह व्यक्ति धर्म प्रभावक और तत्त्वज्ञ हो ही नहीं सकता ?
 39. प्रथमानुयोग भले ही बहुत घुमा फिराकर तत्त्व पर आता है किन्तु उसके पठन-पाठन से भाव की प्राप्ति होती है ?
 40. कारण शब्द के दो अर्थ हैं एक परिणाम और दूसरा गणित अनुयोग के प्रसंग में कारण का अर्थ ही लिया गया है ?
- संक्षेप में उत्तर दे ?**
41. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी दीक्षा दे चुके हैं ?
 42. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी मुनि दीक्षा दे चुके हैं ?
 43. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी आर्यिका दीक्षा दे चुके हैं ?
 44. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी ऐलक दीक्षा दे चुके हैं ?
 45. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी क्षुल्लक दीक्षा दे चुके हैं ?
 46. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी क्षुल्लिका दीक्षा दे चुके हैं ?
 47. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कितनी बार दीक्षायें दे चुके हैं ?
 48. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज उत्तरप्रदेश में कितनी दीक्षायें दे चुके हैं ?
 49. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज नेमावर में कितनी दीक्षायें दे चुके हैं ?
 50. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने सर्वाधिक दीक्षायें किस क्षेत्र पर दी है ?

(10 प्रश्न संस्कार सागर जनवरी 2019 , 40 प्रश्न दिव्यवाणी सागर बूंद समाय, जिनवाणी आगम, स्वाध्याय शिक्षा से लिये गये हैं।
यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करे - फोन 0731- 4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: फरवरी 2019 प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 238

1	2	3	4	5	6	7
8			9			10
11			12			13
		14			15	16
						17
20						21
						22
24	25		26		27	28
29						

ऊपर से नीचे

- महाराष्ट्र के वाशिम जिले एक तीर्थ -4
- भार, वेट -3
- राजा की भाँया पत्नी -2
- लाल रंग का माँग भरने वाला पदार्थ -3
- प्रत्येक, हर एक, -2
- लज्जा शर्मा -2
- नमस्कार करने की क्रिया झुकने की क्रिया -3
- परिवार, कुनबा -4
- गुस्सा, कोप -2
- बहादुर, उद्भट, उत्साही -2
- रहस्य -2
- सदलगा के संत आचार्य -5
- अहिंसक एक चंडाल का नाम -4
- स्कंध, वृक्ष का अंग -2
- पीला रंग -2
- आठ, संख्या बताने वाला शब्द -2

बायें से दायें

- म.प्र. के एक मुख्यमंत्री जो मामा से प्रसिद्ध हो -9
- रात, निशा -3
- फासला, - 2 10. मृत्यु का देवता -2
- फिर, और- 2 12. नमकीन, क्षार -2
- चित्त, अंतः करण -2
- लता -3
- रहस्य जानने वाला -4
- सूर्य, पतन, अरूण -2
- यज्ञ कराने वाला गृहस्थ -4
- स्वर्ग, नासिका, इज्जत -2
- परशु, कुल्हाड़ी जैसा अस्त्र -3
- पाप युक्त जीव, पाप भय जीव -2
- मानसिक विकार खिचाव -3
- मार्ग, पथ, रास्ता -2
- आदत, व्यसन -2
- देव मनुष्य का सामासिक शब्द -4

वर्ग पहेली 237 का हल

1 म	2 हा	3 व	4 न	5 प्र	6 भा	7 व	8 ती
9 थु	10 च	11 र	12 चा	13 व	14 त	15 न	16
17 रा	18 व	19 न	20 म	21 त	22 ख	23	24
25 नि	26 यो	27 ग	28 म	29 जा	30 स	31	32
33 ता	34 गा	35 आ	36 पा	37 त	38 क	39	40
41 मे	42 प्र	43 भा	44 न	45 क	46 ल	47	48
49 घ	50 ग	51 भा	52 गो	53 ली	54	55	56
57 ना	58 ग	59 व	60 र	61 दा	62 न	63 त	64
65 थ	66 न	67 ना	68 ति	69 न	70 य	71 म	72

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीया पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

कुहरे में छुपा हुआ हूँ



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 999 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 95 तारीख है।

सभी स्थानों से प्रकाशित साहित्य एक ही स्थान पर उपलब्ध



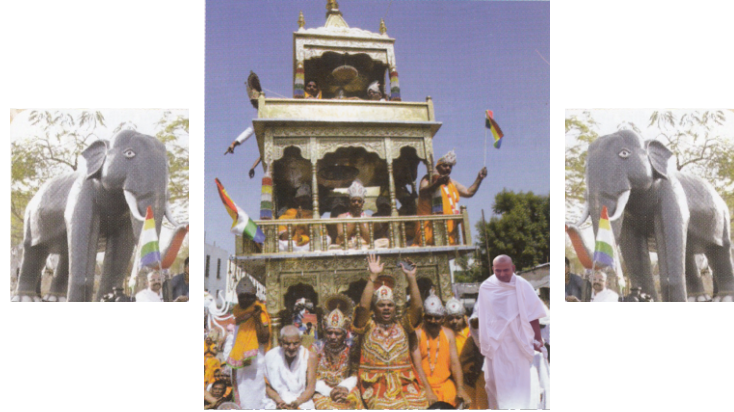
सभी प्रमुख प्रकाशनों का साहित्य एक साथ प्रचुर मात्रा में श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर पर उपलब्ध है। अ. भा. दिगम्बर जैन युवक संघ से प्रकाशित लगभग 350 अनुपलब्ध एवं उपयोगी साहित्य का प्रकाशन।

आप पुरस्कार, जन्मदिवस भेंट, पुण्यतिथि भेंट आदि में ऐसा साहित्य एवं गिफ्ट आयटम घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इन्दौर से प्रायः सभी स्थानों के लिए बस, टांसपोर्ट, कोरियर, कार्गो सेवा उपलब्ध है। यदि आपको किसी साहित्य की आवश्यकता हो तो सत् साहित्य केन्द्र, इन्दौर के भारतीय स्टेट बैंक के खाता क्र. 63018387218 में अपनी राशि जमा कर कार्यालय में सूचित करें।

घर बैठे सत्-साहित्य प्राप्त करें



पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध



श्री दिगम्बर जैन पंचवालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पंचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरु, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।



विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एंफ्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध है। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

प्रिंटिंग दिनांक : 29/01/19, पोस्टिंग दिनांक : 03/02/19